# आशा और नम्यता

## *सामुदायिक जीवन में आध्यात्मिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग*

---

आभ्यासिक अंतर्दृष्टियों के बारे में सामयिक प्रलेख: 3

# आशा और नम्यता

## सामुदायिक जीवन में
## आध्यात्मिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग

**प्रतिलिप्याधिकार © 2021 सर्वाधिकार सुरक्षित**
**ISBN 978-1-63944-240-9**

इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी, इंक. (वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान)
www.globalprosperity.org

बहाई चेयर फॉर स्टडीज़ इन डेवलपमेंट (बहाई विकास अध्ययन-पीठ)
www.bahaichairdavv.org

पानी सभी अलगावों और सीमाओं की अनदेखी कर देता है। यह उन सबको अपने साथ लेकर चलने का वाहक बन जाता है जो उसके साथ हो लेते हैं। चूंकि पानी उन सभी बातों का स्पर्श करता है जो हम करते या जिनका अनुभव पाते हैं, अत: पानी एक ऐसी भाषा का रचना करता है जिसके माध्यम से हम अपने सामान्य भविष्य पर चर्चा कर सकते हैं।

**~ आरॉन टी. वुल्फ (2017)**

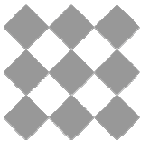

# परिचय

इस अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक एवं आर्थिक विकास सम्बंधी व्यापक परिसंवाद में सामुदायिक जीवन के आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक आयामों के बीच, इस मामले में शहरी अनियमित बस्तियों के प्रसंग में, आपसी अभिक्रिया के बारे में कुछ अंतर्दृष्टियों के रूप में योगदान देना है। "इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी" (वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान) की सहभागिता से, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर (भारत), स्थित "बहाई चेयर फॉर स्टडीज़ इन डेवलपमेंट" (बहाई विकास अध्ययन-पीठ) द्वारा संचालित यह अध्ययन 'संस्थान' के "Occasional Papers on Insights from Practice" (आभ्यासिक अंतर्दृष्टियों के बारे में सामयिक प्रलेख) नामक शोध प्रकाशनों की एक श्रृंखला का हिस्सा है। इस श्रृंखला के अंतर्गत उन पद्धतियों को परखा जाता है जो तब उभर कर सामने आती हैं जब समूहों, समुदायों और संस्थाओं द्वारा अपने रोजमर्रा के जीवन में ऐक्यकारी एवं रचनात्मक सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाता है, जब वे अपने सामने खड़ी चुनौतियों के समाधान तथा एक अभीष्ट समाज के निर्माण के लिए प्रयत्नशील होते हैं।

इस विषय-अध्ययन में इन्दौर की सरस्वती और कान नदियों के किनारे बसी जिन अनियमित बस्तियों का वर्णन किया गया है वे

दुनिया भर की उन हजारों बस्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं जो अपने समुदायों की स्थितियों को बेहतर बनने के लिए आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण करती हैं। इस अध्ययन में समुदाय के सदस्यों के नज़रिये से दैनंदिन के सम्बंधोंअऔर निर्णयों के परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक सिद्धान्तों को लागू करने के अर्थ और अभिप्रायों की खोज की गई है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस संदर्भ में स्थानीय निवासियों की आवाज को मुखरित करने का प्रयास करता है कि वे पड़ोस के स्तर पर सामाजिक सहायता के  लिए सुदृढ़ नेटवर्क तैयार करने और पानी के स्रोतों के अभाव के प्रबंधन जैसे ज्वलंत मुद्दों के समाधान के लिए मानवजाति की एकता और प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतर्सम्बंध जैसी अवधारणाओं और सिद्धान्तों में कैसे संलग्न होते हैं।

इस गुणात्मक विषय-अध्ययन के लिए शोधकार्य का संचालन बहाई चेयर द्वारा 2018 में किया गया था जिसमें इन्दौर (भारत) की दो बस्तियों से करीब 300 सामुदायिक सदस्यों ने भाग लिया था। आंकड़ों (डेटा) के संकलन का कार्य मुख्य रूप से गहन साक्षात्कारों, फोकस-समूह में किए गए विचार-विमर्शों और प्रतिभागियों के पर्यवेक्षण के माध्यम से किया गया था। अध्ययन के माध्यम से नीचे दिए गए चार प्रश्नों को परखने का प्रयास किया गया:

- समुदाय के सदस्य अपने-अपने पड़ोस के क्षेत्रों में सामाजिक सम्बंधों के प्रति अपने विश्वासों और अपनी मान्यताओं को क्रियान्वित कैसे करते हैं?
- अपने समुदायों के सामने खड़ी चुनौतियों और अवसरों के सापेक्ष, समुदाय के सदस्य मानवजाति की एकता और मनुष्य

के साथ प्रकृति के अंतर्सम्बंध जैसे सिद्धान्तों को कैसे समझते हैं?

- ये आध्यात्मिक सिद्धान्त और मान्यताएं पानी के उपयोग जैसे व्यक्तिगत निर्णयों को कैसे प्रेरित करते हैं? ये सिद्धान्त पानी की कमी और बाढ़ के प्रबंधन के सामूहिक प्रयासों को कैसे प्रभावित करते हैं?

इस अध्ययन के निष्कर्ष समुदाय के सदस्यों के दृष्टिकोण से यह तलाश करते हैं कि मानवजाति की एकता और मनुष्य के साथ प्रकृति के अंतर्सम्बंध जैसे सिद्धान्तों को सामाजिक सम्बंधों, प्रकृति के साथ लोगों के सम्बंधों और पानी से जुड़ी चुनौतियों के समाधान के लिए उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के संदर्भ में कैसे लागू किया जाता है। इस अध्ययन के प्रतिभागी सामुदायिक सदस्यों ने, जो ज्यादातर हिंदू एवं मुस्लिम पृष्ठभूमियों से हैं, इन सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति को उनके अपने धार्मिक सिद्धान्तों के मूल तत्वों के रूप में माना है। अपने सामाजिक सम्बंधों में मानवजाति की एकता के अनुप्रयोग पर विमर्श करते हुए उन्होंने इस सिद्धान्त का वर्णन एक सामान्य मानवता की पुष्टि और मानवजाति के सभी सदस्यों के एक-दूसरे से सम्बंधित होने के रूप में किया। इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह भी संकेतित होता है ये समुदाय प्राकृतिक पर्यावरण से मानवजाति के जुड़े होने के सिद्धान्त का प्रयोग पेय जल की सीमित सुलभता के प्रसंग में अपने साझा स्रोतों के उपयोग हेतु करने के लिए किस तरह से प्रयत्नशील हैं। इस अध्ययन में निहित बस्तियों के निवासियों के लिए पेय जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है।

इस दस्तावेज़ को तैयार करने के पीछे मुख्य उद्देश्य है दुनिया भर के समूहों, समुदायों और संस्थाओं को एक नई चेतना के सृजन में योगदान देना कि एक अधिक मानवीय एवं न्यायपूर्ण विश्व की रचना में विज्ञान और धर्म किस प्रकार साथ मिलकर काम कर सकते हैं।

## विज्ञान, धर्म और विकास के बारे में एक परिसंवाद

यह अध्ययन विकास सम्बंधी विचारधारा और कार्यप्रथा के बारे में उस सतत बढ़ते हुए शोधकार्य पर आधारित है जो अपनी प्रगति के नायक स्वयं बनने के लिए आधारभूत समुदायों को सशक्त करने के उद्देश्य से किए जा रहे प्रयासों पर पड़ने वाले आध्यात्मिक सिद्धान्तों के रचनात्मक प्रभावों की संभावना तलाशता है। तथापि, शैक्षणिक क्षेत्रों के उन समालोचकों और शिक्षाविदों के बावजूद जो कि विकास की नीतियों और योजनाओं में आध्यात्मिक सिद्धान्तों के समावेश के हिमायती नहीं हैं, अनेक शोधकर्ताओं और योजना-निर्माताओं में यह मान्यता जोर पकड़ती जा रही है कि मानव जीवन के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्षों को समाविष्ट न करना सामूहिक कल्याण और मानवजाति की समृद्धि के स्वप्न को साकार करने के मार्ग में एक बड़ी बाधा साबित होगा।

विगत वर्षों में, "इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी" (वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान) ने अपना ध्यान विकास के बारे में किए जाने वाले व्यापक परिसंवाद में विचार और कार्यप्रथा की एक ऐसी धारा प्रस्तुत करने के लिए समर्पित किया है जो कि सभ्यता के विकास में एक आध्यात्मिक आयाम पर जोर देती है। संस्थान के ये प्रयास "इंटरनेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर" (IDRC) जैसी कुछ समानधर्मी संस्थाओं के कार्यों से प्रेरित रहे हैं। आईडीआरसी द्वारा

तैयार किया गया "The Lab, the Temple, and the Market: Reflections at the Intersection of Science, Religion and Development" [प्रयोगशाला, मंदिर और बाजार: विज्ञान, धर्म और विकास के समबिंदु के बारे में कुछ विचार] नामक एक अध्ययन ने – जो कि विकास से सम्बंधित विषयों पर चार धार्मिक मान्यताओं (हिंदू, ईसाई, इस्लाम और बहाई धर्म) से सम्बंधित वैज्ञानिकों के विचारों को एक सूत्र में बांधता है – विज्ञान, धर्म और विकास विषयक परिसंवाद को आगे बढ़ाने के लिए 'संस्थान' के कार्य की आधारशिला तैयार करने में काफी मदद की है।

प्रस्तुत शोध "प्रयोगशाला, मंदिर और बाजार: विज्ञान, धर्म और विकास के समबिंदु के बारे में कुछ विचार" में तथा 'संस्थान' द्वारा लिखित तीन अन्य प्रलेखों में चर्चित अवधारणाओं पर आधारित है। इनमें से पहला एक अवधारणात्मक प्रलेख है जिसका शीर्षक है "Science, Religion and Development: Some Initial Considerations" [विज्ञान, धर्म और विकास: कुछ आरंभिक विचार] और दूसरा है "Science, Religion and Development: Some Aims and Challenges" [विज्ञान, धर्म और विकास: कुछ उद्देश्य और चुनौतियां]। इनमें से प्रथम प्रलेख में भारत में विकास सम्बंधी विचारकों और इस क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों के साथ विकास सम्बंधी विचार और क्रिया की स्थिति के संदर्भ में साल भर चले संवाद से प्राप्त अंतर्दृष्टियों को समाहित किया गया है। इस प्रलेख में जिन अवधारणाओं और सिद्धान्तों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, उन्होंने 'संस्थान' द्वारा विश्व भर के अनेक देशों में संवर्द्धित विज्ञान, धर्म और विकास सम्बंधी परिसंवाद को प्रेरित किया है। दूसरा प्रलेख भारत में परिसंवाद में शामिल विभिन्न संस्थाओं द्वारा अपनी दैनिक अभिक्रियाओं और कार्य के प्रसंग में आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण करने सम्बंधी

अपने अनुभवों को बेहतर रूप से व्यक्त कर पाने के लिए उनके द्वारा प्रकट की गई इच्छा के प्रत्युत्तर में तैयार किया गया था। प्रलेख में समाविष्ट पांच अभिकथनों ने प्रतिभागी संस्थाओं को यह वर्णन करने में सहायता दी कि वे अपने कार्य में आध्यात्मिक सिद्धान्तों और वैज्ञानिक विधियों को कैसे लागू करते हैं तथा उन्हें अपने सामान्य लक्ष्यों और अपने आदर्शों को क्रिया रूप में परिणत करने के प्रयास में पेश आने वाली चुनौतियों पर विचार-मनन करने में भी मदद मिली।

तीसरा प्रलेख, “May Knowledge Grow in our Hearts: Applying Spiritual Principles to Development Practice” [हमारे हृदयों में हो ज्ञान का अभ्युदय: विकास कार्यों में आध्यात्मिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग] भारत में स्थित “सेवा मंदिर” नामक एक विकास संस्था की दास्तान है जिसके प्रयासों का लक्ष्य वानिकी, स्वास्थ्य, और शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर केन्द्रित कार्यक्रमों के माध्यम से सर्वसामान्य के कल्याण में योगदान देना है। इस अध्ययन में सेवा मंदिर के कर्मचारियों, फील्ड में काम करने वाले लोगों तथा कार्यक्रमों में संलग्न गांव के निवासियों के नज़रिये से यह समाहित करने का प्रयास किया गया है कि अंतर्सम्बंधता के आध्यात्मिक सिद्धान्तों को संस्था के कार्यकलापों में कैसे लागू किया जाता है। इस अध्ययन में सभी चीजों की अंतर्सम्बंधता – जिसे सेवा मंदिर के कार्यकलापों का नियामक सिद्धान्त समझा जाता है – को एक ऐसे सिद्धान्त के रूप में जाना गया जो परिदृश्यों के बीच मौजूद भौतिक एवं गोचर सम्बंधों से भी कहीं आगे बढ़कर एक आध्यात्मिक संयोजन को आत्मार्पित करता है।

यद्यपि सेवा मंदिर के बारे में अध्ययन का उद्देश्य किसी विकास संस्था द्वारा किए जाने वाले कार्यों की प्रकृति का वर्णन करना है किंतु इन्दौर में संचालित यह शोध इस बात पर केन्द्रित है कि अनियमित बस्तियों में रहने वाले समुदाय के सदस्य अपने दैनिक जीवन तथा अपने अनौपचारिक सहकार्यों में आध्यात्मिक सिद्धान्तों से किस तरह प्रेरित होते हैं। अनियमित बस्तियों का विकल्प चुनने से इस अध्ययन के लिए एक समृद्ध परिवेश उपलब्ध हुआ क्योंकि इससे समुदाय के सदस्यों के बीच, एक साझा भौगोलिक अवस्थिति में गहन रूप से अवलोकित, मान्यताओं और अभिक्रियाओं के बीच एक 'लिंक' (संयोजन) सक्षम हुआ। इस अध्ययन में निहित बस्तियों में ऐसे निवासी बसते हैं जो दो धार्मिक समुदायों, हिंदू और मुस्लिम, से हैं। भारत में प्रमुखता रखने वाले इन दो धर्मों के प्रतिनिधित्व ने अनेक आध्यात्मिक अवधारणाओं पर विचार-विमर्श को गहन रूप दिया, क्योंकि उन्हें दो अलग-अलग धार्मिक विश्वासों की परम्पराओं के नज़रिये से देखना संभव हो सका। साथ ही, इससे यह छानबीन करने का भी अवसर मिला कि विभिन्न धार्मिक मान्यताओं में आध्यात्मिक सिद्धान्तों को कैसे अभिव्यक्त किया जाता है और, भारत में इन दो धार्मिक समुदायों के बीच संघर्ष के इतिहास के आलोक में, अंतर्धार्मिक सद्भाव पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है। पानी का मुद्दा इन समुदायों के जीवन में एक केन्द्रीय भूमिका निभाता है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, इस मुद्दे ने एक ऐसा परिप्रेक्ष्य उपलब्ध कराया जिसके दायरे में इस बात को परखा गया कि सिद्धान्तों को कार्य रूप में कैसे परिणत किया जाता है। मानव जीवन के लिए अति महत्वपूर्ण प्राकृतिक जगत के एक घटक के रूप में इसके महत्व के अतिरिक्त, इस अध्ययन में इन अवस्थानों में रहने वाले

निवासियों के लिए पानी के आध्यात्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित किया गया है।

यह अध्ययन विकास सम्बंधी प्रयासों के आध्यात्मिक पहलू से जुड़े शोधकार्य को विस्तारित करता है, और इस विषय में आगे की अंतर्दृष्टियां प्रदान करता है कि सर्वसामान्य की भलाई में योगदान देने के अपने प्रयास में समुदाय आध्यात्मिक अवधारणाओं और सिद्धान्तों का उपयोग कैसे करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, यह सामाजिक सहायता और पानी से जुड़ी चुनौतियों के प्रबंधन के लिए सुदृढ़ नेटवर्कों की संस्थापना की ओर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करता है।

**इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी**
**(वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान)**

# शोध का परिवेश – इन्दौर में स्थित शहरी अनियमित बस्तियां

मध्य भारत के एक राज्य, मध्य प्रदेश, में स्थित इन्दौर उस क्षेत्र का सबसे जनसंख्या-बहुल महानगर है जहां करीब 20 लाख[1] लोग रहते हैं। यह नगर, जिसे मध्य भारत की व्यापारिक राजधानी कहा जाता है, सरस्वती एवं कान नदियों के तटों पर मालवा पठार के पश्चिमी हिस्से में अवस्थित है। पिछले कई दशकों में, भारत में शहरीकरण का दौर गांवों और शहरों से भारी पैमाने पर लोगों के प्रवाह को इन्दौर जैसे महानगरों की ओर प्रस्थान करने का कारण बना है।

चित्र 1: भारत में इन्दौर की अवस्थिति

[1] भारत सरकार की जनगणना 2011 के अनुसार

## शोध का परिवेश

इन्दौर की आबादी का लगभग 27% भाग निर्दिष्ट स्लमों अथवा अनियमित झुग्गी बस्तियों[2] में रहता है। इन बस्तियों के निवासियों को अक्सर सार्वजनिक सेवाओं, जन-सुविधाओं और अधोसंरचनाओं तक पहुंच प्राप्त नहीं होती। इन्दौर में, इस महानगर की नदियों के तटवर्ती क्षेत्रों में ऐतिहासिक रूप से ऐसी अनेक बस्तियों की बसाहट हुई है। नदी-तटों पर स्थित ये क्षेत्र मौसमी बाढ़ के मैदानों का रूप ले लेते हैं और इसलिए उन्हें खाली छोड़ दिया गया, लेकिन प्रवासियों और स्थानीय परिवारों ने, जो शहर में अपना ठिकाना पाने में सक्षम नहीं थे, इन क्षेत्रों में अपना बसेरा बना लिया क्योंकि वहां उन्हें भूमि और जल की सुविधा उपलब्ध थी। बेतरतीब शहरीकरण, और उसी के साथ औद्योगिकीकरण, इन दोनों ने मिलकर इस नगर की नदियों को घरेलू एवं औद्योगिक कचरों का मुहाना बना दिया और वे बदबूदार नालों[3] में तब्दील हो गईं। इसके

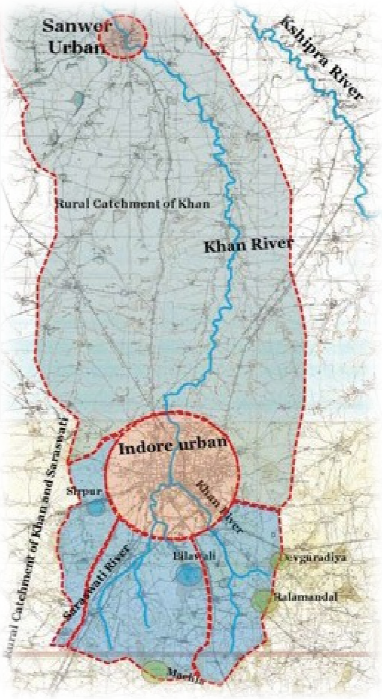


चित्र 2: कान एवं सरस्वती नदियों का प्रवाह-पथ

[2] *(Chu, 2018).*

[3] *सीवेज़ पॉल्युशन इन वाटर सप्लाई इन इन्दौर" (ताहिर और विसारिया, 2017)*

अलावा, इन नदियों के जल-ग्रहण क्षेत्र में अतिक्रमण ने नदियों के प्रवाह को प्रभावित किया है। इन नदियों को साफ करने के लिए पिछले तीन दशकों में जो अनेक प्रयास किए गए हैं वे इस चुनौती की जटिलता के कारण बाधित हो गए।[4] हालांकि नागरिक संगठनों द्वारा आरंभित अनेक सरकारी योजनाओं और परियोजनाओं ने इन्दौर की अनियमित बस्तियों के पुनर्वास के प्रयास किए हैं, लेकिन बस्तियों में[5] रहने वालों के लिए इस तरह के प्रयासों के लाभ ज्यादातर सीमित ही रह गए। सरकार द्वारा अत्यंत हाल में आरंभ किए गए प्रयासों में शामिल है कान नदी के किनारे नदी-तटीय विकास की एक योजना और पिछले कुछ वर्षों में नगरनिगम द्वारा खास तौर पर ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के क्षेत्र में साफ-सफाई के लिए किए गए प्रयास। निवासियों के अनुसार, इन प्रयासों के फलस्वरूप बस्तियों का स्वरूप साफ-सुथरा हुआ है, जल-जमाव की समस्या में कमी आई है और मच्छर-मक्खियों के कारण पनपने वाले रोग भी कम हुए हैं।[6] "स्मार्ट शहर मिशन", जिसमें पूरे नगर में व्याप्त इंटरनेट-सक्षम टेक्नोलॉजी के क्रियान्वयन के अलावा इन्दौर के पुराने नगरक्षेत्र के मध्य में नदी के किनारे एक सघन क्षेत्र के पुनर्विकास पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, कबूतरख़ाना तथा उत्तरी तोडा के आस-पास के क्षेत्रों को प्रभावित करता है। इस परियोजना को कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा[7] में रहने वाले कुछ परिवारों के घरों को

[4] *इन्दौर (धार, 2017)*

[5] *(Chu, 2018; पारिख, 1996; पटेल और मांध्यान, 2014; वर्मा, 2000)*

[6] *उत्तरी तोडा में रहने वाले निवासियों से किए गए साक्षात्कार के आधार पर, 8 जून 2018*

[7] *https://www.smartcityindore.org/smart-city-indore/.*

ध्वस्त करने और उन्हें नगर के वाह्य क्षेत्रों में जन-आवास व्यवस्था के अंतर्गत पुनर्वसित करने के लिए चिह्नित किया गया था।[8]

## कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा

यह शोध परियोजना कान नदी के तट पर अवस्थित तिरछे रूप से एक-दूसरे के आमने-सामने बसी हुई दो बस्तियों – कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा – में संचालित की गई थी। कबूतरख़ाना एक मुस्लिम-बहुल आबादी वाला इलाका है जबकि उत्तरी तोडा में मुख्य रूप से हिंदू रहते हैं। ये दोनों ही बस्तियां पुराने नगर में ऐतिहासिक राजवाड़ा महल के निकट बसी हुई हैं जहां भारत की आजादी से पूर्व दो शताब्दियों तक मालवा क्षेत्र, जिसमें इन्दौर भी स्थित है, के ज्यादातर हिस्सों पर राज्य करने वाले होलकर राजाओं की राजगद्दी हुआ करती थी।[9] इन दो क्षेत्रों के दायरे में होलकर राजाओं के स्मारक, "कृष्णपुरा छत्री" भी स्थित हैं जो इस क्षेत्र में इसलिए बनाए गए थे क्योंकि वह सरस्वती और कान नदियों के संगम पर पड़ता था। हिंदू मिथकों में इस तरह के नदी-संगम पवित्र माने जाते हैं।[10] दोनों नदियां इस स्थल पर मिलती हैं और 50 किलोमीटर दूर उज्जैन तक साथ प्रवाहित होती हैं, जिसे भारत मे प्रमुख पवित्र शहरों

---

[8] *कबूतरख़ाना में रहने वाले निवासियों से किए गए साक्षात्कार के आधार पर, 3 अगस्त 2018*

[9] *भारत की स्वतंत्रता से पूर्व दो शताब्दियों तक मालवा क्षेत्र, जिसमें इन्दौर भी स्थित है, के एक बड़े हिस्से पर होलकर राजवंश का शासन था।*

[10] *हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में नदियों को बहुत ही धार्मिक महत्व का माना गया है। नदियों का संगम विशेष रूप से पवित्र माना जाता है। राज-स्मारकों के चारों ओर का क्षेत्र तीर्थस्थल माना जाता था। हिंदी में "तीर्थ" का शाब्दिक अर्थ है "उस पार" (आध्यात्मिक लोक में) जाना और उसके तटों पर धार्मिक उत्सव हुआ करते थे। (Eck, 2012)*

में से एक माना जाता है। इस संगम के आस-पास का एक विशाल क्षेत्र, जिसमें उत्तरी तोडा और कबूतरख़ाना भी आते हैं, बाढ़-प्रभावित इलाके हैं। भारी वर्षा के मौसम में, इन दोनों ही बस्तियों में कान और सरस्वती नदी के तटों पर बसे सभी घर जलमग्न हो जाते हैं। दोनों ही पड़ोसी क्षेत्र वार्ड संख्या 60 (रानीपुरा) में पड़ते हैं। उत्तरी तोडा में करीब 10,000 लोग रहते हैं जबकि कबूतरख़ाना में करीब 1,600 लोग।[11]

एक वृतान्त के अनुसार, कबूतरख़ाना के अनेक आरंभिक निवासी होलकर महारानी, अहिल्याबाई, के गांव – चंदोल – से राजवाड़ा महल में होलकर राजाओं के घरेलू कर्मचारियों और प्रहरियों के रूप में काम करने इन्दौर आए थे। साथ ही इस जगह पर अनेक साधु (हिंदू भिक्षु) और फ़कीर (मुस्लिम वैरागी) भी आकर बस गए थे। चूंकि इस जगह के निवासी कबूतरों को पालते थे और कबूतर को शांति का प्रतीक माना जाता है, इसलिए एक होलकर राजा ने इस जगह का नाम 'कबूतरख़ाना' यानी कबूतरों का घर रख दिया था।[12]

---

[11] *नगरनिगम के प्रतिनिधि से साक्षात्कार, 21 जून 2018, कबूतरखाना सोशल मैपिंग, 7 अगस्त 2018, उत्तरी तोडा में स्थानीय नेता के पुत्र से साक्षात्कार, 12 जून 2018। वर्ष 2013 में, सरकारी अभिलेखों में कबूतरखाना की जनसंख्या 2,182 अंकित की गई थी। उसके बाद से जनसंख्या में कमी आई होगी क्योंकि 2017 में कचरा बीनने वालों के घरों को भारी संख्या में हटा दिया गया था। दूसरी ओर, उत्तरी तोडा की आबादी 2013 में केवल 3,670 अंकित की गई थी: http://mohua.gov.in/upload/ uploadfiles/files/52Ind_MP_sfcp_Vol_I-min.pdf.*

[12] *उन आरंभिक निवासियों से साक्षात्कार के आधार पर जिनके पूर्वज उस जगह पर शुरु-शुरु में आकर बसे थे, 22 अप्रैल 2018*

इस अध्ययन में भाग लेने वाले वयोवृद्ध प्रतिभागियों ने अपने बचपन में एक अलग ही किस्म के भू-परिदृश्य को याद किया। उन्होंने याद किया कि उन दिनों कान नदी में स्वच्छ पानी बहा करता था। कई लोगों को नदी में स्नान करने और नावों को गुजरते हुए देखने की बात का आज भी स्मरण है। नदियों के किनारे हरे-भरे पेड़ उगा करते थे जिन्हें बाद में काट दिया गया।[13]

होलकर राजाओं के समय, कबूतरख़ाना के निवासी छः कुओं से पीने का पानी प्राप्त करते थे जिन्हें पड़ोस के विभिन्न स्थानों पर खोदा गया था। उनमें से एक कुआं उस सारे इलाके में अपने मीठे पानी के कारण जाना जाता था। लेकिन अब दो को छोड़कर बाकी कुएं किसी काम के नहीं हैं।[14] नदी के आस-पास की कृषि-भूमियों की सिंचाई भी इन्हीं में से एक कुएं से की जाती थी।[15]

लगभग 40 वर्ष पूर्व, सीमित संसाधनों वाले प्रवासी नदी-तट के आस-पास के भूभाग पर जाकर बसने लगे क्योंकि वह नगर के मुख्य केंद्र और बाजार के करीब था जहां उन्हें काम-धंधा मिल सकता था। उन्होंने अपनी झोपड़ियां बना लीं और रहने के लिए कामचलाऊ संरचनाएं तैयार कर लीं।[16] बाद में, 1983 में, अनियमित रूप से रहने वाले इन निवासियों को जमीन के पट्टे दे दिए गए, हालांकि इस

---

[13] *उदाहरण के लिए देखें: वयोवृद्ध निवासी से साक्षात्कार, कबूतरख़ाना 2 जून 2018; वयोवृद्ध निवासी से साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 6 जून 2018; कबूतरख़ाना के स्थानीय नेता से साक्षात्कार, 3 जुलाई 2018; दीर्घकालिक निवासी, उत्तरी तोडा, 21 जुलाई 2018।*

[14] *पड़ोस समिति, कबूतरख़ाना, के मुखिया से साक्षात्कार, 3 जुलाई 2018*

[15] *स्थानीय निवासी, कबूतरख़ाना, से साक्षात्कार, 5 जुलाई 2018*

[16] *स्थानीय निवासी, कबूतरख़ाना, से साक्षात्कार, 5 जुलाई 2018*

इलाके में बाढ़ आने की संभावना बनी रहती थी। पिछले कुछ दशकों में कबूतरख़ाना में जनसंख्या-वृद्धि के साथ-साथ नदी भी तेजी से प्रदूषित हुई और उसके जल-ग्रहण क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के निर्माणों के माध्यम से अतिक्रमण कर लिया गया।[17]

वर्तमान समय में कबूतरख़ाना मुस्लिम-बहुल आबादी और हिंदुओं की अल्प जनसंख्या के साथ एक चहल-पहल भरा पड़ोसी क्षेत्र बन गया है।[18] इस पड़ोसी क्षेत्र के ज्यादातर निवासी बहुत ही असुरक्षित दशाओं में अपना जीवन जी रहे हैं। नदी के तटों पर छोटी-छोटी झोपड़ियों और ढुलमुल संरचनाओं की कतार लगी हुई है जिनमें बड़े-बड़े परिवार रहते हैं। पूरा इलाका नदी में पसरे कचरों की सड़ांध से भरा रहता है।[19] पड़ोसी क्षेत्र का ढालवां धरातल एक उन्नत क्षेत्र से उभरते हुए आगे नदी से होते हुए नदी-तटों के पास की निम्न भूमि की ओर फैला हुआ है। संकड़ी गलियां और उप-गलियां इस तरह से आड़े-तिरछे बनी हुई हैं कि वे कंक्रीट से बनी एक भूल-भुलैया जैसी प्रतीत होती हैं जिसे आबादी के फैलने पर आनन-फानन में बेतरतीब ढंग से बना दिया गया। उस क्षेत्र का सबसे आसानी से दिखने वाला स्थल-चिह्न है नूरी मस्जिद। पड़ोस में सूफ़ी संतों के तीन दरगाह हैं जिनके प्रति स्थानीय लोगों में बड़ी श्रद्धा है।

कबूतरख़ाना की तरह ही, उत्तरी तोडा सरस्वती नदी के किनारे, सीधी चढ़ाई वाली, मोड़दार गलियों के झुरमुटों के बीच सामने के तट पर बसा हुआ है। कान नदी उत्तरी तोडा के दूसरे सिरे पर बहती है और

---

[17] *स्थानीय निवासी, कबूतरख़ाना, से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[18] *कबूतरख़ाना के वरिष्ठ निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[19] *कबूतरख़ाना के वरिष्ठ निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

उसके एक किनारे सरस्वती नदी में जाकर मिल जाती है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा उत्तरी तोडा में बसे हुए आदिवासी एवं तथाकथित निम्न जाति जैसे हाशिये पर खड़े विभिन्न तबकों के लोग उत्तरी तोडा को एक हिंदू-बहुल क्षेत्र बनाते हैं।[20] इस बस्ती में मुस्लिम परिवारों का भी एक छोटा-सा वर्ग रहता है और उनमें से कई मुख्य व्यावसायिक लेन में छोटे-मोटे वर्कशॉप और स्टोर्स इत्यादि का संचालन करते हैं।

उत्तरी तोडा में चार प्रमुख मंदिर हैं। उनमें से सबसे अधिक उल्लेखनीय है खेड़ापति मंदिर। स्थानीय अनुश्रुतियों के अनुसार, महाराज तुकोजीराव होलकर ने खेड़ापति मंदिर के पुजारी को केवल मंदिर का दायित्व ही नहीं दिया था बल्कि आस-पास की उस जमीन का भी जो उत्तरी तोडा कहलाता है। उन्होंने पुजारी को इस विशाल क्षेत्र के लिए उत्तरदायी एक ज़मींदार बना दिया था। बाद में ज़मींदार और उसके वंशजों ने यह भूमि स्थानीय लोगों को बेच दिया था।[21] इन मंदिरों के अलावा, सड़कों के किनारे विभिन्न व्यक्तियों और समूहों द्वारा निर्मित अनगिनत समाधियां हैं।

उत्तरी तोडा के लोगों के मन में कृष्णपुरा की छत्रियों (राज-स्मारकों) के प्रति अपार श्रद्धा है। इन छत्रियों को इस पड़ोसी क्षेत्र के सामने के नदी-तट पर देखा जा सकता है। उत्तरी तोडा के निवासी इन राज-स्मारकों का सम्बंध 18वीं सदी की होलकर महारानी अहिल्याबाई से जोड़ते हैं जिनका नाम इस पूरे नगर में एक न्यायप्रिय एवं दयालु

[20] *कबूतरखाना सोशल मैपिंग, 7 अगस्त 2018, "ट्रांसेक्ट वॉक्स" से नोट्स, अप्रैल-अगस्त 2018*

[21] *"ट्रांसेक्ट वॉक्स" से नोट्स, अप्रैल-अगस्त 2018*

रानी के रूप में प्रसिद्ध है।[22] अहिल्याबाई इसी कृष्णपुरा छत्री के पास नदी के एक घाट पर पूजा-उपासना किया करती थीं। निवासियों का कहना है कि वे प्रत्येक सुबह और संध्याकाल उस नदी के तट पर अर्चना किया करती थीं।

उत्तरी तोडा में दो कुएं हैं जो उपयोग में नहीं हैं। पहले उस क्षेत्र में खुले सोपानों वाले कुएं भी मौजूद थे जिन्हें बाद में पाट कर नदी के किनारे एक सड़क बना दी गई।[23] इस क्षेत्र में किए जाने वाले विकास कार्यों का उद्देश्य था उस स्लम क्षेत्र को अपग्रेड करना और नदी को पुनर्जीवित करना। इन प्रयासों के मिले-जुले परिणाम सामने आए।[24] वहां के निवासी याद करते हैं कि कान नदी के किनारे एक संधारण दीवार का निर्माण किए जाने से नदी की धारा और प्रवाह-पथ में बदलाव आया और उसकी चौड़ाई कम हो गई।[25]

उत्तरी तोडा और कबूतरख़ाना दोनों चहल-पहल भरे क्षेत्र हैं। आप वहां किसी भी दिन जाएं, मस्जिद के पास किसी सजी-धजी गली में विवाह का स्वागत-समारोह चल रहा होगा, या गेरुआ वस्त्र पहने शिव-भक्त उज्जैन की अपनी यात्रा पर निकलने के लिए इंतजार करते मिलेंगे, या फिर आपको एक कचरा-विक्रेता के टूटे-फूटे स्टोरहाउस के सामने साईं बाबा के नाम पर भंडारा करते लोग मिल जाएंगे। माइक्रो-क्रेडिट समूहों के रूप में झुंड की झुंड महिलाएं बैठी मिलेंगी

---

[22] *उनकी पावनता के प्रति सम्मानस्वरूप उन्हें "देवी" कहकर पुकारा जाता है।*

[23] *लंबे समय से रहने वाले उत्तरी तोडा के एक निवासी का साक्षात्कार, 6 जून 2018, उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 9 अगस्त 2018*

[24] *https://architexturez.net/doc/az-cf-21706*

[25] *लंबे समय से रहने वाले उत्तरी तोडा के निवासियों का साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

और दूसरी ओर बंजारा समुदाय के लोग एक गली में बैठे भक्तिमय लोकगीत गाने में मशगूल होंगे। सड़कों पर हर ओर खेलकूद या साइकिल चलाने में व्यस्त अथवा रीसायकिल किए हुए रद्दी के टुकड़ों से बने खिलौनों से खेलते बच्चे और युवा दिख जाएंगे।[26]

इन बस्तियों में रहने वाले पुरुष इन्दौर के पुराने शहर में स्थित आस-पास के बाजारों में सामान्यतः दिहाड़ी मजदूरों के रूप में काम करते हैं जहां कुछ थोड़े-से छोटे-मोटे व्यवसाय हैं। बहुत-सी महिलाएं मध्यमवर्गीय परिवारों में घरेलू काम-काज में मदद देती हैं। इसके अलावा, कुछ महिलाएं अपने घर से ही कुछ मामूली व्यवसाय चला लेती हैं।[27] इन दोनों ही पड़ोसों में, लोगों के घरों के भीतर या आस-पास में अनेक छोटे-छोटे वर्कशॉप (कारखाने) चलाए जाते थे। उस कार्य में बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सभी आयुवर्गों के पारिवारिक सदस्यों को मदद करते देखा जाता था – यहां तक कि उन्हें भी जो बीमार और विकलांग थे। स्थानीय रूप से किए जाने वाले व्यापार अत्यंत ही विविध और व्यापक किस्म के थे जिनमें शामिल थे: फर्नीचर बनाने का काम, अल्युमिनियम की कटाई, थैले बनाना, रस्सी बनाना, सब्जियों की बिक्री, धातु के रद्दी हिस्सों की रीसायक्लिंग, लकड़ी के काम, जूता बनाना, बास्केट बनाना, गद्दों का निर्माण, खिलौने बनाना, बढ़ईगीरी के काम, बकरियां पालना, कसाई के काम, और दर्ज़ी के काम। पड़ोस के इर्द-गिर्द बहुत सारी वस्तुओं के निर्माण और

[26] *उदाहरण के लिए देखें: फील्ड नोट, कबूतरख़ाना, 22 अप्रैल 2018; फील्ड नोट, उत्तरी टोडा, 2 अगस्त 2018; फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 9 अगस्त 2018; फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 1 अगस्त 2018; फील्ड नोट, कबूतरख़ाना, 3 अगस्त 2018।*

[27] *सोशल मैपिंग, कबूतरख़ाना, 7 अगस्त 2018; सोशल मैपिंग, उत्तरी तोडा, 9 अगस्त 2018*

प्रोसेसिंग का काम हर वक्त हाथों से ही किया जाता था।[28] इन पड़ोसों के निवासियों की रचनात्मकता और मेहनत के प्रमाण असंदिग्ध थे।

## जल संकट

उत्तरी तोड़ा और कबूतरख़ाना इन दोनों ही इलाकों में जल के अभाव को देखते हुए, प्रायः हर घर के सामने पानी रखने के लिए बड़े-बड़े कंटेनर देखे जा सकते हैं, और साथ ही ऐसे ही कंटेनर घरों के भीतर, रहने के कमरों और रसोईघरों में भी मौजूद रहते हैं। सभी आकार-प्रकारों और सामग्रियों से बने ये कंटेनर सामानों को भंडारित करने के पात्रों में भी बदल दिए जाते थे जो कि इन निवासियों की आर्थिक तंगी और उनकी बुद्धिमत्ता दोनों का परिचायक था।[29] लोगों को यह निश्चित पता नहीं रहता था कि अब अगली बार उन्हें पानी की आपूर्ति कब प्राप्त होगी अऔ इसीलिए वे अक्सर पानी जमा कर लेते थे। अत्यंत सुबह और दोपहर बाद जब नलों के माध्यम से इन ग लियों में पानी की आपूर्ति की जाती थी तो नलों के आस-पास लोगों की भारी भीड़ एकत्रित हो जाया करती थी और वे बड़े धैर्य से अपने पानी के चार कंटेनरों को भरने का इंतजार करते थे।

इन पड़ोसी क्षेत्रों के कुछ हिस्सों में पेयजल की आपूर्ति इन्दौर से 70 किलोमीटर दूर नर्मदा नदी से एक पाइपलाइन के माध्यम से की जाती थी जिसे सरकारी स्तर पर साफ किया जाता था और इन

---

[28] *उदाहरण के लिए देखें: फील्ड नोट, कबूतरख़ाना, 11 जून 2018; फील्ड नोट, कबूतरख़ाना, 26 जून 2018; फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 24 अगस्त 2018*

[29] *फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 8 अगस्त 2018; कबूतरख़ाना के फोटो, 28 जून 2018*

पड़ोसों में कुछ चुनिन्दा नलों के माध्यम से भेजा जाता था (हालांकि कई बार निवासियों को लगता था कि आपूर्त किया गया पानी प्रदूषित एवं उपयोग के योग्य नहीं होता था)।[30] भूजल की निकासी करने वाले बोरवेल पड़ोस के लोगों के लिए पानी के अन्य प्रमुख स्रोत थे। बोरवेल्स से निकाला गया पानी खारा और प्रदूषित होता था और इसलिए उसका उपयोग केवल नहाने-धोने के लिए किया जा सकता था। लेकिन भरोसेमंद पेयजल की सुलभता के अभाव में अनेक लोगों को बोरवेल का पानी पीने के लिए ही बाध्य होना पड़ता था। इस कारण उनकी आबादी विभिन्न बीमारियों की शिकार होने लगी। एक निवासी ने बताया कि उसने यह जानते हुए भी बोरवेल का गंदा पानी पिया कि उससे उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था, लेकिन उसके पास और कोई चारा नहीं था।[31]

वहां के कुछ निवासी पानी छानने के पारम्परिक तरीकों को उपयोग में लाते थे, जैसे पानी को मिट्टी के बर्तनों में रखना या कीड़ों और अशुद्धियों को खाने के लिए पानी में कछुए रखना।[32] निवासियों को ऐसा कुछ याद नहीं है कि आधिकारिक रूप से पानी की गुणवत्ता की जांच के लिए कोई प्रयास किया गया हो।[33]

---

[30] *फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 8 अगस्त 2018; कबूतरखाना के लोगों से साक्षात्कार, 24 जुलाई 2018*

[31] *फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 8 अगस्त 2018; कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 24 जुलाई 2018*

[32] *इसके बावजूद, बहुत से निवासियों का कहना है कि पानी अक्सर प्रदूषित और पीने के अयोग्य रहता है।*

[33] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 2 जून 2018 और 23 अगस्त 2018; उत्तरी तोडा के एक स्थानीय डॉक्टर का साक्षात्कार, 21 जून 2018।*

चूंकि ज्यादातर घरों में पानी की पाइपलाइन बिछी हुई नहीं थी अतः ज्यादातर निवासियों को हर दूसरे दिन दो घंटे की जलापूर्ति के समय बाहर के सार्वजनिक नल से पीने का पानी लाना पड़ता था। बस्ती की कुल आबादी की जरूरत के हिसाब से नलों की संख्या अपर्याप्त थी – लगभग बीस से सत्तर परिवारों पर एक नल पड़ता था।[34] जिस 'पेयजल' की आपूर्ति की जाती थी वह अक्सर पीने के योग्य नहीं होता था। अन्य समय, पानी निर्धारित से भी कम अवधि के लिए आपूर्त किया जाता था, या पर्याप्त दबाव नहीं रहता था, और लोगों को सायकिल या ठेले से दूर-दराज़ के नलों से पानी लाने के लिए बाध्य होना पड़ता था।[35] स्त्री-पुरुष की असमानता के संदर्भ में, पानी के लिए इस जद्दोजहद का निहितार्थ यह स्पष्ट होता था कि इन पड़ोसों में स्त्रियों के कंधों पर ज्यादा बोझ डाला जाता था। पानी लाना मुख्य रूप से उन्हीं की जिम्मेदारी होती थी। खास तौर पर मुस्लिम निवासियों के लिए यह चुनौती तब और ज्यादा कठिन हुआ करती थी जब गर्मियों में रमज़ान का महीना आता था और उन्हें उपवास रखते हुए पानी की भारी बाल्टियों को उठाना पड़ता था।[36] गर्मियों के मौसम में स्थिति और भी गंभीर हो जाती थी जब नगरनिगम की पेयजल की आपूर्ति कई बार ठप पड़ जाती है।[37] [38]

---

[34] *कबूतरखाना के स्थानीय निवासियों का साक्षात्कार, 24 जुलाई 2018*

[35] *उत्तरी टोडा के एक डॉक्टर का साक्षात्कार, 21 जून 2018*

[36] *पडोस के नल संयोजक का साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 8 जून 2018; आईडीए बिल्डिंग के निवासियों से साक्षात्कार, उत्तरी टोडा, 8 जून 2018*

[37] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 29 अप्रैल, 26 जून और23 अगस्त 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 जून और 6 जुलाई2018*

[38] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018; कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 2 जून 2018 और 13 अगस्त 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018; कबूतरखाना की महिलाओं से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018*

ऐसी कठिन परिस्थितियों में पानी की अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए निवासी कई बार गैर-कानूनी कनेक्शनों पर भी निर्भर हुए।[39] कबूतरख़ाना में यह पाया गया कि निवासियों ने नगरनिगम की पाइपलाइन में छेद करके अपने पीवीसी पाइपों[40] से उसे जोड़कर अपने अनधिकृत कनेक्शन ले रखे थे जो अक्सर टूट जाया करते थे।[41]

पानी की सुलभता और संवितरण के लिए एक और अनौपचारिक व्यवस्था जो कबूतरख़ाना के निवासियों के लिए कारगर रही वह थी एक निजी कुएं से नियमित पानी की आपूर्ति। यह कुआं जूतों के

[39] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 11 जून 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जून 2018*

[40] *कुछ घरों को नर्मदा के पानी तक पहुंच प्राप्त नहीं थी क्योंकि उनके घर ऊंची पहाड़ियों पर थे और वहां तक पानी पम्प द्वारा नहीं पहुंचाया जा सकता था। कुछ निवासियों ने कहा कि चूंकि दिन के समय पानी भरने में काफी समय लगता है और उन्हें काम पर जाना होता था, इसलिए अक्सर देर रात में जब अन्य लोग पानी नहीं भरते थे और पानी का दबाव भी अच्छा आता था, वे दिन में दो बार पानी भर लिया करते थे। उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि गर्मियों के दिनों में वहां के लोग रात के ढाई बजे भी पानी भरेंगे। (उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जून 2018, 17 जुलाई 2018; कबूतरख़ाना के एक पड़ोसी समिति के सदस्य से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018)।*

[41] *स्थानीय निवासियों का साक्षात्कार, कबूतरख़ाना, 2 जून 2018; अधिकारी से साक्षात्कार, 21 जून 2018; स्थानीय निवासियों से साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 25 अप्रैल 2018*

एक गोदाम में था और लोगों से पानी की कोई कीमत नहीं ली जाती थी।[42]

इस प्रसंग में, भारत के अनेक शहरों की अनियमित बस्तियों में पानी को लेकर सहयोग और संघर्ष की बातें हम सुनते आए हैं और संघर्ष की ऐसी सुस्पष्ट घटनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रलोभन स्वाभाविक है।[43] जैसाकि भारत के अनेक शहरों में सामान्य रूप से होता है, घर की पानी सम्बंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के दबाव ने कई बार निवासियों के धैर्य को भी परखा। उत्तरी तोडा और कबूतरख़ाना में गर्मियों के मौसम में कई बार लोग पानी भर पाते इससे पहले ही वह समाप्त हो जाता था। पानी की गुणवत्ता सम्बंधी मुद्दे के कारण उपयोग में लाए जाने लायक पानी की मात्रा बहुत ही कम होती थी और निवासी—ज्यादातर महिलाएं—सार्वजनिक नल से अपनी बाल्टियां भरने के लिए लंबी प्रतीक्षा से ऊब जाते थे।[44]

निवासियों ने बताया कि उत्तरी तोडा और कबूतरख़ाना में कभी-कभार होने वाले टकरावों के कारण उनके बीच कोई स्थायी दुश्मनी पैदा नहीं हुई। ये टकराव क्षणिक प्रकृति के थे और जल्द ही उनका समाधान हो जाता था। जैसा कि अध्याय 4 के निष्कर्ष वाले अनुभाग में चर्चा की जाएगी, अपने सामाजिक सम्बंधों में

---

[42] *कुएं के मालिक से साक्षात्कार, कबूतरख़ाना, 2 जून 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 16 जून 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[43] *कबूतरख़ाना पाइप का फोटो, 17 अप्रैल 2018; ट्रांसेक्ट वॉक, कबूतरख़ाना, 22 अप्रैल 2018; सोशल मैपिंग, कबूतरख़ाना, 7 अगस्त 2018*

[44] *http://www.bbc.com/future/story/20181011-how-to-solve-delhis-water-crisis, ऍक्सेस की तिथि: 22 जुलाई 2019;*

आध्यात्मिक सिद्धान्तों से प्रेरणा ग्रहण करने की सामुदायिक सदस्यों की क्षमता के मद्देनजर, वे समय-समय पर उभरने वाली अंतर्वैयक्तिक चुनौतियों पर विजय पाने में सक्षम होते थे। निवासियों ने बताया कि संभावित टकरावों के उभरने की स्थिति में उनसे निपटने के लिए उनके समुदाय ने एक अनौपचारिक तरीका खोज निकाला था। उदाहरण के लिए, कुछ नलों पर संयोजकों की एक अनौपचारिक टोली बहाल कर दी गई थी जो पानी भरे जाने पर निगरानी रखती थी। यह समूह सुनिश्चित करता था कि पानी का समान वितरण हो सके और कोई भी झगड़ा-झंझट होने पर वे दोनों पक्षों को समझाते-बुझाते थे।[45] कुछ मामलों में, उस स्थान पर रहने वाले प्रभावशाली व्यक्ति भी अपनी भूमिका निभाते थे।[46] कुछ गलियों में यह समझौता हो रखा था कि कोई भी झगड़ा होने पर पानी का पम्प बंद कर दिया जाएगा, और इसलिए सबके हित में सब लोग अपने मतभेदों के निराकरण के लिए बाध्य होते थे।[47]

## बाढ़ से नुकसान

कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा मानसून के समय हर एक-दो सालों बाद आने वाली बाढ़ की चपेट में आते रहते हैं।[48] निवासियों ने

---

[45] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 2 जून 2018 और 13 अगस्त 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018; कबूतरख़ाना की महिला निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018*

[46] *20 सदस्यों की एक टोली से साक्षात्कार, 8 जून 2018; कबूतरख़ाना की एक महिला नेत्री का साक्षात्कार, 22 अप्रैल 2018*

[47] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 13 अगस्त 2018*

[48] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 13 अगस्त 2018*

बताया कि गंदा, मल से भरा पानी उनके घरों में "छत तक" भर जाता था और उसकी सफाई में उन्हें हफ़्तों लग जाते थे।[49] ठहरे हुए पानी की मौजूदगी के कारण जल-वाहित रोगों में वृद्धि हो जाती थी।[50] सबसे ज्यादा हानि उन घरों और परिवारों को उठानी पड़ती थी जो पहले ही से नदी के किनारे बने अधपक्के मकानों में रह रहे थे। उदाहरण के लिए, उत्तरी तोडा में पिछले तीस सालों से एक पुल के नीचे रहने वाली एक महिला ने बताया कि कैसे उसके थोड़े-बहुत सामान-असबाब बार-बार बाढ़ में बह जाया करते थे। वह अपने परिवार की रोजी-रोटी कमाने वाली एकमात्र सदस्य थी, और इसलिए उसे बार-बार अपने पुनर्वास की व्यवस्था करने में बड़ी दिक्कत आती थी। फिर भी, हर बार बाढ़ के बाद वह अपने घर को फिर से बनाने में जुट जाती थी।[51]

बाढ़ में केवल सामान ही नहीं बह जाते थे बल्कि बाढ़ के बाद कई लोगों की मौतें भी होती थीं। उदाहरण के लिए, कई वर्षों पहले उत्तरी तोडा में कान नदी के किनारे एक सार्वजनिक आवासीय कॉम्प्लेक्स में रहने वाला एक अधेड़ आदमी बाढ़ में घर डूब जाने के कारण मर गया। निवासियों ने बताया कि फिर अगले साल एक पूरा परिवार मौत का शिकार हो गया।[52] बाढ़ का सैलाब अक्सर बड़ी तेजी से

---

[49] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 16 जून 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जून 2018*

[50] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 जून 2018, 12 जून 2018 और 6 जुलाई 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 24 जुलाई 2018, 7 अगस्त 2018 और 23 अगस्त 2018*

[51] *फील्ड नोट, उत्तरी तोडा, 17 अप्रैल 2018; पुल के नीचे रहने वाली महिला से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018 और 21 जुलाई 2018*

[52] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018 और 21 जुलाई 2018*

अचानक आता है और बच्चे, जवान बूढ़े सबको वहां से अपने प्रियजनों और साजो-सामान को लेकर भाग जाने के लिए विवश होना पड़ता है। बाढ़ का पानी अक्सर रात को आता है जब परिवार के लोग सोए होते हैं, इसलिए जरूरी होता है कि पड़ोसी तेजी से एक-दूसरे को सतर्क कर दें।[53]

अपने साजो-सामान के नुकसान और घरों को होने वाली क्षति के अलावा, बाढ़ के दौरान निवासियों को भोजन और साफ पानी के अभाव में एक तात्कालिक समस्या का भी सामना करना होता है। खास तौर पर छोटे बच्चों के लिए लंबे समय तक भूख और प्यास को झेलना एक बड़ी कठिन स्थिति होती है।[54]

जैसा कि अध्याय 4 में विस्तृत चर्चा की गई है, इन दोनों ही पड़ोसी क्षेत्रों के निवासी और वहां की संस्थाएं रहने के स्थान, भोजन, पानी और बच्चों एवं संवेदनशील (असुरक्षित) लोगों की देखभाल जैसी व्यवस्थाओं के साथ एक-दूसरे की मदद करने एकजुट होते हैं।

यह शोध-अध्ययन इन्हीं अनियमित बस्तियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय पृष्ठभूमि में किया गया था।

[53] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018*

[54] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018*

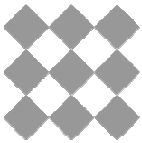

# प्रविधि

दो नदी-तटीय बस्तियों – कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा – में गुणात्मक डेटा के सृजन हेतु, इस शोध के लिए विषय-अध्ययन का तरीका अपनाया गया। फील्ड रिसर्च का काम अप्रैल और अगस्त 2018 के बीच उन पांच महीनों की अवधि में सम्पन्न किया गया जब गर्मियों के मौसम में पानी की सबसे ज्यादा किल्लत होती है और मानसून के समय इस क्षेत्र में अक्सर बाढ़ आ जाती है। शोध की प्रविधियों के अंतर्गत फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श, साक्षात्कार, प्रतिभागियों के पर्यवेक्षण तथा भागीदारीपूर्ण पूछताछ में समुदाय को शामिल करने के लिए अन्य विभिन्न उपकरणों का इस्तेमाल किया गया।

अध्ययन में समुदायों के कुल 323 सदस्य शामिल हुए-- 150 कबूतरख़ाना से और 173 उत्तरी तोडा से।

अध्ययन में यह समझने की चेष्टा की गई कि जल-संकट और बाढ़ से उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के प्रसंग में, अपनी-अपनी बस्तियों में सामाजिक सम्बंधों को मजबूत बनाने के लिए वहां के निवासी आध्यात्मिक सिद्धान्तों से कैसे प्रेरणा ग्रहण करते हैं। अतः, आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में निवासियों की समझ तथा उनकी अभिप्रेरणा और व्यवहार के बीच के सूत्र के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित

करने के लिए, परियोजना में साक्षात्कार और फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श जैसी व्याख्यात्मक विधियों को अपनाया गया। साक्षात्कार एवं फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श के प्रश्न आध्यात्मिक सिद्धान्तों के इर्द-गिर्द केन्द्रित रखे गए ताकि प्रतिभागियों को एक-दूसरे तथा प्रकृति के साथ सम्बंध की ओर उन्मुख करने वाले सिद्धान्तों से सम्बंधित उनके विचारों को प्रकाश में लाया जा सके और यह जाना जा सके कि ये मान्यताएं उनके सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में क्या भूमिका निभाती हैं। चूंकि इन आध्यात्मिक सिद्धान्तों के इर्द-गिर्द प्रतिभगियों के साथ विचार-विमर्श को सहज बनाने के लिए स्वयं इन सिद्धान्तों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किए जाने की जरूरत थी, अतः परियोजना के आरंभिक चरण में एक 'थीम स्टेटमेंट' (विषय अभिकथन) तैयार किया गया जिसे परिशिष्ट में देखा जा सकता है।

इन पड़ोसी क्षेत्रों में 'पायलट विज़िट्स' (प्राथमिक यात्राओं) के दौरान, शोध दल ने यह महसूस किया कि निवासी इन आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में अपने सहज ज्ञान से जानते थे और ये सिद्धान्त उनकी रोजमर्रा की संस्कृति और कार्यप्रथाओं में काफी गहराई से जड़ें जमाए हुए थे। प्रतिभागियों को इस बात के लिए उत्प्रेरित करने के लिए कि वे इन सिद्धान्तों के बारे में केवल सतही बयानों से ऊपर उठें और उन दृढ़ मान्यताओं के बारे में ज्यादा सजगता और गहनता से विचार-मनन करें जिनसे उनकी अभिप्रेरणाएं और उनके कार्य रूपायित हुए, यह आवश्यक था कि इन सिद्धान्तों की संकल्पना स्पष्ट हो और उनपर अधिक गहराई से प्रकाश डाला जाए। यही कारण है कि परिशिष्ट में बयान का एक प्रारूप दिया गया था। यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि बयान में इन आध्यात्मिक सिद्धान्तों का वर्णन सर्वव्यापी प्रकृति का हो और उसमें ऐसे संदर्भ शामिल नहीं

किए गए जिनकी पहचान केवल एक विशेष धर्म के साथ की जा सके। जब इन बयानों का प्रारूप तैयार किया जा रहा था तो विषयवस्तु को इन पड़ोसों में रहने वाले हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के साथ मौखिक रूप से साझा किया गया था। बयान को अंतिम रूप तभी दिया गया जब उसे इन सिद्धान्तों पर विचार-विमर्श को उत्प्रेरित करने की दृष्टि से प्रभावी पाया गया।

इन सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति के अलावा, बयान में प्रत्येक सिद्धान्त से संबंधित प्रश्नों का एक समूह भी शामिल था। उनका उपयोग प्रश्नावली के रूप में नहीं किया गया था। बल्कि, शोधकर्ताओं ने प्रसंग के आधार पर प्रत्येक शोध प्रतिभागी या समूह के लिए इन प्रश्नों को थोड़ा अलग-अलग तरीके से अनुकूलित किया और उपयोग में लाया, जैसा कि अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार में प्रयुक्त विधि में होता है। 'थीम स्टेटमेंट' (विषय अभिकथन) और प्रश्नों द्वारा उपलब्ध कराई गई शब्दावली और सृजित स्वरूप का उपयोग करने से शोधकर्ताओं और प्रतिभागियों को विभिन्न परम्पराओं में अधिक आसानी से संवाद करने के साथ-साथ आध्यात्मिक सिद्धांतों की सूक्ष्म प्रतीत होने वाली अवधारणा को पानी से संबंधित ठोस विकासात्मक चुनौतियों और सामंजस्यपूर्ण सामुदायिक संबंधों को बनाए रखने में सहायता प्राप्त हुई। ऐसी भाषा तलाशने का प्रयास किया गया जिसमें पर्याप्त विशिष्टता और स्पष्टता हो ताकि वह इसे समुदाय में व्यावहारिक और सामाजिक मुद्दों से जोड़ने में सक्षम हो सके और, दूसरी ओर, वह उस रहस्यमय और अलौकिक सत्य के महत्व को कम या विलोपित भी न करे जिनकी ओर वे आध्यात्मिक सिद्धान्त अंततः इंगित करते हैं।

इस अध्ययन की निम्नांकित सीमाएं निष्कर्षों की आवश्यक भूमिका के रूप में हैं। प्रविधि की एक सीमा यह थी कि अध्ययन का ध्यान प्रतिभागियों द्वारा उनकी मान्यताओं की अभिव्यक्ति और व्याख्या पर ज्यादा केन्द्रित था बजाय इस विस्तारित अध्ययन के कि प्रतिभागी पानी से सम्बंधित समस्याओं या अन्य सामाजिक चुनौतियों का प्रत्युत्तर देने के लिए अपनी इन दृढ़ धारणाओं को प्रयोग में कैसे लाते हैं। हालांकि दो पड़ोसी इलाकों में प्रतिभागियों के पर्यवेक्षण का काम काफी विस्तार से किया गया ताकि यह आधारभूत त्रिकोणीयन और आत्मविश्वास उत्पन्न किया जा सका कि निवासियों के अभिकथन का आधार सामाजिक यथार्थ में निहित था, किंतु इस बात के अवसर मौजूद हैं कि भविष्य के अध्ययनों में सामुदायिक जीवन के विभिन्न परिवेशों में इन सिद्धान्तों के और अधिक विस्तृत एवं तकनीकी पर्यवेक्षण तथा अनुप्रयोग पर ध्यान केन्द्रित किया जा सकेगा। ऐसे अध्ययन जल-प्रबंधन प्रणालियों और शहरी अनियमित बस्तियों में कार्यरत संस्थाओं में मानवजाति की एकता और प्रकृति के साथ अंतर्सम्बंधता में आस्था के समावेश के लिए विशिष्ट नीतिगत सुझाव प्रस्तुत कर सकेंगे। इससे भी बढ़कर, किसी विषय पर उस विषय के सम्बंध में लोगों के आध्यात्मिक विश्वास और उनकी मनोवृत्तियां, उनकी अभिप्रेरणाएं और व्यवहार के बारे में इस अध्ययन की तुलना में और अधिक सजग परीक्षण की जरूरत है। किसी खास सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक विश्वास अन्य विश्वासों एवं मूल्यों के साथ अभिक्रिया करते हैं और वे ऐसे रूपों में अभिप्रेरणाओं और व्यवहार को प्रभावित करते हैं जिनका हमेशा पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। आध्यात्मिक विश्वासों एवं अन्य मान्यताओं के बीच तथा इन मान्यताओं एवं अभिप्रेरणाओं

और व्यवहार के बीच की जटिल अभिक्रिया एक ऐसा विषय है जिसपर आगे और अध्ययन की जरूरत है।

## शोध-प्रक्रिया

इस शोध का उद्देश्य था यह अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कि विशिष्ट नदी-तटीय शहरी अनियमित बस्तियों में पानी से जुड़ी समस्याओं के निराकरण के लिए आधात्मिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग कैसे किया जाता है। इस उद्देश्य के मद्देनजर, नमूना-संग्रहण का कार्य पूरा करने के लिए प्रासंगिक मामलों के आधार पर पुनरावृतीय (iterative) प्रक्रिया के माध्यम से 'सैद्धान्तिक नमूनाकरण विधि' (theoretical sampling method) का प्रयोग किया गया ताकि उभरते हुए सिद्धान्त के विषय में नई अंतर्दृष्टियां प्राप्त की जा सकें। पूर्व-निश्चित श्रेणियों से फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श और साक्षात्कार में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की संख्या के लिए अग्रिम रूप से नियतांश (quota) निर्धारित करने के बजाय, शोध प्रक्रिया के साथ-साथ इस अर्थ में नमूना की संरचना तैयार की गई कि प्रत्येक समूह से कितने प्रतिभागी सामने आएंगे, क्योंकि अनुभव से यह प्रकट हुआ कि कौन-सा समूह ज्यादा अंतर्दृष्टियां प्रदान कर सकेगा।

शोध-प्रक्रिया उन निवासियों के साथ शुरू हुई जिन्होंने कहा था कि उन्हें पानी से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और, उनके साथ परिचर्चा के आधार पर, शोध में समेकित किए जाने के लिए आगे अन्य समूहों की पहचान की गई। विविध समूहों के प्रतिभागियों, जैसे: महिलाओं, पुरुषों, पानी के उपयोगकर्ताओं और जलापूर्ति करने वालों, हिंदू, मुस्लिम और अन्य धार्मिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों, को शामिल करने के लिए प्रारंभिक प्रयास किए गए किंतु

प्रत्येक के लिए कोई निश्चित संख्या निर्धारित नहीं की गई। आरंभ में ध्यान इस बात पर केन्द्रित किया गया कि कम से कम कुछ प्रमुख व्यक्तियों के साथ सम्बंधों को विकसित किया जाए जो शोध सहयोगियों के रूप में काम कर सकें ताकि शोधकर्ता प्रारंभिक आबादी तक पहुंच प्राप्त कर सकें जिसके माध्यम से उन समूहों से सम्बंध विकसित करना संभव हो सके जो इस सम्बंध में प्रासंगिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सक्षम होंगे कि पानी की कमी और गुणवत्ता के मुद्दों को सामूहिक रूप से संबोधित करने में आध्यात्मिक सिद्धांतों की क्या भूमिका होती है। शोध में विभिन्न समूहों और पृष्ठभूमियों के प्रतिभागियों को शामिल करने का काम तबतक जारी रखा गया जबतक यह महसूस नहीं कर लिया गया कि सैद्धांतिक संतृप्ति का वह बिंदु प्राप्त कर लिया गया है जहां प्राप्त होने वाली नई अंतर्दृष्टियों की संख्या नगण्य थी। यह शोध "बहाई चेयर फॉर स्टडीज इन डेवलपमेंट" (देवी अहिल्या विश्वविद्यालय) की एक टीम और प्रत्येक पड़ोस के अनुसंधान सहयोगियों के एक छोटे-से दल द्वारा किया गया था जिन्होंने अनौपचारिक रूप से शोध में सहायता की।

## साक्षात्कार एवं फ़ोकस-ग्रुप प्रतिभागी - अप्रैल-अगस्त 2018

| पड़ोस का क्षेत्र | महिलाओं की संख्या | पुरुषों की संख्या | कुल संख्या |
|---|---|---|---|
| कबूतरख़ाना | 82 | 68 | 150 |
| उत्तरी तोडा | 98 | 75 | 173 |
| दोनों पड़ोसों की कुल संख्या | 180 | 143 | 323 |

## फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श और साक्षात्कार

साक्षात्कार करने के प्रयासों ने सामान्यतः समूहों को आकर्षित किया और वे प्रभावी रूप से फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्श में शामिल हो गए। इन विचार-विमर्शों में 'थीम स्टेटमेंट' (विषय अभिकथन) के अंतर्गत विषयों और प्रश्नों के सामान्य आकार का पालन किया गया था लेकिन शब्दावली और अनुवर्ती प्रश्नों को प्रतिभागियों की परिस्थितियों के अनुसार अनुरूपित किया गया। फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्शों को पहले से व्यवस्थित करना सामान्यतः प्रभावी नहीं था लेकिन ज्यादातर भागों में निवासी बिना किसी पूर्व-तैयारी के फ़ोकस-ग्रुपों में भाग लेने के लिए बहुत शिष्टतापूर्वक प्रस्तुत हुए। कुछ लोग इस परिचर्चा के दौरान पानी भरने, कपड़े धोने, या शिल्पकार्य जैसी गतिविधियां भी करते रहे, लेकिन अधिकांश लोग कम से कम 20 मिनट या उससे अधिक समय तक रुकने में सक्षम थे। कई परिवारों ने चाय के लिए भी शोधकर्ताओं को आमंत्रित किया, और आम तौर पर पड़ोस की संस्कृति बहुत ही स्वागतपूर्ण है।

## प्रतिभागी पर्यवेक्षण

प्रसंग को ज्यादा अच्छी तरह से समझने और फ़ोकस-ग्रुप परिचर्चाओं एवं साक्षात्कारों से निकलने वाले निष्कर्षों का त्रिकोणीयन (triangulation) करने के लिए शोध दल ने समुदाय में दैनिक जीवन की कुछ गतिविधियों के समय प्रत्यक्ष उपस्थित होकर प्रतिभागियों का पर्यवेक्षण या अवलोकन किया। टीम के सदस्य उस समय उपस्थित थे जब नर्मदा पाइपलाइन का नल चालू था, साथ ही बोरवेल के नल से पानी भरने के दौरान निवासियों – खास तौर पर जब महिलाएं अपनी बाल्टियां और ड्रम भरती थीं – के बीच बातचीत

के पर्यवेक्षण के लिए। ईद-उल-अज़हा (कुरबानी का इस्लामी त्योहार), रमज़ान (इस्लामी उपवास का महीना), सावन/श्रावण (हिंदू धर्म का एक पवित्र और उपवास का महीना), रक्षाबंधन (भाई-बहन के स्नेह-बंधन का हिंदू त्योहार) जैसे कुछ सामुदायिक त्योहारों के दौरान और विवाह-समारोहों, मस्जिदों और मन्दिरों में नमाज़ और पूजा के समय और यहां तक कि एक अंतिम संस्कार के समय भी शोध दल के सदस्य उपस्थित थे। वे नदी के किनारे होने वाली किसी भी गतिविधि के समय उपस्थित रहते थे, जैसे धुलाई, कांवर यात्रा की तैयारी (पवित्र जल को उज्जैन के पवित्र शहर ले जाने के लिए तीर्थयात्रा), मंदिरों में नदी के किनारे पूजा, सूफ़ी दरगाह और धर्मशाला, नदी की साफ-सफाई तथा और अन्य रचनात्मक गतिविधियों के समय। साथ ही वे इंदौर विकास प्राधिकरण की उन इमारतों के विध्वंसीकरण के भी गवाह बने जिनके गिर जाने का खतरा था, और उन्होंने कुछ हद तक पुनर्वास प्रक्रिया का भी अवलोकन किया।

## अनुप्रस्थ भ्रमण (ट्रांसेक्ट वॉक) / सोशल मैपिंग

अनुप्रस्थ भ्रमण (transect walk) स्थानीय लोगों के साथ सम्पूर्ण समुदाय/प्रोजेक्ट क्षेत्र में एक निर्धारित पथ (अनुप्रस्थ) पर किया जाने वाला सुव्यवस्थित भ्रमण है जिसका उद्देश्य है पर्यवेक्षण, पूछताछ, लोगों की बात सुनने, अवलोकन, और कई बार एक 'ट्रांसेक्ट डायग्राम' (अनुप्रस्थ आरेख) प्रस्तुत करने के माध्यम से सामाजिक, जल और स्वच्छता की स्थितियों की तलाश करना। फील्डवर्क के आरंभिक चरण में ऐसे अनेक अनुप्रस्थ भ्रमणों का संचालन किया गया जिससे हम अनेक नए लोगों से मिलने और पड़ोस का मानसिक मानचित्र तैयार करने में सक्षम हुए। इस भ्रमण या 'वॉक' के दौरान जिन प्रश्नों

पर चर्चा की गई उनमें शामिल थे: विभिन्न जनसंख्या-समूहों का अवस्थान और उनकी स्थितियां तथा सामाजिक संस्थाएं, सामुदायिक जीवन की विशेषताएं, उपासना एवं धार्मिक क्रियाकलापों के मौजूदा स्थान, पानी के स्रोत और उसकी गुणवत्ता, पानी की सफाई की व्यवस्था और उसके वितरण की व्यवस्थाएं, पानी के उपयोग सम्बंधी आदतें, अपशिष्ट जल का संग्रह, स्वच्छता की सुविधाएं और इन सबसे जुड़ी चुनौतियां। इन अनुप्रस्थ भ्रमणों ने शोध दल को प्रत्येक बस्ती की समग्र स्थितियों और उनके सामाजिक यथार्थ से सुपरिचित कराया। साथ ही यह एक ऐसे आधार की भी रचना करता है जिस पर समुदाय के प्रतिभागी सदस्य पानी सम्बंधी मुद्दों के सापेक्ष अपनी सामाजिक वास्तविकता को समझना और विश्लेषण करना आरंभ कर सकते हैं। इन अनुप्रस्थ भ्रमणों के बाद, दो अलग-अलग अवसरों पर, शोधकर्ताओं ने सामाजिक मानचित्र (सोशल मैप) की रचना के लिए शोध सहायकों तथा समुदाय के अन्य सदस्यों को एकत्रित किया। पड़ोसी क्षेत्रों के हवाई परिदृश्य को दर्शाते हुए एक बहुत बड़े प्रिंट-आउट का इस्तेमाल किया गया और अनुप्रस्थ भ्रमण के दौरान जिन विषयों पर विमर्श किया गया था उनके समानांतर समुदाय के सदस्यों ने उन नक्शों पर अपने पड़ोसों की विभिन्न विशेषताओं पर चर्चा की और उन्हें आरेखित किया, जैसे: पाइपलाइनें, नल, संस्थाएं, और सम्मिलन-स्थल। अनुप्रस्थ भ्रमणों के कारण इन मानचित्रों की तुलना में कहीं अधिक विचार-विमर्श संभव हुए। साक्षात्कारों और फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्शों से प्राप्त किए गए आंकड़ों (डेटा) के त्रिकोणीयन में अनुप्रस्थ भ्रमणों और मानचित्रों दोनों से ही सहायता प्राप्त हुई।

## आंकड़ों का विश्लेषण (डेटा एनालायसिस)

फील्ड में लिए गए साक्षात्कारों और की गई परिचर्चाओं की ऑडियो रिकॉर्डिंग की गई और मूल को संरक्षित रखते हुए उनका प्रतिलेखन किया गया जिनमें बोलचाला की भाषा का प्रयोग किया गया। इसके परिणामस्वरूप प्रतिलेख के जो सैकड़ों पन्ने तैयार हुए उनकी शोधकर्ताओं द्वारा कोडिंग की गई तथा आंकड़ों (डेटा) से उत्पन्न श्रेणियों और पद्धतियों को नोट करके परियोजना की संकल्पनात्मक रूपरेखा के सापेक्ष उनका विश्लेषण किया गया। विश्लेषण की इस प्रक्रिया से वे विवरण प्रतिफलित हुए जो "निष्कर्ष" खंड में दिए गए हैं और जो प्रतिलेख में दिए गए उद्धरणों के सावधानीपूर्वक किए गए अनुवाद से लिए गए हैं।

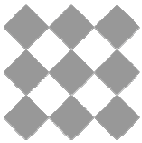

# निष्कर्ष

इस अध्ययन का उद्देश्य इन्दौर की दो अनियमित बस्तियों के संदर्भ में निम्नांकित तीन प्रश्नों को परखना था:

- समुदाय के सदस्य अपने-अपने पड़ोस के क्षेत्रों में सामाजिक सम्बंधों के प्रति अपने विश्वासों और अपनी मान्यताओं को क्रियान्वित कैसे करते हैं?
- अपने समुदायों के सामने खड़ी चुनौतियों और अवसरों के सापेक्ष, समुदाय के सदस्य मानवजाति की एकता और मनुष्य के साथ प्रकृति के अंतर्सम्बंध जैसे सिद्धान्तों को कैसे समझते हैं?
- ये आध्यात्मिक सिद्धान्त और मान्यताएं पानी के उपयोग जैसे व्यक्तिगत निर्णयों को कैसे प्रेरित करते हैं? ये सिद्धान्त पानी की कमी और बाढ़ के प्रबंधन के सामूहिक प्रयासों को कैसे प्रभावित करते हैं?

इस अध्ययन के निष्कर्ष सम्बंधों पर केन्द्रित हैं—पड़ोस स्तर पर लोगों के बीच आपसी सामाजिक सम्बंध, तथा लोगों एवं प्राकृतिक पर्यावरण के बीच के सम्बंध।

इस अध्ययन के प्रतिभागियों ने इन सम्बंधों के बारे में अपनी समझ के बारे में अपने समुदायों तथा पानी के अभाव और बाढ़ की चुनौतियों के प्रसंग में विमर्श किया। इन सम्बंधों के बारे में निवासियों की टिप्पणियां और उनके अवलोकन उनके अपने-अपने धर्मों – मुख्यतः हिंदू और इस्लाम – में निहित आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बोध से प्रेरित थे।

इस अध्ययन के निष्कर्षों को मुख्यतः निम्नांकित दो विषय-शीर्षकों के अंतर्गत सुगठित किए गए हैं: (1) समुदाय के सदस्यों के साथ सामाजिक सम्बंधों और पड़ोस के स्तर पर उन्हें कैसे लागू किया जाता है इसे अधिशासित करने वाले आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में विश्वास, और (2) प्रकृति के साथ सम्बंधों को अधिशासित करने वाले आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में विश्वास, और यह कि निवासी पानी के संदर्भ में अपनी आपसी अभिक्रियाओं में इन सिद्धान्तों को कैसे लागू करते हैं।

## 1. पड़ोस के स्तर पर सामाजिक सम्बंध

इस अध्ययन में पाया गया कि मानव जाति की एकता के सिद्धांत को लागू करने के समुदाय के सदस्यों के प्रयासों को पड़ोस के स्तर पर उनके संबंधों में ठोस अभिव्यक्ति मिली। समुदाय के सदस्यों के बीच एकजुटता, मित्रता और आपसी विश्वास के सामाजिक बंधनों ने उन्हें सामने खड़े ज्वलंत मुद्दों के निराकरण के लिए पारस्परिकता और एक-दूसरे की सहायता की भावना से काम करने में सक्षम बनाया।

### अ. एकता के सिद्धान्त पर आधारित सम्बंध

कबूतरख़ाना और उत्तरी टोडा के निवासियों ने अपनी टिप्पणियों में अपने जीवन के उद्देश्य को बार-बार समुदाय और विशेष रूप से, अपने निकटतम पड़ोस की सेवा के संदर्भ में अभिव्यक्त किया। कई निवासियों ने अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि अपनी मानवता के प्रति सच्चे होने के लिए अन्य मनुष्यों के साथ अपने अंतर्सम्बंध के प्रति जागरूक होना और उस सम्बंध को सुदृढ़ करके एक अच्छा जीवन जीना आवश्यक है। जैसा कि उत्तरी टोडा में एक महिला ने कहा, "यदि कोई व्यक्ति दूसरे की सेवा नहीं कर सकता है तो वह व्यक्ति किस काम का है?" [55] उत्तरी तोडा के एक अन्य व्यक्ति ने टिप्पणी की: "जीवन का उद्देश्य है ऐसे लोगों के लिए कुछ अच्छा काम करना जो हमसे कम भाग्यशाली हैं, उनके किसी काम आना, उनके लिए खुशी का स्रोत बनना .... अपने लिए तो कोई भी जी सकता है, यहां तक कि जानवर भी। लेकिन दूसरों के लिए जीना ही सही जीवन की कुंजी है।”[56]

उत्तरी तोडा के एक भवन ठेकेदार ने जो अक्सर पड़ोस के लोगों की मदद करता रहता है, लोगों की सेवा के बारे में अपना निम्नांकित उत्प्रेरण साझा किया:

यह शरीर जो हमें ईश्वर ने दिया है, केवल अपने लिए नहीं है। इसे दूसरों के लिए भी उपयोगी होना चाहिए। सच्चा मनुष्य वह है जो दूसरों की सहायता करे। मैं इस पड़ोस को अपने आजीवन साथी के

[55] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*

[56] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018*

रूप में देखता हूं। मैं इसे छोड़कर यहां से कहीं नहीं जाऊंग ... मेरे पास धन है। मैं और कहीं भी [नगर के अन्य सम्पन्न हिस्सों में] जाकर रह सकता था। लेकिन इस पड़ोस की दशा को बेहतर बनाने के मेरे संघर्ष के कारण मैं कभी छोड़कर नहीं जाऊंगा। यदि हम ही चले जाएंगे तो पड़ोस की देखभाल कौन करेगा? हम सब यहां एक परिवार की तरह रहते हैं। जब भी किसी के घर में कोई समारोह होता है – चाहे किसी का जन्म हो या किसी की मृत्यु – तो लोग मुझे आमंत्रित करते हैं। वे मेरे साथ अपना दुख बांटते हैं, और मैं उनके साथ अपना। ऐसे ही रहते हैं हम लोग।[57]

जब निवासियों ने एक-दूसरे से आपसी सम्बंध के बारे में अपने विचारों पर चर्चा की तो परिवार के बाद वह दूसरा संदर्भ जिसका उन्होंने बार-बार उल्लेख किया वह था अपने पड़ोसियों के साथ उनका सम्बंध। अनेक निवासियों ने यह उल्लेख किया मुसीबत के वक्त पड़ोसी ही हैं जिनके पास कोई मदद मांगने जाएगा। जैसा कि एक निवासी ने कहा: "अपने पड़ोसी का सच्चा और सतत साथी बनना हमारा नैतिक कर्तव्य है। वे स्वाभाविक रूप से हम पर निर्भर हैं। हम उनके सुख और दुख के क्षणों के साझेदार हैं और उनके विवाह-समारोहों और उत्सवों में भाग लेते हैं।"[58]

अध्ययन में शामिल कुछ हिंदू प्रतिभागियों ने इस बात को रेखांकित किया कि एक पड़ोसी का 'धर्म' (या नैतिक कर्तव्य) कठिनाइयों के समय शक्ति का स्रोत और जीवन की सुखमय घड़ियों में प्रफुल्लित सखा बनना है। अपने पड़ोसी के प्रति कर्तव्य की इस भावना के

[57] *समुदाय के एक नेता से साक्षात्कार, 21 जून 2018*

[58] *कबूतरखाना के एक निवासी से साक्षात्कार, 3 जुलाई 2018*

अभिप्राय के बारे में कबूतरख़ाना के एक दुकानदार ने चर्चा करते हुए कहा: "अगर मेरा पड़ोसी मुझे आधी रात को भी जगाता है तो मैं उठ जाऊंगा और उसकी मदद के लिए जाऊंगा। उसे चाहे जो भी कठिनाई हो – चाहे पुलिस का मामला हो या उसे अस्पताल ले जाने की नौबत आई हो – उसे सहारा देना, उसकी मदद करना मेरा कर्तव्य है।" इस अध्ययन में शामिल मुस्लिम प्रतिभागियों ने यह टिप्पणी की कि इस्लाम के धर्मग्रंथों में भी इसी तरह का कर्तव्य लागू किया गया है। एक मुस्लिम महिला ने कहा कि 'हदीस' के मुताबिक: "जबतक तुम यह न जान लो कि तुम्हारे पड़ोसी के पास पेट भरने के लिए भोजन है और वह भूखा सोने नहीं जा रहा है तबतक तुम्हें भी भोजन नहीं करना चाहिए।" कबूतरख़ाना के मुल्लों (मुसलमानों के धार्मिक नेता) ने समझाया कि क़ुरान के अनुसार, हर व्यक्ति न केवल अपने नजदीकी पड़ोसी के लिए जिम्मेदार है बल्कि अपने आस-पास के परिवारों तक के लिए। उसने अमीरों और गरीबों के बीच बढ़ती हुई खाई पर चिंता प्रकट करते हुए कहा:

इसे दूर करने का उपाय यह है कि हम उस उद्देश्य की ओर मुड़ें जिसके लिए हमें रचा गया है। हम अपने आप इस दुनिया में नहीं आ गए। हमें किसी ने रचा है। हर कार्य का कोई न कोई उद्देश्य होता है ... उदाहरण के लिए, यह मोबाइल फोन मनुष्यों ने बनाया। मकसद यह है कि हम दूर बैठे एक-दूसरे से बात कर सकें ... इसी तरह हम लोगों [मनुष्यों] को रचा गया है कि हम उस परमात्मा की आराधना करें [और यह कर्तव्य हम दूसरों की मदद करके निभाते हैं]... [इसका यह मतलब है कि] अगर हमारे पास 10 रोटियां हैं तो उनमें से कुछ हम भी खाएं और कुछ ऐसे लोगों को भी खिलाएं जो हमसे अधिक दुर्बल हैं। हमारे पैगम्बर ने कहा है कि हमें अपने

आस-पास के 40 तक की संख्या में परिवारों को अपना पड़ोसी समझना चाहिए [और उनकी देखभाल करनी चाहिए]।

[उसने कहा कि] जब आप अपने घर में मांस पकाएं तो उसकी मात्रा बढ़ाने के लिए शोरबे में एक गिलास ज्यादा पानी डाल दें ताकि आप पड़ोसियों के साथ भी साझा कर सकें। उससे पूछा गया, "हमें ऐसा क्यों करना चाहिए, इससे क्या फायदा होगा?" तो उसने यह जवाब दिया कि अगर आप अकेले मांस खाएंगे तो वह भोजन आपके लिए अच्छा नहीं होगा। लेकिन जब आप उसमें एक गिलास ज्यादा पानी डालकर बनाएंगे ताकि आप पड़ोसियों को दे सकें तो आपका भोजन आपके लिए सचमुच उत्तम होगा।[59]

इस विषय पर कबूतरख़ाना के एक अन्य निवासी ने यह बात साझा की: "इस्लाम का मूल सिद्धान्त है भाईचारा ... सभी धर्मों के लोगों के साथ। इस भाईचारे का मतलब यह है कि अगर कोई शारीरिक रूप से अक्षम है तो हम उसकी मदद करते हैं। अगर वे किसी कठिनाई में हैं तो वह कठिनाई हमारी है, चाहे वे जो भी हों।"[60]

इस बात पर चर्चा करते हुए कि उत्तरी तोड में अपर्याप्त आर्थिक संसाधन या पारिवारिक सहायता वाले गरीबों की मदद के लिए पड़ोसी किस तरह एकजुट हुए, एक महिला ने एक मित्र का उदाहरण साझा किया जिसकी मां की मृत्यु हो गई थी और जिसके पास उसके अंतिम संस्कार के लिए भी पैसे नहीं थे। "हम पड़ोसियों ने तय किया कि हममें से प्रत्येक ₹15 या ₹20 का योगदान देगा और

[59] *कबूतरखाना के एक मुल्ला का साक्षात्कार, 19 जून 2018*

[60] *कबूतरखाना के निवासियों का साक्षात्कार, 22 अप्रैल 2018*

हम चाहे जैसे भी उसकी मां का अंतिम संस्कार अच्छी तरह करेंगे। हालांकि हम खुद गरीब हैं लेकिन हमने उन खर्चों का बीड़ा उठाया क्योंकि हम दूसरों को दुख में नहीं देख सकते। मैं यह सोचती हूं कि अगर हम स्वयं वैसी परिस्थिति में होते तो हम लोगों से कैसा व्यवहार चाहते। क्या होता अगर मेरा मृत शरीर इस तरह पड़ा होता और मेरे अंतिम संस्कार के लिए कोई न होता!" उसने यह भी कहा कि अगर उनकी गली में कोई गरीब बीमार पड़ा होता या होती है तो उस व्यक्ति के लिए सारे पड़ोसी एकजुट होकर सामूहिक योगदान की व्यवस्था करते हैं।"[61]

ज्यादातर निवासी अपने रोजमर्रा के बुनियादी खर्चों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पैसा कमा लेते हैं लेकिन उनकी आमदनी इतनी नहीं है कि वे अन्य आकस्मिक खर्चों को पूरा कर सकें, जैसे परिवार में किसी का बीमार पड़ जाना या अप्रत्याशित रूप से सामने आ जाने वाले अन्य खर्चे। अगर बहुत बड़ा खर्चा न हो तो निवासियों को पता होता है कि वे सहायता के लिए अपने पड़ोसियों पर निर्भर हो सकते हैं। "हम इस आधार पर जीवन जीते हैं कि 'कल का कल देखेंगे'। मान लीजिए अगर ₹50 या ₹100 की जरूरत हो तो मुझे पता है कि मुझे अपने पड़ोसी से कर्ज़ मिल जाएगा। इस तरह, हम एक-दूसरे को लगातार सहायता देते रहते हैं।"[62] लेकिन भारी खर्चे किसी भी परिवार को गहन आर्थिक संकट में डाल सकते हैं।

इस अध्ययन में शामिल हिंदू और मुस्लिम दोनों ही पृष्ठभूमियों के प्रतिभागियों ने यह नहीं जताया कि दूसरों के प्रति यह कर्तव्य-

[61] *उत्तरी तोडा में महिलाओं के एक समूह का साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

[62] *कबूतरखाना में महिलाओं की एक टोली से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

भावना उनके लिए कोई बोझ है या वे ऐसा किसी भय या अपराध-भावना से बचने के लिए करते हैं। दूसरों के प्रति तेजी से उदासीन होती जा रही दुनिया में, अपने पड़ोसियों के साथ मित्रता और एकजुटता के बन्धनों का उल्लेख उन्होंने आनन्द और सुरक्षा के एक स्रोत के रूप में किया। कबूतरख़ाना में रहने वाला एक हिंदू योगी तो यहां तक कह गया कि "मैंने किसी को भी केवल एक पड़ोसी के रूप में नहीं देखा। मैंने उन्हें अपना हमदर्द बनाया है – वह जो दूसरों का दर्द साझा करता है। ... मैं दूसरों का दुख लेता हूं और बदले में उन्हें खुशी देता हूं ... [हममें] ... दूसरों के दुखों को साझा करने और उससे प्रसन्नता पाने की क्षमता है।"[63] वह बात जो इन सम्बंधों को भावनात्मक रूप से अनुगुंजित करती है वह है एक वैश्विक दृष्टिकोण जहां समुदाय स्वाभाविक रूप से एक विस्तारित परिवार बन जाता है। व्यक्ति को पूरे समुदाय का एक अंग माना जाता है। इस विस्तार के माध्यम से, पूरे समुदाय – न कि केवल नजदीकी परिवार – के बारे में यह समझा जाता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए उत्तरदायी है।

एक ओर जहां सभी निवासी समुदाय के सदस्यों की एकता और पारस्परिक जुड़ाव में अपने सामान्य विश्वास के संदर्भ में एक-दूसरे के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध होने के पीछे अपनी अभिप्रेरणा का वर्णन करते हैं, वहीं दूसरी ओर उनके विश्वास भी उनकी विशिष्ट की आस्था-परंपराओं पर आधारित थे -- चाहे वे हिंदू हों या मुस्लिम। जैसा कि निम्नांकित अनुभाग में विस्तार से बताया जाएगा, किसी खास धर्म से उनकी संबद्धता उनके पड़ोसों में अन्य धर्मों के साथ उनकी मित्रता में बाधा नहीं बनी।

[63] *कबूतरखाना के एक योगी से साक्षात्कार, 28 जून 2018*

### आ. अंतर्धार्मिक सद्भाव

भारत में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच तनाव का इतिहास 1947 में देश के विभाजन के समय से ही है जिसके कारण भारत और पाकिस्तान दो अलग राष्ट्र बन गए। विभाजन की इस प्रक्रिया में भारी संख्या में मुसलमान सीमा पार करके पाकिस्तान गए और हिंदू भारत आए, और इसी के साथ हिंसा का सैलाब भी उमड़ा।

प्रस्तुत संदर्भ में, इस अध्ययन के अंतर्गत कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा में रहने वाले दोनों ही धार्मिक समुदायों के बीच अंतर्धार्मिक सद्भाव और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर विचार किया गया है।[64] इस अध्ययन के प्रतिभागियों ने अक्सर इस बात का उल्लेख किया कि हिंदू-मुस्लिम सम्बंधों की अत्यंत कठिन घड़ियों में भी, जैसे 1990 के दशक के आरंभिक समय में हुए राष्ट्रव्यापी दंगों के दौरान, उन्हें याद नहीं है कि उनकी बस्तियों में धर्म के आधार पर हिंसा की कोई वारदात हुई हो।[65] निवासियों के जीवन में धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, तथापि यह प्रतीत हुआ कि उनकी धार्मिकता ने उन्हें अन्य धार्मिक समुदाय के लोगों के साथ सद्भाव से रहने के लिए प्रेरित किया।

अपनी टिप्पणियों में, इन निवासियों ने अक्सर हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच कल्पित विभाजन को कम करने और अंतर्धार्मिक सद्भाव के लंबे इतिहास पर जोर देने की मांग की जो कि दोनों

---

[64] *इन्दौर में हिंदुओं की आबादी 80% और मुसलमानों की आबादी 14% है।*

[65] *कबूतरख़ाना में लंबे समय से रहने वाले निवासियों का साक्षात्कार, 11 जून 2018, 26 जून 2018 और 3 जुलाई 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों का साक्षात्कार, 6 जून 2018, 21 जुलाई 2018 और 27 अगस्त 2018*

पड़ोसों की विरासत का हिस्सा है। इन पड़ोसी समुदायों में धार्मिक समुदायों के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बंधों और एक-दूसरे की संस्कृति और परम्पराओं के बीच सहयोग और भागीदारी के कई उदाहरणों से भारतीय उप-महाद्वीप में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कट्टर मतभेदों के इतिहास को चुनौती मिली है।[66]

कई निवासियों ने इन पड़ोसी समुदायों में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सम्बंधों का वर्णन जीवंत आदान-प्रदान, सच्ची मित्रता और प्रेमपूर्ण सह-अस्तित्व के संदर्भ में किया। कबूतरख़ाना में मुसलमानों के पास में रहने वाली एक महिला ने बताया कि हालांकि वह एक हिंदू है, लेकिन उसके और उसके मुस्लिम पड़ोसियों के बीच कोई भी सामाजिक विभाजन नहीं है। वे एक-दूसरे की मदद करते हुए एक साथ रहते हैं। उसने कहा कि "हम मानते हैं कि हम सब इन्सान हैं, इसलिए हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। जीवन का उद्देश्य नैतिक सिद्धान्तों के अनुरूप जीना और अच्छा करना सीखना है ।" उसने यह भी कहा कि अपनी महिला मित्रों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए वह कुछ दिनों के लिए मुस्लिम उपवास भी रखती है, और उसके मुस्लिम दोस्त हिंदू त्योहारों के दौरान मिठाई बनाते हैं।[67]

दूसरे को समायोजित करने और उनके विश्वासों और प्रथाओं को स्वीकार करने की उत्सुकता के पीछे अपने धार्मिक ग्रंथों को व्यापक

---

[66] *ब्रास, पी. (1991): 'एलिट ग्रुप्स, सिम्बॉल मैनिप्युलेशन ऐंड एथनिक आइडेंटिटी एमौंग दि मुस्लिमस ऑफ साउथ एशिया' [कुलीन समूह: दक्षिण एशिया के मुसलमानों के बीच प्रतीकों का उपयोग और प्रजातीय पहचान], (ब्रास, 1991), पृ. 69-108; (बर्मन, 1996)*

[67] *उत्तरी तोडा की महिलाओं से साक्षात्कार, 13 अगस्त 2018*

दृष्टिकोण से पढ़ने की प्रवृत्ति है जिनमें मानवजाति की एकता पर जोर दिया गया है। कबूतरख़ाना में मुसलमानों ने इस्लामी शिक्षा के बारे में बताया कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं, सभी धर्मों का उद्देश्य एक है और यह कि एक सच्चे मुसलमान का कर्तव्य सम्पूर्ण मानवता की सेवा करना है। जैसा कि एक निवासी ने कहा, "इस्लाम हमें सभी की भलाई के लिए काम करना सिखाता है। इसलिए हम सब एक दूसरे की मदद करने की कोशिश करते हैं। हमारे बीच भाईचारे की भावना है।"[68] इसी तरह, कबूतरख़ाना में रहने वाले थोड़े-से सिक्ख परिवारों के एक सदस्य ने इस बात को रेखांकित किया कि "गुरु नानक, हमारे दिव्य शिक्षक, हमें बताते हैं कि समस्त मानवजाति एक है। मानव-मानव के बीच कोई वास्तविक अंतर नहीं हैं। हमें जाति या पंथ के आधार पर लोगों के बीच व्याप्त सांसारिक मतभेदों की अनदेखी करते हुए सभी मनुष्यों की सेवा करना सीखना होगा।"[69]

इस अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों ने इस बात का उल्लेख किया कि लोगों को सद्भावना और आपसी समझदारी के साथ रहना सीखने में मदद करना धर्म का एक प्रमुख उद्देश्य है।[70] उन्होंने इस बात पर ध्यान दिया कि एकता को मजबूत बनाने के लिए, समुदायों ने इस प्रकार से अपने धर्म का पालन करना सीखा है जिससे कट्टरता और अलगाववाद से बचा जा सके। कबूतरख़ाना के एक बहुत पुराने निवासी ने बताया कि इस्लाम के प्रसंग में, "समस्या तब उत्पन्न होती है जब लोग धर्मग्रंथों के ऊपर अपनी-अपनी व्याख्याएं और

[68] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[69] *कबूतरखाना के सिक्ख निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[70] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 7 अगस्त 2018*

विचार लाद देते हैं। हमें धर्म की मूल चेतना की ओर वापस लौटने की जरूरत है जो कि हमें बंधुत्व एवं निःस्वार्थता की सीख देती है।"[71]

निवासियों ने स्मरण किया कि किस प्रकार पड़ोस में रहने वाले लोग दोनों ही समुदायों के धार्मिक उत्सवों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। नवरात्रि के त्योहार के समय, मुस्लिम लोग चौराहे पर आयोजित पारम्परिक 'गरबा' लोकनृत्य में हिंदुओं के साथ नाचते-गाते हैं और वहीं, दूसरी ओर, बकरीद (अब्राहम द्वारा कुरबानी देने की इच्छा का प्रतीक पर्व ईद-उल-अज़हा) के अवसर पर बकरे का मांस मुसलमानों के साथ-साथ हिंदू परिवारों में भी बांटा जाता रहा है।[72] रक्षाबंधन (भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक पर्व) के दौरान, हिंदू और मुसलमान लड़कियां अपने दोनों ही समुदायों के 'भाइयों' की कलाइयों पर राखी बांधती हैं।[73] ईद के दिनों में, उदाहरण के लिए, एक हिंदू की स्थानीय दवा की दुकान पर कबूतरख़ाना के मुस्लिम आगंतुकों का तांता लगा रहता है। वे उसे शुभकामनाएं देते हैं और साथ समारोह मनाते हैं। रमज़ान के उपवास के दिनों में, हिंदू लोग इफ़्तार पार्टी (सूर्यास्त के उपवास तोड़े जाने पर लोगों का एकत्र होना) में भाग लेते हैं, और कुछ लोग तो एकाध दिन खुद भी उपवास रखते हैं।[74] कबूतरख़ाना

---

[71] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 23 अगस्त 2018*

[72] *बकरीद के समय कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 23 अगस्त 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 20 अगस्त 2018*

[73] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 27 अगस्त 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[74] *कबूतरख़ाना में दवा की दुकान के मालिकों से साक्षात्कार, 16 जून 2018; उत्तरी तोडा के एक स्थानीय नेता से साक्षात्कार, 21 जून 2018; कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 13 अगस्त 2018*

की एक वयोवृद्ध हिंदू महिला ने उल्लेख किया: "देखिए, उनकी ईद के अवसर पर हम सबके घरों में 'सेवई' (दूध से बना पारम्परिक मीठा व्यंजन) बांटी जाती है। हमारी दीवाली के उत्सव पर सभी घरों में मिठाइयां बांटी जाती है। एक-दूसरे के शादी समारोहों में हर किसी को आमंत्रित किया जाता है और इस बात की किसी को परवाह नहीं होती कि दूसरे क्या खाते हैं – वे शाकाहारी हैं या मांसाहारी।"[75]

कबूतरख़ाना में रहने वाले बहुत सारे हिंदू एक सूफ़ी संत, भरमदार शाह बाबा, की दरगाह पर मत्था टेकते हैं।[76] उस दरगाह की चाबी पास में ही रहने वाले एक हिंदू परिवार के पास रहती है।[77] इसी तरह, कबूतरख़ाना में रहने वाला एक शिल्पकार परिवार, जो आस्थावान मुस्लिम लोग हैं, पारम्परिक रूप से विभिन्न हिंदू त्योहारों के लिए वस्तुओं का निर्माण करता आया है। उदाहरण के लिए, वे दशहरा उत्सव के दौरान जलाए जाने वाले राक्षस, रावण, का पुतला बनाते हैं, वे मकर संक्रांति के पर्व पर उड़ाए जाने के लिए पतंग भी बनाते हैं और रक्षाबन्धन के उत्सव के लिए सुन्दर राखियां भी गढ़ते हैं।[78] उस क्षेत्र में कार्यरत एक सरकारी कर्मचारी हालांकि स्वयं मुस्लिम है लेकिन सब उसका आदर करते हैं क्योंकि उसने देवी दुर्गा

---

[75] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 19 जुलाई2018। आम तौर पर, मुस्लिम लोग मांसाहारी होते हैं लेकिन ज्यादातर हिंदू शाकाहार को प्राथमिकता देते हैं। इसलिए, सद्भाव के साथ रहने का यह भी मतलब है कि खान-पान सम्बंधी प्राथमिकताओं में इन अन्तरों को राजनीतिक रंग देने से बचा जाए।*

[76] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[77] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[78] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 5 जुलाई 2018*

की एक प्रतिमा दान में दी थी जो उत्तरी तोडा के केन्द्रीय चौराहे पर विराजमान है।[79]

इन दोनों ही पड़ोसों में, एक-दूसरे की धार्मिक मान्यताओं और परम्पराओं के प्रति इस उदारता के पूरक के रूप में एक गहन सामाजिक ताना-बाना भी मौजूद है जिसमें लोग अपने दैनिक कार्यों को पूरा करने के लिए सतत रूप से एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में परस्पर निर्भरता का यह यथार्थ सहयोग एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को कल्याण का एक प्रेरकत तत्व बनाता है। उत्तरी तोडा में एक मंदिर का संरक्षक और किराने की एक छोटी-सी दुकान का मालिक बतलाता है: "हमारे बीच एकता हम सबके एक साथ समानांतर रूप से विकसित होने का परिणाम है। हमें एक-दूसरे की आदत-सी हो गई है। हमें एक-दूसरे से प्रेम है। यदि हम एक-दूसरे का साथ नहीं देंगे तो आखिर हम जाएंगे कहां? मान लीजिए, ऐन रात में मेरे साथ कुछ हो जाए तो मैं मदद के लिए अपने धर्म के किसी व्यक्ति की खोज में नहीं जाऊंगा। सहायता के लिए मैं अपने पड़ोसी का मुंह देखूंगा – चाहे वह किसी भी धर्म का क्यों न हो।"[80]

कबूतरख़ाना की 'पड़ोस समिति' के सदस्य ने, जिसका परिवार उस क्षेत्र के प्रथम बाशिन्दों में से एक था, यह महसूस किया कि पड़ोस के लोग चाहे किसी भी धर्म, जाति या क्षेत्रीय पृष्ठभूमि के हों, उनके बीच मित्रता का यह घनिष्ठ बन्धन एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चली आने वाली एक परम्परा बन गया था। उसने कहा: "बीते हुए

[79] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[80] *उत्तरी तोडा के एक स्थानीय नेता से साक्षात्कार, 21 जून 2018*

समय में, हिंदू और मुसलमान एक-दूसरे के साथ बहुत कुछ साझा करते थे और उनमें आपसी व्यवहार था, और इस तरह वे एकजुट होकर रहते थे। उस पीढ़ी से सम्बंधित लोग अभी भी जीवित हैं। उनके बीच का आपसी प्रेम अभी भी कायम है और उस प्रेम ने ही पड़ोस में अंतर्धार्मिक सद्भाव का माहौल सुनिश्चित किया है।"[81] एक अन्य निवासी ने बताया कि इन पड़ोसों में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच प्रेम का मजबूत बन्धन है जिसके कारण भिन्नताओं की अनदेखी करना लोगों के लिए आसान हो जाता है। "विभिन्न समूहों के बीच प्रेम के कारण यहां साम्प्रदायिक दंगे नहीं हुए हैं। यह बस प्रेम है। अगर आप 'राम-राम' (भगवान राम का नाम लेकर एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं) बोलते हैं तो मैं भी 'राम-राम' बोलूंगा। अगर आप 'सलाम' बोलेंगे तो मैं भी 'सलाम' बोलूंगा।"[82]

इन पड़ोसी-क्षेत्रों के निवासियों द्वारा सहानुभूति और करुणा की भावना से उद्वेलित होकर अन्य धार्मिक समुदायों के लोगों की मदद के लिए आगे बढ़कर सक्रियता बरतने के अनेक उदाहरण हैं। एक मामले में, जब कबूतरख़ाना का 'महादेव मंदिर' टूटने के कगार पर था तो उस क्षेत्र के हिंदुओं ने उसके पुनर्निर्माण के लिए पुलिस से अनुमति मांगी। उन्हें यह अनुमति देने से इस आधार पर इन्कार कर दिया गया कि एक मुस्लिम-बहुल इलाके में मंदिर-निर्माण से धार्मिक तनाव पैदा हो सकता है। इसके प्रत्युत्तर में, वह समूह दोबारा पुलिस के पास गया और इस बार साथ में उनके मुसलमान दोस्त भी थे जिन्होंने पुलिस को यह आश्वासन दिया कि मंदिर-निर्माण पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। बल्कि, मंदिर के प्रति उनके मन में

[81] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

[82] *कबूतरखाना की पड़ोस समिति के सदस्यों से साक्षात्कार, 3 जुलाई 2018*

अपनेपन की भावना है क्योंकि वे बीते हुए समय में वे मंदिर के कई कार्यक्रमों में शरीक हुए थे। पुलिस सहमत हो गई और तब पड़ोस में रहने वाले मुस्लिमों ने भी मंदिर में धन का योगदान दिया। वे मंदिर की देखरेख में भी सहायता देते हैं।[83]

एक अन्य उदाहरण में, 1992 में उत्तरी भारत के अयोध्या शहर में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद पूरे भारत में हुए हिंदू-मुस्लिम दंगों के दौरान, इन्दौर में कर्फ़्यू लगा दिया गया था और पुलिस ने दंगाइयों को देखते ही गोली मारने का आदेश दिया था। किसी को भी घर से निकलने की सख़्त मनाही थी। उस समय उत्तरी तोडा में एक मुस्लिम युवती ने एक मृत शिशु को जन्म दिया था। वह शहर के दूसरे छोर पर रहने वाले अपने माता-पिता को यह दुखद समाचार सुनाने और शिशु के समुचित कफ़न-दफ़न के लिए बेचैन थी। यह वह समय था जब इन्दौर में ज्यादा टेलिफोन कनेक्शन नहीं थे। दुख की इस द्रावक घड़ी में जब उसे अपनी इस इच्छा को पूरा कर पाने की कोई आशा नहीं थी तो उसके एक हिंदू पड़ोसी ने अपने व्यक्तिगत जोखिम पर अपनी मोपेड पर बिठाकर, पुलिस की जांच चौकियों से गुजरते हुए, शहर के दूसरे छोर पर उसे उसके माता-पिता के पास ले जाने का निश्चय किया। सभी रास्ते बंद कर दिए गए थे और पुलिस सभी चौराहों पर थी। वह आदमी, जो अब अधेड़ उम्र का हो चुका है, उस समय का वृतान्त सुनाता है: "पुलिस को आदेश था कि जो कोई भी कर्फ़्यू का उल्लंघन करे उसे गोली मार दी जाए। जब उन्होंने मुझे उस युवती को मोपेड पर ले जाते देखा तो उन्होंने चेतावनी के रूप में मुझे अपनी बेंत से मारा। उन्होंने हमारा नाम

[83] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018*

पूछा और जब उन्होंने पाया कि हममें से एक हिंदू और दूसरा मुस्लिम है तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। हमने उन्हें सारी परिस्थिति बताई और वे यह समझ गए कि हमारा इरादा नेक था और उन्होंने हमें जाने दिया। उस दिन हम मारे जा सकते थे। लेकिन मुझे यह काम करना ही था। मैं उसे इस तरह कष्ट में नहीं देख सकता था।" आज वह व्यक्ति उत्तरी तोडा में एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उस समुदाय को अपनी सेवा दे रहा है। वह महिला जो आज दादी बन चुकी है, वह आज भी उसी घर में रह रही है जहां वह 1992 में रह रही थी।[84]

इन पड़ोसों में हिंदुओं और मुसलमानों के बीच का सहयोगात्मक सम्बंध न केवल उत्सवों और सामाजिक कार्यक्रमों में समारोह मनाने से स्पष्ट होता है बल्कि सामुदायिक समस्याओं के निराकरण में भी, जैसे: पानी के अभाव या बाढ़ से जूझने में। पानी की आवश्यकता को पूरा करने में लोग एक-दूसरे को सहायता देते हैं। जब बाढ़ आती है तो वे एक-दूसरे को भोजन और पनाह देते हैं और सामानों को सुरक्षित जगह पहुंचाने में एक-दूसरे की मदद करते हैं।[85] वह कुआं जो कि कबूतरख़ाना में नूरी मस्जिद में स्थित है, वह आवश्यकता पड़ने पर हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को पानी उपलब्ध कराता है।[86] इसी तरह, कबूतरख़ाना में रहने वाला योगी अपने बोरवेल से पड़ोस में रहने वाले मुसलमानों को भी पानी देता है, खास तौर पर रमज़ान के महीने में जब वे उपवास रखते हैं और दिन के कुछ खास

[84] *महादेव मंदिर के समर्थकों से साक्षात्कार, कबूतरखाना, 13 अगस्त 2018*

[85] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

[86] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 19 जून 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जून 2018*

समयों में उन्हें पानी की अतिरिक्त आवश्यकता होती है।[87] कबूतरख़ाना में आश्रय और भोजन के लिए मस्जिद और मदरसे के दरवाजे हर किसी के लिए खुले रहते हैं, चाहे वे किसी भी धर्म के हों[88], और उसी तरह उत्तरी तोडा में धर्मशाला (विश्राम गृह) सबके लिए खुला रहता है।[89] उनकी आपसी मित्रता साथ जीवन जीने और चुनौतियों को साथ मिलकर झेलने से मजबूत हुई है।

इस संदर्भ में, कुछ प्रतिभागियों ने यह झलकाया कि धर्म के आध्यात्मिक सार-तत्व पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण न केवल लोगों को अपनी भिन्नताओं पर विजय हासिल करने के लिए प्रेरित करना संभव हो सका बल्कि सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन हेतु साथ मिलकर काम करने के लिए भी। इस पर टिप्पणी करते हुए, उत्तरी तोडा के एक युवा ने, जो मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहा है, इस बात पर गौर किया कि धर्म सहिष्णुता को बढ़ावा देने, जो कि एक प्रशंसनीय कार्य है, से भी आगे बढ़कर लोगों को सम्पूर्ण समाज के विकास में भागीदार बनने के लिए भी प्रेरित कर सकता है। उसने कहा कि "भारत एक बहुत ही धार्मिक देश है। जो लोग इस देश के विकास को प्रोत्साहित कर रहे हैं उन्हें चाहिए कि वे लोगों के आध्यात्मिक विश्वासों से भी लाभान्वित हों। अंततः, आम लोगों को चाहिए कि वे विकास कार्य को पूरा करें क्योंकि सरकारें और सरकारी अधिकारी तो बदलते रहते हैं ... परिवर्तन का दायित्व लोगों के कंधों पर है। यह उनका जीवन है।"[90]

---

[87] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 11 जून 2018*

[88] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 28 जून 2018*

[89] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 29 अप्रैल 2018*

[90] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जून 2018*

दोनों ही पड़ोसी क्षेत्रों के लोगों ने इस बात पर गौर किया कि भारत में हिंदू-मुस्लिम सम्बंधों पर बढ़ते हुए विभाजन ने उन्हें धार्मिक पूर्वाग्रहों और समुदाय में पैर पसार सकने वाले घृणापूर्ण दुष्प्रचार इस सम्बंध में, कुछ निवासियों ने समाज में व्याप्त दलगत राजनीति के उस एजेंडा को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की जिसका मकसद लोगों की धार्मिक पहचान के आधार पर उन्हें आपस में बांटना है।[91] जैसाकि कबूतरख़ाना की मस्जिद समिति के एक सदस्य ने कहा, "हमारे बीच भाईचारे की भावना है। यहां के लोग ऐसा ही सोचते हैं क्योंकि हमारे समुदाय के अग्रणी लोग राजनीति में उलझने से बचते रहे हैं। अतीत में, किसी ने 'ज़ेहाद' के बारे में बात शुरु करने की कोशिश की थी लेकिन लोगों ने उसे रोक दिया। इसी तरह, एक हिंदू उग्रवादी नेता यहां नफ़रत फैलाना चाहती थी लेकिन उसके विचारों को किसी ने सुना ही नहीं और वह यहां दोबारा लौट कर नहीं आई।"[92]

इसके बावजूद, इन पड़ोसों के निवासी इस बात के प्रति भी सजग थे कि वे यह मान कर नहीं चल सकते कि अंतर्धार्मिक सद्भाव की यह परम्परा आगे भी कायम रहेगी, और उसे अक्षुण्ण बनाए रखने तथा उसे मजबूती प्रदान करने के लिए उन्हें निरंतर प्रयास करना होगा। उत्तरी तोडा के कुछ वयोवृद्ध सदस्य इस बात को लेकर चिन्तित थे कि बीते हुए समय में हिंदू-मुस्लिम बंधुता की जो भावना विद्यमान थी, वर्तमान पीढ़ी में उसमें कमी आती दिख रही थी। "अपने युवकों को इन मूल्यों की शिक्षा देकर और उन्हें अपने आचरण से दर्शाते

[91] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[92] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जून 2018*

हुए हमें इस भावना की रक्षा करने की जरूरत है। अन्यथा, बहुत ही जल्द हम इस भावना को खो देंगे।"[93]

एक सेवा-निवृत्त पुलिस अधिकारी ने, जो कि उत्तरी तोडा में एक 'पड़ोस समिति' के सदस्य भी हैं, ऐसे मुद्दों के तुरन्त समाधान की आवश्यकता पर चर्चा की जिनसे फूट पैदा हो सकती है और उन्होंने कहा कि हमें शरारती तत्वों पर नजर रखनी चाहिए: "हम सब लोग सद्भाव से रहते हैं, है न? हम सब एक-दूसरे पर निर्भर हैं। अगर कोई समस्या सामने आती है तो वहां से वे [यानी हिंदू लोग] इधर आते हैं, और हम उधर जाते हैं। हम संतुलन बनाए रखने का प्रयास करते हैं। लेकिन हर समुदाय और धर्म में शरारती तत्व होते हैं। ऐसे लोग भी जरूर होंगे जो शांति भंग करने का प्रयास करेंगे।"

उन्होंने महसूस किया कि इन अनियमित बस्तियों में हिंसा की घटनाओं का मुख्य कारण गहराई में पैठे धार्मिक पूर्वाग्रहों की तुलना में शराब के सेवन जैसी आदतें ज्यादा हैं जो कि हिंदुओं और मुसलमानों दोनों में प्रबलता से व्याप्त हैं। उन्होंने याद किया कि अतीत में जब भी धर्म के नाम पर विरोध और शत्रुता के मामले सामने आते थे तो उसका मुख्य कारण राजनैतिक नेताओं द्वारा धार्मिक भावनाओं से खेलना होता था। उन्होंने महसूस किया कि इस तरह के मामलों के माध्यम से धर्म लोगों को यह सिखाता है कि वे अच्छा हृदय रखें और विभेदों को महत्व न दें: "भाई ... किसी भी धर्म में कोई बुराई नहीं है। सभी धर्म अच्छे हैं। यदि आप किसी महान व्यक्ति के पास जाएंगे तो वह आपसे यह नहीं पूछेगा कि आप मुस्लिम हैं, ईसाई हैं या सिक्ख हैं, या यह कि 'तुम्हारा नाम क्या है,

[93] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018*

तुम किस जाति और धर्म के हो?' वह आपसे इतना ही पूछेगा कि 'तुम्हें क्या तकलीफ है? तुम्हारी कठिनाई क्या है? तुम्हें क्या बीमारी है? मुझे यह बताओ। हम तुम्हारे लिए दुआ करेंगे, तुम्हें दवा देंगे।' .... वे यह नहीं कहते कि 'इसे मारो या उसे मरो, उसे छुरा घोंप दो।' ऐसा कौन कहेगा? यह जहर तो राजनेताओं ने फैलाया है।"[94]

एकता की भावना की झलक उस भाषा से भी मिली जिसका प्रयोग उन्होंने अपने पड़ोसियों का वर्णन करने के लिए किया। निवासियों ने पड़ोस का वर्णन अपने विस्तारित परिवार के रूप में किया। इन पड़ोसों के निवासियों के रूप में उन्होंने जिन चुनौतियों का सामना किया था उसका वर्णन करते हुए निवासियों ने हमेशा अन्य पुरुष सर्वनाम 'हम' और 'हमें' का प्रयोग किया जो किसी खास धार्मिक, जातीय या नस्लीय पहचान के बजाय पूरे पड़ोस का द्योतक है।[95]

अध्ययन ने जो बात स्पष्ट की वह यह थी कि दोनों पड़ोसों में रहने वाले हिंदू और मुस्लिम पृष्ठभूमि के लोग इस तथ्य के प्रति जागरूक थे कि अंतर्धार्मिक बंधुता की उनकी परम्परा नकारात्मक शक्तियों से सुरक्षित रहने और आने वाली पीढ़ियों को प्रदान करने के लिए एक बहुमूल्य संसाधन थी। हालांकि इस अध्ययन में शामिल अधिकांश प्रतिभागियों ने अन्य धार्मिक समुदाय के लोगों के साथ अपने बंधुतापूर्ण सम्बंधों के बारे में दृढ़ विश्वास के साथ बात की, लेकिन शोध दल ने कुछ निवासियों की टिप्पणियों में संदेह और अविश्वास के भी प्रमाण पाए – खास तौर पर युवाओं में तथा उन लोगों में जो अभी हाल ही में इन पड़ोसों में रहने आए थे। तथापि, अविश्वास या

[94] *उत्तरी तोडा में एक वरिष्ठ व्यक्ति से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

[95] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 24 जुलाई 2018*

पूर्वाग्रह के ये भाव प्रायः उन एकमत विचारों की तुलना में कम और अपेक्षाकृत मामूली थे जिनके साथ दोनों पड़ोसों ने अंतर्धार्मिक सद्भाव के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताई थी। पड़ोसों में अंतर्धार्मिक बंधुता के इन बंधनों को मजबूत करने के पीछे सामाजिक और आर्थिक सम्बंधों में पारस्परिकता और सहयोग की परम्पराएं थीं जो उनके साझा सामुदायिक जीवन के ताने-बाने को रेखांकित करती थीं।

### इ. विश्वास और पारस्परिकता के नेटवर्क

जब इस अध्ययन का फील्ड रिसर्च संचालित किया जा रहा था तो, कतिपय शहरी विकास योजनाओं के क्रियान्वयन के हिस्से के रूप में, कबूतरख़ाना और उत्तरी तोडा की नदी के पास रहने वाले इस अध्ययन के प्रतिभागियों को नगरनिगम के अधिकारियों द्वारा सूचित किया गया था कि उनके घरों को तोड़ दिया जाएगा और उन्हें शहर के बाहरी छोरों पर अन्य आवासों में स्थानांतरित कर दिया जाएगा। इस अनपेक्षित घटनाक्रम ने निवासियों के बीच अपने समुदाय से जुड़ाव के बारे में चर्चा को आरंभ कर दिया। विस्थापन की चुनौती उनके सामने खड़ी थी और उनमें से बहुत से लोगों ने समुदाय के साथ अपने लगाव के बारे में बड़ी भावुकता से अपनी बात कही और यह बताया कि इस लगाव का उनके लिए क्या मतलब है। कबूतरख़ाना में रीसायकिल सामग्रियों के एक डीलर ने कहा: "सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आप अपनी धरती से कितना प्यार करते हैं। देश मेरे लिए क्या है? वह मेरा घर है जहां हम रहते हैं, वह स्थान जहां हम पैदा हुए थे, जहां हम बड़े हुए। वह जगह जहां मैं रहता हूं, जो लोग मेरे पड़ोसी हैं, मेरे अपने लोग हैं – यह सब मिलाकर मेरे लिए देश होता है। आज मुझे इस जगह से प्रेम है। तो फिर आप

[अधिकारी लोग] हमें इस जगह से जबर्दस्ती क्यों हटा रहे हैं?"[96] एक औरत जो कबूतरख़ाना में नदी के किनारे नल के पास अपनी बाल्टी भरने के लिए खड़ी थी, उसने नदी के तल को काटते हुए बुलडोज़रों को देखकर दुख व्यक्त किया: "इस विध्वंस के माध्यम से वे केवल भवनों को नहीं बल्कि हमारे रिश्तों को भी तोड़ रहे हैं। क्या इस तरह हमारे दिलों को तोड़ना ठीक है? हम जहां रहते हैं उस जमीन से हमें प्यार है।" [97]

विस्थापित होने के कारण लोगों को अपने रोजगार से हाथ धोना पड़ेगा, उन्होंने यह बात भी कही। चूंकि उनमें से ज्यादातर लोग बिना किसी औपचारिक अनुबंध के और श्रम कानूनों के दायरे से बाहर रहकर अनियमित सेक्टरों में घरेलू कामगारों और दिहाड़ी मजदूरों के रूप में काम करते थे इसलिए वे अपने नियोक्ताओं के साथ बहुत हद तक व्यक्तिगत सम्बंधों पर आश्रित थे। "लोग हमें इसलिए काम देते हैं क्योंकि उन्हें हम पर भरोसा है। यह भरोसा इन्दौर के मुख्य बाजारों के पास इस बस्ती में कई दशकों तक रहने के कारण बना है। जो लोग हमें काम पर रखते हैं उन्हें पता है कि हम यहां रहते हैं, हमारे परिवार यहां रहते हैं। जब हम किसी नई जगह चले जाएंगे तो लोग हमें नहीं जानेंगे और इसलिए वे हमें आसानी से काम नहीं देंगे।"[98] उत्तरी तोडा की एक गुजराती महिला ने, जो एक घरेलू कर्मी के रूप में काम करती थी, बताया कि पड़ोस में रहने वाली उन महिलाओं के लिए भरोसा का यह सवाल ज्यादा महत्वपूर्ण है जो घरेलू सहायिकाओं के रूप में काम करती हैं। "लोग आपको अपने

[96] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[97] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 7 अगस्त 2018*

[98] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 2 अगस्त 2018*

घरों में तबतक नहीं घुसने देंगे जबतक उन्हें यह नहीं लग जाएगा कि वे आप पर विश्वास कर सकते हैं।"[99]

इसके अलावा, पड़ोस के निवासी अपने हर काम-काज के लिए एक-दूसरे की सहायता पर बहुत ज्यादा निर्भर थे। उत्तरी तोडा में रहने वाली एक महिला ने कहा: "हम लोग राजवाड़ा [पुराने नगर का मुख्य मुक्त बाजार] में दर्ज़ी या शिल्पकार के रूप में छोटे-छोटे काम करते हैं। लेकिन कई बार हमारे पति हमें अकेले बाजार जाने की अनुमति नहीं देते। हम दूसरी महिलाओं के साथ जाते हैं, या जब हममें से किसी को काम मिल जाता है तो वह दूसरों को सूचित कर देती है।"[100]

उत्तरी तोडा में रहने वाली एक और महिला ने यह वर्णन किया कि काम-काज की उनकी अस्थिर दशाओं में उनके पड़ोसी कैसे एक-दूसरे की मदद करते हैं। उस महिला ने बताया कि उसे बीमारी अवकाश या छुट्टियां नहीं मिलतीं क्योंकि लोगों को रोज अपने घरों की साफ-सफाई और बर्तनों की धुलाई इत्यादि की जरूरत होती है। जब कभी उसे अपने गांव जाना होता था या उसके घर में कोई बीमार पड़ जाता था तो उन दिनों के लिए वह अपनी जगह अपनी एक महिला दोस्त को भेज देती थी। जब ये महिलाएं अपने काम पर जाती थीं तो अपने बच्चों को घर पर रहकर पड़ोस में खेलने के लिए छोड़ जाती थीं और ऐसा करके वे निश्चिंत रहती थीं क्योंकि सभी पड़ोसी एक-दूसरे को जानते थे। उत्तरी तोडा की उस महिला ने कहा कि

[99] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 17 जुलाई 2018*

[100] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 20 अगस्त 2018*

"हमारे बच्चों पर कई लोगों की निगाह रहेगी।"[101] इस प्रकार, अपनी आजीविका कमाने के लिए, झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोग सम्बंधों के एक जटिल नेटवर्क पर निर्भर रहते हैं जो कि विश्वास, मित्रता और पारस्परिकता के गैर-आर्थिक कारक तत्वों पर आधारित हैं।

इसी तरह, आजीविका के लिए संघर्षरत और छोटी बचत वाले अनेक परिवारों को गरीबी के कारण बाध्य होकर अनौपचारिक क्रेडिट सुविधाओं (परिवार और मित्रों से कर्ज़) पर बहुत ज्यादा निर्भर रहना पड़ता था जो कि वहीं संभव है जहां उच्च कोटि के विश्वास पर आधारित दीर्घकालिक सम्बंध स्थापित हो। उत्तरी तोडा में किराने की एक छोटी-सी दुकान चलाने वाली एक महिला ने कहा कि उसके ज्यादातर पड़ोसी ग्राहक उससे उधार सामान खरीदते हैं। उसने कहा कि पड़ोस के इन लोगों को उधार सामान देने में उसे कोई दिक्कत नहीं होती थी क्योंकि वह जानती थी कि वे देर-सबेर उधारी चुका ही देंगे।[102] पड़ोसी समुदाय में पैदा लिए और यहां के सभी लोगों से बचपन से ही अच्छी तरह परिचित, कबूतरख़ाना में रहने वाले एक दवा की दुकान के मालिक ने कहा, "यहां रहने वाले हर किसी के साथ हमारा एक रिश्ता है। इसलिए दूसरों पर भरोसा रखना स्वाभाविक है। हम लोगों की परिस्थितियां जानते हैं। हमें इस बात का डर नहीं है कि वे उधारी नहीं चुकाएंगे। अगर वे नहीं भी चुकाएंगे तो भी हमें खुशी है कि हमने किसी जरूरतमंद की सहायता की, और हमें पता है कि सचमुच कौन जरूरतमंद है।" वह उन्हें दवाइयां उधार देता था और कई बार जब उसे लगता था कि वे कीमत नहीं चुका

[101] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 17 जुलाई 2018*

[102] *किराना दुकान की मालकिन से साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 8 अगस्त 2018*

सकेंगे तो वह उन्हें दवाइयां मुफ़्त में भी देता था। उसने कहा कि "जब आप इन परिवारों को जानते हैं और आपको उनके जीवन की कहानी मालूम है, और उनके साथ एक रिश्ता है, तो आप उनके प्रति उदासीन नहीं रह सकते। हमें उनकी परवाह है और पैसे हमें वापस मिल जाएंगे।"[103] कबूतरख़ाना की एक महिला ने टिप्पणी की कि उसे कबूतरख़ाना छोड़कर जाने से इसलिए भी डर लगता है क्योंकि अब उसे वह दवा की दुकान उपलब्ध नहीं होगी और उसके परिवार की दवा सम्बंधी जरूरतों को तब कौन पूरा करेगा? "मैं किसी अन्य जगह कैसे रह पाऊंगी, जहां वे हर चीज के लिए आपसे कीमत वसूलते हैं और जहां आपका दुख-दर्द कोई नहीं सुनेगा?"[104]

ऐसे बड़े कर्ज़ों के लिए भी, जैसे कि किराने की उस दुकानदार महिला ने अपनाव यवसाय आरंभ करने के लिए लिए थे, निवासियों को लगा कि बैंकों से ऋण प्राप्त करना उनके लिए लगभग असंभव था क्योंकि कागजी कार्रवाइयों को पूरा करने में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उसने कहा कि "हमारे लिए अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से उधार लेना आसान है। उनसे हम कम से कम बात तो कर सकते हैं और कोई भी परिस्थिति आ जाने और ऋण की वापसी में विलम्ब होने की सूरत में उन्हें समझा तो सकते हैं।"[105]

निवासी एक-दूसरे पर किस हद तक निर्भर रहते हैं यह बात मानसून के मौसम में और ज्यादा स्पष्ट हो जाती है जब नदी से आने वाला बाढ़ का पानी नदी-तटों पर रहने वाले लोगों के घरों को जलमग्न

[103] *कबूतरख़ाना में एक दवा दुकानदार से साक्षात्कार, 16 जून 2018*

[104] *कबूतरख़ाना के एक निवासी से साक्षात्कार, 11 जून 2018*

[105] *उत्तरी तोडा में किराना दुकान की मालकिन से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*

कर देता है। जब बाढ़ आती है तो इन दोनों ही पड़ोसी इलाकों में सामान्य परम्परा यह रही है कि जो लोग ऊपर की पहाड़ियों पर, बाढ़ से सुरक्षित, रहते हैं वे संकट में पड़े इन लोगों के लिए अपने द्वार खोल देते हैं।[106] ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जबकि पड़ोसियों ने बाढ-प्रभावित घरों के लोगों को अपने यहां भोजन और शरण दी है, उनके सामानों को लाने में सहायता दी है, और एक-दूसरे को डूबने से भी बचाया है।[107] खाना बनाने की व्यवस्था करने और छोटे बच्चों तथा अति संवेदनशील लोगों की देखभाल के लिए सभी निवासी एकजुट होते हैं।[108]

### ई. भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक कल्याण

इन पड़ोसी समुदायों में वहां के निवासियों ने जिन संस्थाओं को ज्यादा मूल्यवान समझा वे थे वहां के स्कूल और उपासना स्थल (मंदिर और मस्जिद दोनों)। विद्यालयों का मूल्य केवल वैज्ञानिक शिक्षा से कहीं आगे बढ़कर था। कबूतरख़ाना में, कुछ निवासियों ने इस बात का उल्लेख किया कि वे पड़ोस को छोड़कर इसलिए नहीं जाना चाहते थे क्योंकि उनके बच्चे जिस निजी विद्यालय में पढ़ते थे वहां उन्हें धर्म-निरपेक्षता की शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा भी दी

[106] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 29 अप्रैल 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018*

[107] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 29 अप्रैल 2018; 11 जून 2018, और 26 जून 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 6 जुलाई 2018, 27 जुलाई 2018 और 21 जुलाई 2018*

[108] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018; उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

जाती थी। वे इस बात को लेकर चिन्तित थे कि अगर वे वहां से चले जाएंगे तो उनके बच्चे नैतिक शिक्षा से वंचित हो जाएंगे।[109]

उत्तरी तोडा में सरकारी विद्यालयों में जाने वाले विद्यार्थियों के माता-पिता विद्यालय शिक्षिका के प्रति प्रशंसा के भाव से भरे हुए थे क्योंकि वह बच्चों के विकास में व्यक्तिगत अभिरुचि रखती थी।[110] उत्तरी तोडा के विद्यालय की उस शिक्षिका के बारे में यह जाना जाता था कि वह बच्चों और उनके माता-पिताओं के साथ स्नेहपूर्ण सम्बंध रखती थी। जो बच्चे कक्षा से अनुपस्थित रहते थे, वह उनके घरों पर आती थी और माता-पिता को प्रोत्साहित करती थी कि वे अपने बच्चों को विद्यालय भेजते रहें। शिक्षक ने टिप्पणी की कि विद्यालय से बच्चों के गायब होने के पीछे एक प्रमुख कारण था घर के बड़े लोगों द्वारा शरा का सेवन। वह अक्सर माता-पिताओं को इस विषय पर सलाह दिया करती थी।[111]

एक और कारण था जिससे कि माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए उत्सुक रहते थे। सरकारी विद्यालयों में, बच्चों को निःशुल्क मध्याह्न भोजन दिया जाता था जो कि बच्चों के लिए पोषण का एक स्रोत था और मां को भी घरेलू काम से राहत मिल जाती थी और दिन के वक्त वह अपने काम में ज्यादा समय बिता सकती थी। साथ ही, विद्यालय जाने के कारण बच्चे अपेक्षाकृत एक सुरक्षित स्थान पर रहते थे जहां वे शाम तक सार्थक रूप से व्यस्त रहा करते थे। जब नगरनिगम के अधिकारियों द्वारा संरचनात्मक रूप

[109] *कबूतरखाना में माता-पिताओं से साक्षात्कार, 2 जून 2018*

[110] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 2 अगस्त 2018*

[111] *उत्तरी तोडा की शिक्षिका से साक्षात्कार, 2 अगस्त 2018*

से दोषपूर्ण एक आवासीय भवन को गिराया जा रहा था और परिवारों को शहर के एक दूसरे हिस्से में स्थानांतरित किया जा रहा था तो उस शिक्षिका ने इस बात पर अफ़सोस जताया कि शैक्षणिक वर्ष के मध्य में ही उसे अपने अनेक छात्रों से बिछुड़ना पड़ेगा। वह इस बात को लेकर आश्वस्त नहीं थी कि वे जिस नई जगह पर जा रहे थे वहां वे तुरन्त अपनी विद्यालयीन शिक्षा जारी रख पाएंगे या नहीं। वह उन बच्चों को लेकर चिन्तित थी।[112]

विद्यालय की तरह ही, इन दोनों ही पड़ोसी क्षेत्रों में धार्मिक संस्थाएं समुदाय के लिए अनेक प्रकार के सामाजिक कार्यकलापों को सम्पन्न करती थीं। अपने प्रमुख धार्मिक कार्यों के अलावा, कबूतरख़ाना में स्थित मस्जिद और सूफ़ी दरगाह तथा उत्तरी तोडा में स्थित मंदिर और मठ (अखाड़े) बाढ़ के समय, जब लोगों के घर जलमग्न हो जाते थे, लोगों के लिए आश्रय-स्थल बन जाते थे। जो लोग इन संस्थाओं से जुड़े हुए थे, अपने पड़ोस के सभी धर्मों के लोगों के लिए बड़ी तत्परता से राहत के काम किया करते थे – जैसे भोजन, पानी और रहने की जगह की व्यवस्था।[113] इसके अलावा, उत्तरी तोडा में दुर्गा-स्थान और गुजराती मंदिर जैसे धार्मिक स्थल, तथा कबूतरख़ाना में मस्जिद अपने बोरवेलों से गर्मियों के दिनों में दोनों ही क्षेत्रों के लोगों को पानी उपलब्ध कराते थे। इस प्रकार दोनों ही पड़ोसों के लोगों के

[112] *उत्तरी तोडा की शिक्षिका से साक्षात्कार, 2 अगस्त 2018*

[113] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018; कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 11 जून 2018*

लिए, ये उपासना-स्थल उनका भौतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक कल्याण सुनिश्चित करने वाले महत्वपूर्ण केंद्र बने हुए थे।[114]

जब इन पड़ोसों के कुछ निवासियों से यह पूछा गया कि वे अपने जीवन का उद्देश्य किस रूप में देखते हैं तो उन्होंने मुख्य रूप से समुदाय से अपने लगाव तथा उसकी प्रगति देखने की अभिलाषा के रूप में उसका उल्लेख किया। उत्तरी तोडा के एक निवासी ने अपने सम्पूर्ण पड़ोस का वर्णन अपने परिवार के रूप में किया: "घर आपकी अपनी जगह होती है ... आप जो कुछ भी हैं वह उसी का एक अंश है। आपको उस पर गर्व होता है, और उसे बेहतर बनाने के लिए आप पूरी कोशिश करते हैं।" जहां अन्य लोगों ने [अपने समुदायों में] अभाव, गरीबी और ठहराव का अनुभव किया, उसने अछूती संभावनाओं और फ़र्क ला सकने का अवसर देखा।[115]

इसी तरह, अन्य कई लोगों ने अपने जीवन के उद्देश्य को न केवल अपने व्यक्तिगत हितों को आगे बढ़ाने बल्कि अपने समुदाय के बच्चों के विकास में मदद देने के रूप में भी देखा। कबूतरख़ाना के एक अधेड़ निवासी की दृष्टि में, "जीवन का उद्देश्य है दूसरों को सहायता देना और अगली पीढ़ी के लिए इस दुनिया को और बेहतर बनाना। मेरा जीवन तो संवर चुका और अब बीत चुका। लेकिन अब मैं अगली पीढ़ी के बारे में सोचने का प्रयास करता हूं।"[116] उत्तरी तोडा में दो बच्चों की एक मां, जो एक घरेलू सहायिका के रूप में काम करती

---

[114] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जून 2018; कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 11 जून 2018*

[115] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जून 2018*

[116] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई2018*

है, अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दिलाने की अपनी अभिलाषा प्रकट करती है जो वह स्वयं प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सकी:

जीवन का उद्देश्य यह है कि हम अपने बच्चों को आगे बढ़ने के लिए सुशिक्षित करने का प्रयास करें। मुझे बहुत अफ़सोस है कि मुझे समुचित शिक्षा नहीं मिल सकी। मेरे माता-पिता बच्चियों को शिक्षित करने का महत्व नहीं समझ सके। मैं केवल चौथी कक्षा तक पढ़ सकी। आज जब मैं कागज का एक टुकड़ा देखती हूं तो मैं उसे ठीक से पढ़ नहीं पाती। उसे पढ़वाने के लिए मुझे शिक्षित लोगों के पीछे दौड़ना पड़ता है। मैं अपने बच्चों से कहती हूं कि वे पढ़ें और इस दुनिया में एक काबिल इन्सान बनें। हम माता-पिता अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ करते हैं। हम अपने लिए कुछ नहीं करते। हम कड़ी मेहनत करते हैं और काम से एक दिन भी अवकाश नहीं लेते। हमारे बच्चे पढ़-लिख सकें और आगे बढ़ सकें, इसके लिए पैसे बचने के चक्कर में हम अपने लिए अच्छे कपड़े खरीदने पर पैसे खर्च नहीं कर पाते।[117]

### उ. एकता के वातावरण का निर्माण और उसे बनाए रखना

अपनी टिप्पणियों में, इन पड़ोसों में रहने वाले लोगों ने ऐसे कुछ गुणों और शर्तों पर मनन किया जिनसे एकता और सद्भाव पर आधारित सम्बंध का फलना-फूलना संभव हो सकता है। इस खंड में उनकी टिप्पणियों को निम्नांकित उप-शीर्षकों के अंतर्गत क्रमबद्ध किया गया है – प्रेम और संवेदना, परामर्श, शिक्षा, न्याय और संघर्ष का समाधान।

[117] उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018

**प्रेम और संवेदना**

इन बस्तियों में एकता का वातावरण बनाए रखने के लिए एक महत्वपूर्ण शर्त थी दूसरों के प्रति प्रेम और संवेदना की भावना रखना। जैसाकि उत्तरी तोडा की एक महिला ने उल्लेख किया, "प्रेम के कारण ही हम एक हैं ... हमारा धन हमारे सम्बंधों में निहित है ... हमारे बीच संवेदना का भाव है। आपको पता होता है कि आखिरकार वह अगला आदमी भी आपकी ही तरह कष्ट भुगत रहा है।"[118]

सेवा के माध्यम से प्रेम प्रकट करने में समष्टि के कल्याण के लिए क्षणिक इच्छाओं, स्वार्थ और निजी सुख-सुविधाओं का त्याग निहित है। अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों ने यह स्पष्ट किया कि प्रेम की उष्मा यह सुनिश्चित करती है कि स्वार्थ का त्याग करना एक आनंदकारी प्रक्रिया है। जैसाकि एक व्यक्ति ने कहा, "जब हम प्रेम से अनुप्रेरित होते हैं तो हम अपने लाभ के बारे में नहीं सोचते। एक परिवार की तरह, हम एक-दूसरे के बारे में सोचते हैं।"[119] एक अन्य निवासी ने उल्लेख किया कि निःस्वार्थ रूप से देने में अपना एक सौन्दर्य और आनंद है। इस अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए उसने माता-पिता द्वारा अपने बच्चों पर लुटाए जाने वाले निःस्वार्थ प्रेम का उदाहरण दिया:

माता-पिता कई तरह से अपने बच्चों के लिए त्याग करते हैं। ऐसा करते हुए वे यह नहीं सोचते कि 'जब मेरा बच्चा बड़ा होगा तो इसके बदले वे मेरी सेवा करेंगे, और इसलिए मैं भविष्य में निवेश कर रहा या कर रही हूं'। वे यह सोचते हैं कि 'मेरे बेटे का एक

[118] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

[119] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई2018*

बढ़ता हुआ परिवार है। उसके अपने बाल-बच्चे हैं ... हमने उसे शिक्षित किया और अब वह अपने बच्चों की परवरिश कर रहा है। उसे अपने घर की चिंता करनी है। अब अगर हम उसके यहां ठहरने चले जाएंगे तो हम उस पर अतिरिक्त बोझ ही लादेंगे। बेचारा, हमारा बेटा, यह सब कैसे कर पाएगा? हमें तो उल्टे उसकी मदद करने के बारे में सोचना चाहिए।' जब हम अपने बेटे से मिलते हैं तो हम यह पूछते हैं कि हम उसकी मदद कैसे कर सकते हैं। हम अपने आप से कहते हैं, 'हमारे मरने के बाद हमारा जो कुछ भी है उसी का होगा। इसलिए हम अपना धन उसे अभी ही क्यों न दे दें? अगर उसे अभी जरूरत है तो हम अपने मरने तक क्यों इंतजार करें?' जब हम उसके परिवार से मिलते हैं तो उसके बच्चों के लिए मिठाइयां ले जाते हैं, मनबहलाव के लिए उन्हें बाहर घुमाने ले जाते हैं, उनके लिए अच्छे कपड़े खरीदते हैं। वे खुश होते हैं और इससे हम भी खुश हो जाते हैं। हमें खर्चों की परवाह नहीं होती। हम यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि इससे हमारे बच्चों को खुशी मिलती है और जब वे खुश होते हैं तो हमें भी अच्छा लगता है। लेकिन हम यह सब अपने लिए नहीं करते।'[120]

उत्तरी तोडा के एक भवन ठेकेदार ने, जिसने अन्य सम्पन्न इलाकों में रहने की क्षमता होते हुए भी उसी पड़ोस में रहने का फैसला लिया, यह बताया कि खुशी और प्रेम ही वे प्रेरक तत्व थे जिनके कारण उसने यहां रहने का निश्चय किया। उसने उत्तरी तोडा और उसके निवासियों के बारे में जिस चहक के साथ अपनी बात कही उससे उसका प्रेम महसूस किया जा सकता था। "यह पड़ोस मेरा बचपन है

[120] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

... यह मेरा आजीवन साथी है। मैं इसे छोड़कर नहीं जाऊंगा। मैं यही रहूंगा और इसे विकसित होते देखूंगा।" उसने पड़ोस के युवाओं के बारे में बड़े गर्व से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया जिन्होंने सफलतापूर्वक अपना भविष्य गढ़ा और गरीबी के दलदल से बाहर निकले।[121] पड़ोस के लोगों ने अक्सर उसका वर्णन एक ऐसे व्यक्ति के रूप में किया जिसके पास वे अपनी समस्याएं लेकर जाते थे – चाहे वह पानी की कमी के बारे में हो, सरकारी विभागों के साथ लिखा-पढ़ी में कोई दिक्कत हो, या व्यक्तिगत संकट।[122]

उत्तरी तोडा में अपना एक छोटा-सा क्लीनिक चलाने वाले एक मेडिकल डॉक्टर के अनुभव से भी ऐसा ही प्रेम परिलक्षित हुआ। उसने एक सिविल अस्पताल में सफलतापूर्वक प्रैक्टिस की थी जिसे त्याग कर उसने उत्तरी तोडा में अपना छोटा-सा क्लीनिक खोल लिया जहां वह पिछले 29 वर्षों से लोगों की सेवा करता आ रहा है। वह अक्सर अपने मरीज़ों से परामर्श शुल्क नहीं लेता था और जरूरी होने पर कई बार उन्हें दवाइयां भी मुफ़्त देता था। ट्युबर्क्युलोसिस (टीबी) के मरीज़ों की निगरानी के लिए वह एक सरकारी परियोजना का भी पर्यवेक्षक था जिसका काम यह सुनिश्चित करना था कि लोग अपना पूरा उपचार करवाएं। यदि वह कहीं दूसरी जगह प्रैक्टिस करता तो उसे ज्यादा आर्थिक लाभ मिलता, लेकिन उत्तरी तोडा के निवासियों के कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के कारण उसने वहीं रहने का निश्चय किया। उसने बताया:

[121] *समुदाय के एक अग्रणी व्यक्ति का साक्षत्कार, 21 जून 2018*

[122] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 25 अप्रैल 2018, 12 जून 2018*

मैं यह नहीं कहूंगा कि मुझे रुपये-पैसे की कोई परवाह नहीं। वह महत्वपूर्ण है। लेकिन वह बात जो मुझे प्रेरित करती है वह है किसी गरीब मरीज़ की सेवा। मेरे ऐसे कई गरीब मरीज़ हैं जिनसे मैं कोई फ़ीस नहीं लेता। मैं उनके लिए ऐसी दवाइयां लिखने की कोशिश करता हूं जो वे खरीद सकें, और जिनसे मैं परामर्श शुल्क लेता भी हूं वह उनकी उम्मीद से कम होता है।[123]

एकता की एक अन्य शर्त जिसके बारे में अध्ययन-प्रतिभागियों ने चर्चा की वह थी पड़ोस के सम्मुख खड़े मुद्दों के बारे में एक सामान्य समझ तक पहुंचने के लिए लोगों के बीच परामर्श। एक स्थानीय निवासी ने कहा, "मुझे आपको और आप कैसे सोचते हैं यह समझने की जरूरत है। और जरूरी है कि आप भी मुझे समझें। हमारे इस स्थान को प्रभावित करने वाले गंभीर मुद्दों के बारे में हमें आपस में बातचीत करने और एक सामान्य समझ तक पहुंचने में सक्षम होना चाहिए।" उसने आगे कहा, "एकता केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं है जिसके बारे में हम किताबों में पढ़ते हैं और फिर अपने दैनिक जीवन में लागू करते हैं। एक समुदाय के रूप में जब हम साथ मिलकर किसी चुनौती का सामना करते हैं तो एकजुट होकर उसका प्रत्युत्तर देने में समर्थ होने के लिए हमें उसे अच्छी तरह समझने की जरूरत होती है।" इसलिए, उसने यह महसूस किया कि विचार की एकता के सृजन और उसे बनाए रखने के लिए यह जरूरी है कि लोग अपने समक्ष खड़े मुद्दों के बारे में सही-सही समझ का विकास करें और समुचित समाधानों के बारे में विचार कर सकें।

[123] *डॉक्टर से साक्षात्कार, 21 जून 2018*

उसने महसूस किया कि ऐसी क्षमता के न होने पर दूसरे लोग हमारा गलत फायदा उठाएंगे।[124]

**शिक्षा**

फ़ोकस-ग्रुप के एक विचार-विमर्श के दौरान, प्रतिभागियों ने इस बात का उल्लेख किया कि किसी भी ग्रुप में विचार और उद्देश्य की एकता बनाए रखने के लिए ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो सामाजिक जागरूकता तथा समुदाय के कल्याण को बढ़ावा देने की इच्छा को पोषित करे।[125] उन्होंने महसूस किया कि अनेक निवासियों के बीच शिक्षा के अभाव के कारण, लोगों का बड़ी आसानी से गलत फायदा उठाया जा रहा था। उसने दुख जताया कि "आज वे एक चीज सोचते हैं और सब एकजुट होते हैं। कल कोई आ जाता है और उनमें डर फैला देता है, और वे अपने पिछले विचार को त्यागने के लिए तैयार हो जाते हैं।" एक अन्य निवासी ने महसूस किया कि एक ऐसी शिक्षा की जरूरत है जो निवासियों के मन में उच्च स्तर की सामाजिक जागरूकता उत्पन्न कर सके। उसने कहा कि "हमें लगता है कि हमें समाज, देश और दुनिया के प्रति उच्चतर स्तर की जागरूकता की जरूरत है, और यह अनुभव करने की कि हम मौजूदा स्थिति के एक हिस्सा हैं।"[126] इस प्रसंग में कुछ निवासियों ने वर्तमान समाज की समस्याओं के प्रसंग में नैतिक समाधान ढूंढ़ने के लिए धार्मिक शिक्षाओं की प्रासंगिकता के बारे में टिप्पणी की। एक अन्य ने उसमें यह भी जोड़ा कि दुर्भाग्य से दुनिया की वर्तमान धार्मिक शिक्षाओं को ठीक से नहीं समझा जाता या उन्हें ठीक से लागू नहीं किया जाता।

---

[124] *कबूतरख़ाना के एक स्थानीय निवासी से साक्षात्कार, 7 अगस्त 2018*

[125] *कबूतरख़ाना के एक स्थानीय निवासी से साक्षात्कार, 7 अगस्त 2018*

[126] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

जब उनके सच्चे अभिप्राय को समझ लिया जाएगा तो उनसे समुदाय को रूपांतरित करने के लिए जागरूकता और इच्छाशक्ति का जन्म हो सकता है।"[127]

बहुत सारे निवासियों ने एक ऐसे साधन के रूप में शिक्षा के महत्व के बारे में टिप्पणी की जिसके माध्यम से इन पड़ोसी क्षेत्रों में रहने वाले लोग एकता को बढ़ावा दे सकें और गरीबी की समस्या का निराकरण कर सकें। जैसाकि कबूतरख़ाना के एक निवासी ने कहा, "हम सब एक समान हैं। हम सबकी रगों में एक जैसा ही खून दौड़ता है। एकमात्र अंतर शिक्षा के कारण है।"[128] फिर भी, अगली पीढ़ी को शिक्षित करने का मार्ग अक्सर लड़कियों की उपेक्षा, शराब की लत और गरीबी जैसी सामाजिक बुराइयों के कारण अधूरा रह जाता है। कबूतरख़ाना के एक अन्य निवासी ने, जो कि समाज की सबसे पिछड़ी मानी जाने वाली जाति से सम्बंध रखता है, यह बताया कि वह स्कूल इसलिए नहीं जा सका क्योंकि जरूरतों को पूरा करने के लिए उसका परिवार उसे काम पर भेजना चाहता था, हालांकि वह अभी बच्चा था।[129] शराब की लत, खात तौर पर पिताओं में, का अर्थ यह हो सकता है कि परिवार को सहारा देने के लिए महिलाओं और बच्चों को काम करना पड़े। शराब की आदत अन्य अनेक प्रकार के घरेलू शोषणों को भी जन्म देती है जिनसे बच्चे ऐसे स्वस्थ घरेलू वातावरण से वंचित रह जाते हैं जिसमें वे अपनी शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें। उत्तरी तोडा की एक महिला ने बताया कि कई बार अपने माता-पिता के प्रति उसके मन में कड़वे

[127] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 3 अगस्त 2018*

[128] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[129] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 29 अगस्त 2018*

विचार आ जाते हैं क्योंकि लड़की होने के नाते उन्होंने उसे प्राथमिक विद्यालय से ज्यादा की पढ़ाई नहीं करने दी। "आज जब मैं कुछ पढ़ना चाहती हूं, या किसी सरकारी योजना के बारे में जानना चाहती हूं तो मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को तलाशना पड़ता है जो मुझे उसे पढ़कर समझा दे। तब मैं स्वयं को बहुत तुच्छ महसूस करती हूं।" स्वयं अपने अनुभव से सीखते हुए, अब उसने अपने जीवन का यह ध्येय बना लिया है कि अपने दोनों बच्चों को वह यथासंभव अच्छी से अच्छी शिक्षा देगी, चाहे उसके लिए उसे कितना भी त्याग क्यों न करना पड़े।[130]

**न्याय**

अध्ययन के प्रतिभागियों ने इस बात पर जोर दिया कि जबतक समुदाय में एक स्तर तक न्याय की स्थापना नहीं हो जाती तबतक एकता की स्थापना आसान नहीं होगी। एक व्यक्ति ने यह टिप्पणी की कि किसी भी समुदाय में एकता बहाल करने के लिए, हर किसी के लिए कुछ बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना आवश्यक है। अगर आप 50 घरों पर केवल एक नल की व्यवस्था करेंगे – मान लीजिए कि अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए दो लोग पानी भरना चाहते हैं और उन्हें पता है कि पानी की आपूर्ति थोड़ी ही देर बाद बंद हो जाएगी – तो स्पष्ट है कि वे खिन्न होकर अपनी आवाज उठाना और लड़ना आरंभ कर देंगे। अगर आपके परिवार के जीवन के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती तो आप शांति के बारे में नहीं सोच सकते। इसी तरह, अगर लोगों के रहने के लिए पर्याप्त जगह नहीं होगी तो भी लोग आपस में लड़ेंगे। ज्यादतर मामलों में,

[130] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*

अंतर्निहित तथ्य यह है कि लोगों के जी सकने के लिए बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। लोग एकता के सूत्र में बंध सकें इसके लिए हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि कम से कम उनकी मूल आवश्यकताओं को पूरा किया जाए।[131]

इस निवासी ने इस बात का उल्लेख किया कि न्यायपूर्ण स्थितियों को बहल किए बिना, एकता की हमेशा अग्नि-परीक्षा होती रहती है।[132] सौहार्द बनाए रखने के लिए पानी के संवितरण की न्यायोचित व्यवस्थाओं के होने का महत्व पानी के घोर संकट के दिनों में ज्यादा स्पष्ट हो जाता था। कुछ निवासियों ने इस बात का उल्लेख किया कि हालांकि समुदाय अन्य मुद्दों पर नहीं झगड़ता लेकिन पानी की आपूर्ति की समस्या कई बार तनाव उत्पन्न कर सकती है:

जब आप हताश हो जाते हैं और आपको पता होता है कि आपका पूरा परिवार आपके द्वारा एक बाल्टी पानी भरकर लाने पर निर्भर है और आप कहीं और से पानी लाने के लिए चलकर पांच किलोमीटर नहीं जा सकते तो आप शांति और चैन से नहीं रह सकते। हम निराश हो जाते हैं और इसलिए कई बार हमें आवाज उठानी पड़ती है। लेकिन हम समझते हैं क्योंकि हर किसी की वही समान परिस्थिति है। यहां हर कोई गरीब है।[133]

[131] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*
[132] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*
[133] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 17 जुलाई2018*

हालांकि कई बार पानी की हिस्सेदारी को लेकर बहसें हो जाया करती हैं लेकिन निवासियों का विचार यह था कि आम तौर पर यह अस्थायी और सतही होती हैं, और अंतर्निहित सम्बंध नहीं टूटते।

पड़ोसों के दायरे में जातीय एवं लैंगिक सम्बंधों का पर्यवेक्षण किए बिना, इन बस्तियों में एकता के बंधन को मजबूत करने में न्याय की भूमिका पर चर्चा अधूरी रहेगी। इन अनियमित बस्तियों में हिंदू निवासियों के रूप में पहचाने जाने वाले लोगों में से अधिकांश जातियों और जनजातीय समूहों के थे जिन्हें जाति पदानुक्रम के सबसे निचले पायदान पर माना जाता था। उन्होंने अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक, धार्मिक और कलात्मक विरासत को बनाए रखा। निवासियों ने अक्सर इस बात पर जोर दिया कि जाति उनके सामाजिक सम्पर्क में कोई बाधा नहीं बनती और शोध-दल ने भी देखा कि उनके बीच अंतर्जातीय मैत्री एवं उत्साह और सौहार्द से भरा व्यवहार होता है।[134] इसके बावजूद, निवासी अपनी जाति-आधारित और आदिवासी पहचान के प्रति काफी सजग थे और कुछ मामलों में कुछ समूहों [से मेलजोल] के बारे में एक कलंक की भावना प्रतीत होती थी। उदाहरण के लिए, कबूतर खाना में नदी के किनारे बसे घरों का एक समूह जाति पदानुक्रम में निम्न जाति के घरों से सम्बंधित था क्योंकि उनका जातिगत पेशा हाथ से मैला साफ करने का था। उनके घर दूसरे घरों से अलग बस्ती के एक छोर पर थे। शोध दल ने इस जाति समूह के लोगों को अन्य निवासियों के साथ सौहार्दपूर्ण ढंग से बातचीत करते हुए देखा। फिर भी, हालांकि निवासियों ने इस समूह के साथ भेदभाव न करने की बात कही, लेकिन इस समूह से

[134] *कबूतरखाना का एक भ्रमण, 11 जून 2018; उत्तरी तोडा का एक भ्रमण, 21 जुलाई 2018*

जुड़े कलंक निवासियों के विचारों और शब्दों में स्पष्ट रूप से स्पष्ट थे। इस जाति समूह के सदस्यों की पहचान प्रथमिक रूप से उनकी जातिगत पहचान से की जाती थी। उन्हें 'भंगी' कहकर बुलाया जाता था – वह शब्द जिसका प्रयोग भारत में उच्च जाति के लोगों द्वारा अछूत जातियों को संकेतित करने के लिए किया जाता है। जब पड़ोस के कुछ निवासी सभी पृष्ठभूमि के लोगों की मदद करने के लिए अपने खुलेपन पर जोर देना चाहते थे तो वे टिप्पणी करते थे कि भले ही कुछ निवासी इस जाति समूह के थे, फिर भी वे उनकी मदद करेंगे और उनके साथ अभिक्रिया करेंगे।[135] हालांकि ऐसे बयान भेदभाव को दूर करने की उत्सुकता पर जोर देते थे किंतु वे विशेष जाति की पहचान से संबंधित पूर्वाग्रहपूर्ण धारणाओं से भरे हुए प्रतीत होते हैं। ऐसा लगता है कि वे यह कहना चाह रहे थे कि जातिगत पहचान के बावजूद उनका आपस में व्यवहार रहता था लेकिन उसमें जातिगत आधार को नकारने की बात शामिल नहीं था। इस तरह की टिप्पणियां इस तथ्य को प्रतिबिंबित करती हैं कि यद्यपि एकता की भावना ने यह सुनिश्चित किया कि पड़ोस में सभी पृष्ठभूमि के लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण और मैत्रीपूर्ण सम्बंध बनाए रखा जाए, लेकिन कुछ मामलों में उनके साथ जुड़े जाति-आधारित पूर्वाग्रहों पर पर्याप्त रूप से सवाल नहीं उठाया गया या उन्हें दूर नहीं किया गया।

एक अन्य क्षेत्र जहां इन पड़ोसों में मानवजाति की एकता के सिद्धांत से सम्बंधित चेतना और क्रियाशीलता को स्पष्ट रूप से संवर्द्धित करने की जरूरत है, वह है लैंगिक समझ। स्त्री-पुरुष की समानता मानवजाति की एकता के निहितार्थों में से एक है। फिर भी व्यक्तिगत

[135] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 11 जून 2018; उत्तरी तोड़ा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

संबंधों और सामाजिक-आर्थिक जीवन में इस सिद्धान्त को अभिव्यक्त करना एक जटिल और कठिन चुनौती साबित हुई है।

इन पड़ोसों में महिलाओं को परिवारों और समुदाय के दायरे में मुख्य रूप से पारम्परिक भूमिका निभाते देखा गया था। सामान्य तौर पर, उन्हें दोहरा बोझ उठाना पड़ता था – परिवार को सहारा देने के लिए मजदूरी के काम करना और साथ ही घर-परिवार की देखभाल का पूरा दायित्व अपने सिर पर लेना। इन समुदायों में, मुख्य रूप से वे स्त्रियां ही हैं जो पानी के अभाव के संकट से सबसे ज्यादा प्रभावित हैं। पानी के लिए उन्हें दूर-दूर तक की यात्राएं करने या लंबी कतारों में घंटों खड़े रहने के लिए बाध्य होना पड़ता है। इस कारण उनके पास स्कूल जाने, बच्चों की देखभाल या आय-सृजन सम्बंधी क्रियाकलापों में भाग ले पाने के लिए ज्यादा समय नहीं मिल पाता।[136] इन पड़ोसों में पुरुषों के बीच शराब की लत बहुत ही व्यापक और प्रबल थी जिससे स्त्रियों और बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक कल्याण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता था।[137]

उत्तरी तोडा में किराने की एक छोटी-सी दुकान चलाने वाली एक महिला ने समझाया कि पड़ोस की महिलाएं इस बात को लेकर बहुत खिन्न थीं कि उनके पति उनकी दैनिक मजदूरी से पड़ोस के मुख्य द्वार पर स्थित शराब की एक दुकान से शराब खरीदा करते थे। उसने कहा कि एक बार माइक्रो-क्रेडिट समूह के रूप में संगठित पड़ोस की कुछ महिलाओं ने शराब की दुकान के सामने विरोध प्रदर्शन भी

---

[136] *कबूतरखाना का एक भ्रमण, 13 अगस्त 2018; कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018; उत्तरी तोडा का भ्रमण, 8 अगस्त 2018*

[137] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*

किया और उसे बंद किए जाने या पड़ोस से हटाए जाने की मांग की। उसने कहा कि "हमें शराब पीने के कारण जिन दिक्कतों का सामना करना पड़ता है उनके बारे में हमने जागरूकता फैलाने का प्रयास किया। दुकान बंद करने या उसे वहां से हटाने के लिए, दुकानदार पर दबाव बनाने के लिए हमने हर संभव कोशिश की। लेकिन हम उसे बंद नहीं करा सके।"[138] वह दुकान अभी भी उसी जगह पर है और शाम के वक्त वहां आम तौर पर ग्राहकों की भीड़ लगी ही रहती है।

इस मुद्दे ने इस तरह के पास-पड़ोस के क्षेत्रों में महिलाओं के समक्ष खड़ी चुनौतियों पर विजय पाने में जटिलता को उजागर किया। इसके लिए न केवल प्रवृत्ति अर समाज की आर्थिक संरचना में बदलाव की जरूरत थी बल्कि शराबख़ोरी जैसी विकृतियों पर रोक लगाने के लिए कानून की भी – खास तौर पर शहरी अनियमित बस्तियों में रहने वाले लोगों के बीच जो शराब के विनाशकारी प्रभावों के प्रति ज्यादा असुरक्षित होते हैं। उस महिला द्वारा सुनाए गए इस वृतान्त से ऐसी बस्तियों में रहने वाले निवासियों द्वारा स्वयं को सुसंगठित करके सबके कल्याण हेतु अपनी शक्तियों को क्रियाशील करने के लिए कदम उठाने की उनकी क्षमता भी उजागर होती है। हालांकि शराब के सेवन को रोकने के लिए उन खास महिलाओं द्वारा किए गए हस्तक्षेप से वांछित परिणाम नहीं मिल सका लेकिन उससे पड़ोस की महिलाओं द्वारा परिवर्तन के लिए सार्थक पहल करने की क्षमता की झलक जरूर मिलती है।

[138] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 अगस्त 2018*

**संघर्ष का समाधान**

पड़ोसी क्षेत्रों में खास तौर पर गर्मियों के मौसम में पानी की किल्लत के कारण कई बार गली के एक छोर पर लगे साझा नल से पानी भरने के लिए एकत्रित हुए निवासियों के बीच आपस में बहसें और गर्मागर्म विवाद हो जाया करते थे। पानी के कारण हुए ऐसे ही एक झगड़े के तुरन्त बाद शोध-दल ने उत्तरी तोडा की एक गली का दौरा किया। उस गली में रहने वाली एक महिला ने, जो कि अपने घर से ही संचालित एक खाद्य-वस्तु की कैटरिंग का छोटा-सा धंधा चलाया करती थी, इस बात का उल्लेख किया कि गर्मियों के दिनों में इस तरह के विवादों का होना सामान्य था क्योंकि उस समय पानी की कमी से जूझना पड़ता है। उसने बताया कि उसकी गली एक सीधी चढ़ाई वाले हिस्से में थी और निवासियों के लिए दो साझा नल थे – एक उस ढलान के निचले छोर पर रहने वाले लोगों के लिए और दूसरा ऊपरी छोर पर रहने वाले लोगों के लिए। चूंकि गर्मियों के महीनों में पानी कम दबाव से आता था इसलिए ऊपरी छोर के लोगों वाले नल में पानी नहीं आ पाता था और इसलिए वहां रहने वाले लोगों को निचले छोर पर रहने वाले लोगों के लिए निर्धारित नल से पानी भरने के लिए बाध्य होना पड़ता था। उसने कहा कि "चूंकि पानी बहुत कम देर के लिए आता है और बहुत से लोग पानी भरना चाहते हैं, इसलिए निस्संदेह कोई न कोई कुछ बोल देता है जिससे गुस्सा भड़क जाता है।" मगर उसने इस बात पर भी जोर दिया कि इस तरह के विवाद क्षणिक हुआ करते हैं और झगड़ा करने वाले लोग जल्द ही अपने दिली रिश्ते की दुनिया में वापस लौट आते थे। उसने टिप्पणी की, "हम एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। हमें पता है कि जब लोग चिल्लाते हैं या गुस्सा होते हैं तो वह इसलिए

क्योंकि वे हताश हो जाते हैं। ऐसी बातों को हम दिल में नहीं लेते।"[139]

गली के ऊपरी सिरे पर स्थित अपने घरों से बाहर बैठी महिलाओं ने बताया कि कई बार पानी को लेकर झगड़े इसलिए भी हो जाते हैं क्योंकि वहां रहने वाला एक आदमी बड़ा गुस्सैल है और कठोर वाणी बोलता है। समूह में बैठी एक महिला ने कहा कि "ऐसे वक्त हम इस बात को समझते हैं कि यह उस खास आदमी का स्वभाव है। हम उसकी सीमाओं को स्थान देते हैं और वह जो भी कहता है उसे अनसुना कर देते हैं। शांति बनाए रखने के लिए यह जरूरी है।"[140]

पानी के अभाव की स्थिति में, साझा नल से पानी के उपयोग को समन्वित करने के लिए किसी न किसी प्रकार की संरचना कायम कर लेने से संघर्ष के समाधान और समुदाय में एकता बनाए रखने में मदद मिलती थी। प्रत्येक पड़ोस में, अलग-अलग अनेक लोग या समूह पानी भरने के काम में व्यवस्था और संयोजन बनाने में मदद देते थे। अपनी सेवा की भावना के कारण उन्हें निवासियों का विश्वास और आदर प्राप्त था और औपचारिक रूप से किसी पद पर न रहते हुए भी वे समुदाय में नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम थे। पड़ोस में पानी की समस्या को लेकर शांतिपूर्ण संयोजन बनाए रखने के मूल्य के प्रति सजग, इन निवासियों ने ऐसे कई तरीकों को रेखांकित किया जिनके माध्यम से उन्होंने संघर्ष के समाधान के लिए एक-दूसरे की अंतर्निहित अच्छाई में भरोसा रखना सीखा था। उदाहरण के लिए, एक साझा नल पर दो व्यक्तियों द्वारा पानी भरे जाने के

[139] *उत्तरी तोडा में रहने वाली महिलाओं से साक्षात्कार, 27 अगस्त 2018*

[140] *उत्तरी तोडा में रहने वाली महिलाओं से साक्षात्कार, 27 अगस्त 2018*

परिदृश्य का वर्णन किया। यदि पहले व्यक्ति ने चार बाल्टी पानी भर लिया है और दूसरा व्यक्ति अपनी बाल्टियां भर सके इससे पहले ही पानी की आपूर्ति बंद हो गई हो तो यह उम्मीद की जाती है कि जिस पहले व्यक्ति ने पानी भर लिया था वह उस व्यक्ति के साथ थोड़ा पानी साझा करेगा जिसे पानी भरने का मौका नहीं मिला था।

यदि वह व्यक्ति स्वार्थी है और उसे केवल अपनी ही जरूरत की चिंता है तो हम उसके साथ कैसा व्यवहार करेंगे? हम सामंजस्य बिठा लेते हैं। आज न तो कल वह आत्म-केन्द्रित व्यक्ति जरूर सुधरेगा। क्यों? क्योंकि हम उसके साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करते हैं, उसकी मदद करते हैं और कहते हैं, 'आगे आओ भाई, और थोड़ा पानी ले लो।' वह भी तो इन्सान ही है, इसलिए हम उससे प्यार से पेश आते हैं। आज नहीं तो कल वह सकारात्मक जवाब देगा। हम सब साथ रहते हैं और यहां कुछ भी 'मेरा' या 'तेरा' नहीं है। हम साथ रहते हैं। उसकी शादी हमारी आंखों के सामने हुई थी। हम एक-दूसरे को समझते हैं। हम अपना भी सम्मान करते हैं और उनका भी।[141]

संघर्षपूर्ण प्रवृत्ति में बदलाव का एक उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति से मिला जो पेशेवर रूप से 'ढोलक' (खास तौर पर धार्मिक त्योहारों या उत्सवों के समय दोनों हाथ से बजाया जाने वाला भारतीय ड्रम) बजाता है। उसने अपने पड़ोसी के साथ घटी एक घटना का वृतान्त सुनाया:

बीते हुए समय में, सामुदायिक बोरवेल की चाबी मेरे ही पास रहा करती थी और मैं उसे आसानी से किसी को भी नहीं देता था। मैं

[141] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 22 अप्रैल 2018*

मुख्य रूप से उसका उपयोग अपने परिवार और अपने कुछ पड़ोसियों के लिए किया करता था। एक बार [मेरा एक पड़ोसी] मुझसे चाबी मांगने आया और बार-बार निवेदन करने पर भी मैंने उसे चाबी देने से इन्कार कर दिया। वह पुलिस के पास चला गया। पुलिस इंस्पेक्टर ने मुझसे पूछा कि क्या यह मेरा निजी बोरवेल है और मैंने कहा "नहीं"। फिर उसने वह चाबी उसे [मेरे पड़ोसी] को दे दी और तब से वह उसी के पास है। लेकिन मैंने गौर किया कि [मेरा पड़ोसी] वह चाबी सबके साथ साझा करता, मेरे साथ भी। उसके इस व्यवहार ने मेरा हृदय-परिवर्तन कर दिया।[142]

वर्तमान समय में, ये दोनों ही व्यक्ति उन बीस मित्रों की एक टोली में शामिल हैं जो पड़ोस में सेवा के अनेक क्रियाकलापों से जुड़े हैं, जैसे कि विवादों का निराकरण, बच्चों को शिक्षित करने के लिए माता-पिताओं को प्रोत्साहित करना, और युवाओं एवं वयस्कों को शराब की लत छोड़ने में सहायता देना।

लोगों के बीच एकता की प्रकृति के बारे में गंभीर रूप से विचार करने के क्रम में, निवासियों ने टिप्पणी की कि सबसे टिकाऊ और गहन बंधन है आध्यात्मिक बंधन। जैसा कि 'योगी' ने कहा, "हमारा नैतिक कर्तव्य है आत्माओं को एक-दूसरे के निकट लाना" और वो भी इस तरह कि भौतिक बिछोह "हमारे बीच व्याप्त आध्यात्मिक बंधन को न तोड़ सके।"[143] तदुपरांत, एकता के बारे में चर्चा करते हुए, निवासियों ने बार-बार उसे बनाए रखने की अपनी अभिप्रेरणा का उल्लेख किया। हालांकि एकजुट रहने के अपने स्पष्ट व्यावहारिक

[142] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 8 जून 2018*

[143] *योगी से साक्षात्कार, 28 जून 2018*

लाभ हैं, लेकिन निवासियों ने एकता के सूत्र में बंधने की अपनी अभिप्रेरणा के लिए उन लाभों का कोई हवाला नहीं दिया। उन्होंने एकता को केवल टकराव न होना नहीं बताया बल्कि उन्होंने कहा कि एकता अस्तित्व की एक अवस्था है जो समग्र समुदाय की आवश्यकताओं के पूरा हो जाने पर हृदय में आनंद का संचार करती है। आनन्द की यह स्थिति ही उन्हें अभिप्रेरित करती थी।

## 2. मनुष्य और प्राकृतिक विश्व के बीच सम्बंध

इस शोध-अध्ययन की दूसरी मूल विषयवस्तु के अंतर्गत यह समझने का प्रयत्न किया गया कि इन पड़ोसों में निवास करने वाले लोग प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतर्सम्बंध के सिद्धान्त को कैसे समझते थे – खास तौर पर पानी के अभाव और बाढ़ जैसी सामान्य चुनौतियों के निवारण के लिए किए जाने वाले अपने प्रयासों के संदर्भ में। इस विषय पर पड़ोसियों द्वारा की गई अनेक टिप्पणियां सरस्वती और कान नदियों के संदर्भ में थीं जो उनके जीवन पर स्पष्ट रूप से प्रभाव डालती थीं। प्रकृति के साथ अपने अंतर्सम्बंध का वर्णन करते हुए, बहुत से निवासियों ने पानी को जीवन की एक व्यावहारिक आवश्यकता के रूप में वर्णित किया तथा अन्य लोगों ने अस्तित्व की एकता और अंतर्सम्बंधता के सिद्धान्त के बारे में मनन किया जिसका पानी एक प्रतीक है। कबूतरख़ाना के एक निवासी ने कहा, "जल जीवन है ... वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमृत है।"[144] नदी के किनारे रहने वाली तथा समुदाय की समस्याओं को सुलझाने में अपनी नेतृत्वशीलता के लिए विख्यात, उस क्षेत्र की एक अन्य निवासी ने पानी का वर्णन यह कहते हुए किया कि कहा कि "जल मनुष्य के

[144] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 12 जुलाई 2018*

लिए सर्वस्व है। जीवन का आरंभ जल से होता है और जल से ही उसका अंत होता है। जब आप सुबह में उठते हैं तो आपको पानी की जरूरत होती है और सोने से पहले भी आपको पानी चाहिए।"[145] उसके पास खड़ी एक अन्य महिला ने, जो सार्वजनिक नल से पानी भरने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी, कहा, "जब घर पर पानी रहता है तो घर भरा हुआ तथा सुरक्षित लगता है। जब पानी नहीं होता है तो हम घर में बहुत असुरक्षित महसूस करते हैं। ऐसा लगता है जैसे घर में पानी नहीं है तो कुछ भी नहीं है।"[146]

कबूतरख़ाना के एक निवासी ने याद किया कि पानी किस तरह एकता के सिद्धान्त को मूर्तिमान करता है: "वायु और अग्नि की तरह पानी को कभी खंडित या विभाजित नहीं किया जा सकता। बहता हुआ पानी ... यह नहीं जानता कि वह अब वह हिंदुस्तान में है या पाकिस्तान में। कोई भी उसे बांट नहीं सकता। यह ईश्वर का अनुदान है। यह जिससे बना है उससे स्वयं को कभी खंडित नहीं करता। ... एक कहावत के अनुसार, "पानी रे पानी, तेरा रंग कैसा? ... जिसमें मिला दो, लागे उसी जैसा! ... यह बिल्कुल सच है। आप पानी में लाल रंग डाल दें, वह लाल दिखेगा। उसमें हरा रंग मिला दें, वह हरा दिखेगा।!" [147] उत्तरी तोडा के एक निवासी ने इस बात पर भी जोर दिया कि "पानी कोई फ़र्क नहीं जानता। वह यह नहीं पूछता कि 'मैं किसका पानी हूं?' या यह कि 'मुझे कौन पी रहा है, कौन उपयोग में

[145] *नदी के किनारे पानी भरती हुई महिलाओं से साक्षात्कार, कबूतरखाना, 12 जुलाई 2018*

[146] *नदी के किनारे पानी भरती हुई महिलाओं से साक्षात्कार, कबूतरखाना, 12 जुलाई 2018*

[147] *सोशल मैपिंग, कबूतरखाना, 7 अगस्त 2018*

ला रहा है?' न पानी, न हवा, न आकाश और न ही वर्षा या धरती लोगों के बीच किसी भेदभाव पर ध्यान देती है। वह [पानी] कोई भेद नहीं करता – वह सबके लिए बहता है।"[148]

कुछ लोग जो आध्यात्मिक बोध से ज्यादा सम्पन्न थे उनके लिए प्रकृति के विभिन्न तत्वों के बीच का आपसी सम्बंध प्रेम और सेवा के गुणों के एक सुन्दर प्रतीक जैसा लगता है। प्रकृति के सभी घटकों के बीच प्रेम के आपसी बन्धन को ध्यान में लाते हुए. उत्तरी तोडा में रहने वाली एक दादी ने कहा, "हर वस्तु सतत रूप से प्रेम को अभिव्यक्त कर रही है – चाहे वे पेड़-पौधे हों ... या पत्थर ... इसके बारे में जरा सोचो: हम जिस तरह एक पौधा रोपते हैं और फिर रोज उसमें पानी पटाते हैं तो क्या इससे हम उस पौधे के प्रति अपना प्रेम नहीं प्रकट कर रहे होते? और फिर बाद में, अपने फूलों और फलों का दान करके क्या पौधा भी हम पर अपना प्रेम नहीं उड़ेलता?"[149]

जब इस अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों ने मनुष्य और प्रकृति के बीच के सम्बंध पर चर्चा की तो अक्सर अस्तित्व की विभिन्न वस्तुओं के एक-दूसरे से जुड़ाव तथा मनुष्य एवं प्राकृतिक जगत के बीच सम्मानपूर्ण एवं पारस्परिक सम्बंध की आवश्यकता का उल्लेख किया गया। उत्तरी तोडा में रहने वाले एक सेल्समैन ने पेड़ों के साथ हमारे सम्बंध के परिप्रेक्ष्य में इस पारस्परिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा: "वे जो सांस में छोड़ते हैं (ऑक्सीजन) उसे हम सांस में ग्रहण करते हैं, और हम सांस से जो छोड़ते हैं उसका वे अवशोषण करते हैं। हम उनके बिना कैसे जीवित रह सकते हैं? पेड़-पौधे, हवा और जल

[148] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 28 जून 2018*

[149] *उत्तरी तोडा के निवासियों से साक्षात्कार, 21 जुलाई 2018*

हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।"[150] अपने विचार-विमर्श के दौरान, दोनों ही पड़ोसों के निवासियों ने यह टिप्पणी की कि जीवन-श्रृंखला में मानव कोई निष्क्रिय कड़ी नहीं है – प्रकृति के संतुलन में रुझान लाने की क्षमता के साथ, जिसके कारण अक्सर प्रतिकूल प्रभाव झेलने पड़ते हैं, मनुष्य को प्रकृति के ऊपर असाधारण शक्ति हासिल है।

प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के संदर्भ में निवासियों ने कुछ मार्गदर्शक सिद्धान्तों को रेखांकित किया। बहुत से लोगों ने इस बात की ओर संकेत दिया कि वास्तविक आवश्यकताओं और असीमित लालसाओं में अंतर होता है। कबूतरख़ाना में रहने वाले मुल्ला ने इस पर प्रकाश डालते हुए कहा, "क़ुरान में कहा गया है सभी वस्तुओं को हमारे ही लाभ के लिए रचा गया है। पेड़-पौधे, जीव-जंतु, पानी – सृष्टि की ये सभी वस्तुएं हमारे उपयोग और हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हैं।"[151] किंतु, उसने आगे कहा कि क़ुरान हमें सावधान भी करता है कि जब मनुष्य लालसाओं से प्रेरित हो जाता है तो वह फ़िज़ूलखर्ची करने लगता है: "फ़िज़ूलखर्ची पाप है। उसका निषेध किया गया है। वह हमें उसके कारण संसार तथा दूसरों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति असावधान बना देती है।"[152] इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए, कबूतरख़ाना में रहने वाले एक वयोवृद्ध शिल्पकार ने जल के संदर्भ में निम्नांकित बात कही: "यह पानी हमारा है कि अल्लाह का? यह अल्लाह का है। पानी अल्लाह की देन है। हर चीज उसी की है। हमारा कुछ भी नहीं है। पानी की हर बूंद अल्लाह की है

[150] *कबूतरख़ाना के निवासियों से साक्षात्कार, 23 अगस्त 2018*

[151] *कबूतरख़ाना में रहने वाले मुल्ला से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

[152] *कबूतरख़ाना में रहने वाले मुल्ला से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

और अगर हम पानी को बर्बाद करेंगे तो इसके लिए हमें अल्लाह के सामने जिम्मेदार होना होगा।"[153]

प्राकृतिक संसाधनों के बारे में चर्चा करते हुए, अनेक प्रतिभागियों ने इन संसाधनों के उन अंतर्निहित मूल्यों का हवाला दिया जो प्राकृतिक जगत के दायरे से कहीं आगे एक अकल्पनीय आध्यात्मिक यथार्थ से जुड़े हुए हैं। बहुत से लोग प्रकृति के बारे में इस संदर्भ में बात करते हैं कि वह एक ऐसी वस्तु है जिसका सम्मान किया जाना चाहिए, जो अपने सृजनकर्ता परमात्मा की भव्यता, गरिमा, सुन्दरता और पूर्णता का प्रतीक है और जो दिव्य गुणों अथवा साक्षात दिव्यता का प्रकट रूप है। उत्तरी तोडा में रहने वाले एक हिंदू पंडित ने कहा कि हिंदू धर्मग्रंथों में प्रकृति को पवित्र माना गया है और उसका सम्बंध भगवान शिव की अर्द्धांगिनी, पार्वती, से जोड़ा गया है। उसने कहा कि "प्रकृति को स्वच्छ एवं निर्मल बनाए रखना हमारा दायित्व है।"[154] वहीं दूसरी ओर, कबूतरख़ाना के एक निवासी ने कहा कि "पेड़, पौधे, पहाड़ ... हर छोटी से छोटी वस्तु, हर ज़र्रा, पेड़ का हर पत्ता ... यह सब कुछ परमेश्वर की मर्ज़ी से मौजूद है और वे हमें आशीर्वादित करते हैं। अतः उन्हें नुकसान पहुंचाना बहुत बड़ा अपराध है। इसलिए, हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।"[155]

### अ. समुदाय: पर्यावरण के न्यासियों के रूप में

जब निवासियों ने प्रकृति के साथ मनुष्य के साथ सम्बंध के बारे में अपने विचार प्रकट किए तो एक मुख्य अवधारणा जो उभर कर

---

[153] *कबूतरख़ाना में रहने वाले एक शिल्पकार से साक्षात्कार, 22 अप्रैल 2018*

[154] *उत्तरी तोडा में रहने वाले एक पंडित से साक्षात्कार, 16 अगस्त 2018*

[155] *रीसायकिल्ड वस्तुओं के एक डीलर से साक्षात्कार, कबूतरख़ाना, 2 जून 2018*

सामने आई वह थी 'न्यासिता' (ट्रस्टीशिप)। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्राकृतिक जगत एक न्यास है और मनुष्य उसके संरक्षण के लिए उत्तरदायी है। कबूतरख़ाना के एक निवासी के शब्दों में, "प्रकृति सिर्फ हमारे उपयोग के लिए नहीं है; हमें उसका संरक्षण और अलंकरण भी करना है। वह हमें एक न्यास के रूप में प्राप्त हुई है। वह हमारे परिवार की सम्पत्ति नहीं है। हम उसे स्वच्छ और शुद्ध बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। जब आप पेड़-पौधों का ध्यान रखते हैं तो आप समस्त जीवन का आधार उपलब्ध कराते हैं।"[156] न्यासिता (ट्रस्टीशिप) के विचार पर और अधिक विस्तार से प्रकाश डालते हुए, अध्ययन के प्रतिभागियों ने टिप्पणी की कि कोई भी व्यक्ति पानी जैसे प्राकृतिक संसाधन पर मालिकाना हक़ का दावा नहीं कर सकता। यह सम्पूर्ण मानवजाति की विरासत है।

"हमारे धर्मग्रंथों में बंधुत्व की अवधारणा का अर्थ यह है कि अगर आपके पास जल है और समुदाय में अन्य किसी व्यक्ति के पास जल न होने के कारण उसे दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है तो उसके साथ जल साझा करना आपका कर्तव्य है।"[157] कबूतरख़ाना में रहने वाले गद्दे (मैट्रेस) के एक व्यापारी ने इस विषय पर और अधिक विस्तार से प्रकाश डाला: "[इसके पीछे] अवधारणा यह है कि केवल मेरा नहीं बल्कि प्रत्येक का कल्याण होना चाहिए। अगर कोई व्यक्ति उदास है तो उसकी मदद के लिए हर किसी को उठ खड़ा होना चाहिए। अगर किसी को पानी [के अभाव] के कारण समस्या है

[156] *कबूतरख़ाना में मैट्रेस (गद्दे) के एक व्यवसायी से साक्षात्कार, 26 जून 2018*
[157] *कबूतरख़ाना में मैट्रेस (गद्दे) के एक व्यवसायी से साक्षात्कार, 26 जून 2018*

तो इस्लाम की शिक्षा यह है कि आपको उसकी मदद जरूर करनी चाहिए।"[158]

अध्ययन में शामिल प्रतिभागियों ने इस बात को रेखांकित किया कि हालांकि यह शिक्षा व्यापक रूप से दी गई है और लोग इसे समझते भी हैं लेकिन इन पड़ोसों में उसे हमेशा व्यवहार में नहीं लाया जाता। उत्तरी तोडा में रहने वाले एक युवा ने पानी के उपयोग के संदर्भ में अनेक निवासियों के स्वार्थपूर्ण व्यवहार और उनकी अल्पदर्शिता के बारे में अपनी चिंता प्रकट की। "जो लोग केवल अपने लिए पानी के बारे में सोचते हैं, वे यह सोचते हैं कि यदि उन्हें वह [पानी] मिल गया तो इतना ही पर्याप्त है। 'कल कम से कम हमें पानी मिल जाए', वे ऐसा सोचते हैं। वे समुदाय के बारे में नहीं सोचते या इस बारे में कि भविष्य में क्या होगा। उनके लिए इतना ही पर्याप्त है कि उनके घर के सामने [पानी की] पाइप लगी हुई है और आज उन्हें थोड़ा [पानी] मिल जाएगा।"[159]

निवासियों ने इस बात पर भी जोर दिया कि न्यासिता के सिद्धान्त में निहित सामाजिक कर्तव्य समय और स्थान के दायरे से कहीं आगे जाते हैं। जल और वायु प्रदूषण का प्रभाव किसी खास पड़ोस तक ही सीमित नहीं रह सकता। इसी तरह, वर्तमान समय के लोग प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के सम्बंध में जो निर्णय लेते हैं उसका भावी पीढ़ी के कल्याण पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा। जो लोग वर्तमान समय में जी रहे हैं उनका यह भी कर्तव्य है कि वे आने वाली पीढ़ियों के बारे में भी परवाह करें और उनके लिए एक प्रदूषित

[158] *उत्तरी तोडा में रहने वाले एक युवा से साक्षात्कार, 6 जून 2018*
[159] *उत्तरी तोडा में रहने वाले एक युवा से साक्षात्कार, 6 जून 2018*

और खाली प्राकृतिक संसार छोड़कर न जाएं। उत्तरी तोडा के एक युवा ने यह बात साझा की: "आज हम जितना ज्यादा पानी बचाएंगे, आने वाली पीढ़ी को उतना ही ज्यादा लाभ मिलेगा। ... हमें [आने वाली पीढ़ी के बारे में परवाह] करनी ही होगी। यदि हम बर्बाद करेंगे तो पानी बचेगा ही नहीं। और फिर उसके बाद पानी में प्रदूषण भी कितना है। यदि पानी खत्म हो जाएगा तो वे [अगली पीढ़ी के लोग] क्या करेंगे?"[160]

प्रकृति को समझने के इस तौर-तरीके के पीछे यह अभिज्ञान छिपा हुआ है कि प्रकृति का अपना एक अंतर्निहित मूल्य है जिसपर उपभोक्तावाद का आवरण नहीं चढ़ाया जा सकता। जैसाकि एक निवासी ने कहा, "पानी – यह बड़ा अनमोल है! इसकी कोई कीमत नहीं, इसे बेचा नहीं जा सकता।" किसी भी संसाधन के मूल्य को उसकी भौतिक कीमत से मापे जाने, और जिन संसाधनों को खरीदा या बेचा नहीं जाता उन्हें मूल्यहीन समझने की प्रचलित प्रवृत्ति पर प्रश्न उठाते हुए उसने कहा: "क्या हम अपने घरों में सब्ज़ियों को बर्बाद करते हैं, या हम उस आटे को बर्बाद करते हैं जिससे हम रोटी बनाते हैं? नहीं न! तो फिर हमें ऐसा क्यों लगता है कि हम पानी को बर्बाद कर सकते हैं?"[161]

### आ. सीमित जल संसाधन तक पहुंच को साझा करना

जैसी कि पूर्व में चर्चा की जा चुकी है, पानी तक सीमित पहुंच प्राप्त होने और सेवा की भावना से प्रेरित, इन दोनों ही समुदायों के

[160] *कबूतरखाना के निवासियों से साक्षात्कार, 26 जून 2018*
[161] *उपरोक्त*

निवासियों ने एक-दूसरे के साथ पानी साझा करने के कई तरीके ढूंढ़ निकाले।

कबूतरख़ाना में पानी का एक मुख्य स्रोत जिसपर समुदाय के लोग निर्भर रहते थे, जूते के एक गोदाम में स्थित एक निजी कुआं था। इन्दौर के होलकर राजाओं के समय से चला आ रहा यह 100 वर्ष से भी ज्यादा पुराना कुआं तब से अस्तित्व में था जब वहां जूते का यह गोदाम भी नहीं बना था। वह पानी का स्रोत बना रहा। गोदाम का मालिक, जो कि कबूतरख़ाना के पास के बाजार में जूतों का कारोबारी था, सहानुभूति के तौर पर अपने कुएं से पड़ोस के लोगों को पानी दिया करता था। इसके लिए उस कुएं के पानी को पम्प के माध्यम से गोदाम की छत पर रखी एक टैंक में पहुंचाया जाता था। घरों में पानी पहुंचाने के लिए, वितरण की एक अनौपचारिक प्रणाली स्थापित की गई थी जिसमें प्लास्टिक की सस्ती पाइपों के माध्यम से लोगों के दरवाजों और खिड़कियों से होते हुए पड़ोस के कोने-कोने तक पानी पहुंचाया जाता था। हालांकि पानी खारा था लेकिन फिर भी उससे निवासियों की सफाई-धुलाई और स्नान जैसी जरूरतें पूरी हो जाती थीं। अपने कुएं से समुदाय के लोगों के साथ पानी साझा करने के पीछे अपनी प्रेरणा के बारे में बोलते हुए, गोदाम के मालिक ने कहा कि "मुझे लगता है कि यहां के लोग भी मेरी ही तरह इन्सान हैं। उन्हें भी पानी की जरूरत है ... पानी की अपनी जरूरत को पूरा करने वे और कहां जाएंगे? हम हर किसी तक त नहीं पहुंच सकते लेकिन हमसे जितना हो सकता है, हम दूसरों को लाभ पहुंचाने की कोशिश जरूर करते हैं।"[162]

[162] *गोदाम के मालिक से साक्षात्कार, 21 जून 2018*

इस कुएं से हर रोज एक घंटे के लिए पूरे मोहल्ले को पानी उपलब्ध कराया जाता था। नदी के किनारे रहने वाली और आस-पड़ोस में पानी के वितरण के कार्य में समन्वय स्थापित करने में मदद करने वाली एक महिला ने चर्चा की कि पानी के वितरण के कार्य को वहां के निवासियों द्वारा कैसे पूरा किया जाता है, जो अपने उद्देश्यों के लिए इसका उपयोग करते हुए, दूसरों की जरूरतों के प्रति भी सजग रहने का प्रयास करते हैं। कुर्सी पर बैठकर एक पाइप को पकड़े हुए, और लंबी कतार में लगी महिलाओं की बाल्टियों को एक-एक करके गोदाम के कुएँ से पानी भरते हुए, उस महिला ने कहा: "यहां देखिए, आप खुद देख सकते हैं कि कैसे महिलाएं पानी भरने में एक-दूसरे की मदद करती हैं। वे घर-घर जाकर दूसरे परिवारों को पानी भरकर ले जाने की याद दिलाते हैं। मदद की इस भावना के कारण यह गर्मी बिना किसी कठिनाई के हमारे लिए काफी अच्छी रही।"[163]

यह अध्ययन जिन दो सिद्धान्तों पर केन्द्रित था -- मानवजाति की एकता और प्रकृति के साथ अंतर्सम्बंध – उनमें से प्रतिभागियों के पास पहले सिद्धांत के बारे में साझा करने के लिए काफी कुछ था। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। एक कारण तो यह हो सकता है कि पड़ोसियों के बीच के आपसी सम्बंध जीवन के हर पहलू को प्रभावित करते हैं जिसमें निवासियों का प्रकृति के साथ सम्बंध भी शामिल है। अतः, प्रकृति से सम्बंधित कई सवालों के जवाब अन्य लोगों या संस्थानों के साथ निवासियों के आपसी सम्बंधों के बारे में टिप्पणियों के साथ दिए गए थे। बस्तियों में पर्यावरण के ह्रास के संदर्भ में भी प्रतिक्रियाएं दी गईं, जैसे कि नदी का प्रदूषण और नगर

[163] *पानी भरती हुई महिलाओं से साक्षात्कार, कबूतरखाना, 12 जुलाई 2018*

का विस्तार जिसके कारण कंक्रीट के जंगलों से परे प्रकृति की सुन्दरता और विशालता को देखना मुश्किल हो गया था। उत्तरी टोडा में अपने घर से ही खान-पान का एक छोटा सा व्यवसाय चलाने वाली एक मां प्रकृति से जुड़े रहने के प्रयास में अपने और अपने साथी निवासियों के संघर्ष को इन शब्दों में बयान करती है: "पेड़ काटे जा रहे हैं और हर जगह [जमीन] को सीमेंट से पक्का किया जा रहा है। हमारे आसपास कोई पेड़-पौधे नहीं हैं। साथ ही, पानी पृथ्वी में रिस नहीं सकता। ... वर्षा का पानी बहकर बर्बाद हो जाता है।"[164] एक अन्य निवासी ने इस बात का उल्लेख किया कि हालांकि वे अपने आस-पास के प्राकृतिक वातावरण को बेहतर बनाना चाहते हैं लेकिन परिस्थितियों के कारण उन्हें ज्यादा समय या अवसर नहीं मिल पाता:

वृक्षरोपण जैसे क्रियाकलापों को अपना कर प्रकृति का संरक्षण और उसे बेहतर बनाने के लिए कार्य करना जरूरी है। लेकिन यह होगा कैसे? हम लोग अपनी ही समस्याओं में व्यस्त हैं। सुधारों के बारे में सोचने के लिए हमारे पास स्वतंत्र मस्तिष्क नहीं है। हम केवल काम तलाशने और जीवित रहने के ही जद्दोजहद में जुटे हुए हैं। हम पेड़ रोपना चाहते हैं, लेकिन जगह कहां है?[165]

इन टिप्पणियों ने इस बात को रेखांकित किया कि हालांकि निवासियों के मन में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की गहरी समझ थी लेकिन इन विश्वासों को ठोस परिवर्तन का रूप देना एक ऐसी जटिल प्रक्रिया थी जिसके लिए, अन्य चीजों के अलावे, एक अनुकूल

[164] *एक माता से साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 8 जून 2018*

[165] *एक माता से साक्षात्कार, उत्तरी तोडा, 8 जून 2018*

नीतिगत वातावरण की जरूरत थी जो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए आधारभूत स्तरों पर लोगों की भागीदारी और आधारभूत स्तरों पर की जाने वाली पहलों को प्रणालीबद्ध करने में सरकारी एवं गैर-सरकारी नायकों से संस्थागत सहायता को प्रोत्साहित कर सके। वस्तुतः, इन बस्तियों में रहने वाले लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करने तथा उनके जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में उनकी सच्ची प्रतिभागिता को सक्षम बनाने के लिए समाज की संरचना में परिवर्तक की वाहिका बनने वाली संस्थाओं की आवश्यकता इस अध्ययन से उभर कर सामने आने वाली मुख्य अंतर्दृष्टियों में से एक रही है।

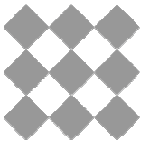

# उपसंहार

इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना और उसका वर्णन करना था कि इन्दौर की दो नदी-तटीय अनियमित बस्तियों में रहने वाले निवासियों ने अपने सामाजिक सम्बंधों के परिप्रेक्ष्य में तथा जल से सम्बंधित अपनी चुनौतियों से निपटने के प्रयास में आध्यात्मिक सिद्धान्तों से किस प्रकार प्रेरणा ग्रहण की। इसका व्यापक उद्देश्य था कि आध्यात्मिक सिद्धान्त व्यक्तियों और समुदायों दोनों के सामाजिक-आर्थिक कल्याण को किस प्रकार बढ़ावा देते हैं, इस बारे में अनुभव-जनित अंतर्दृष्टियों का सृजन। 'संस्थान' द्वारा संचालित पिछले शोध में यह पता लगाया गया कि विकास संस्थाएं धर्म से व्युत्पन्न आध्यात्मिक सिद्धान्तों को अपने कार्य के प्रसंग में किस प्रकार क्रियान्वित करती हैं। वर्तमान अध्ययन ने आध्यात्मिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग के विषय को इस बात पर ध्यान केन्द्रित करते हुए आगे बढ़ाया है कि वे समुदायों के प्रसंग में किस तरह अपनी अभिव्यक्ति पाते हैं।

जैसा कि इस अध्ययन के परिचय खंड में प्रस्तुत किया गया है, विकास को भौतिक एवं आध्यात्मिक अवधारणा के रूप में देखने के लिए जरूरी है कि जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक पहलुओं के बीच की अभिक्रिया को ज्यादा बेहतर रूप से समझा जाए। इस

अध्ययन को इस सम्बंध के बारे में एक अन्वेषण के रूप में देखा जा सकता है, जिसे सूक्ष्म रूप से नहीं बल्कि आम लोगों के सामने खड़ी कुछ अत्यंत ज्वलंत विकासात्मक समस्याओं का प्रत्युत्तर देने के प्रयास के आनुभाविक प्रसंग में सम्पन्न किया गया है। जीवन का यह आध्यात्मिक पहलू विचारों, इरादों और क्रियाओं में स्वयं को कैसे प्रकट करता है? यह लोगों के अपने जीवन और उनके समुदायों के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण को ठोस रूप में कैसे प्रभावित करता है? यह व्यक्तियों और समुदायों को अपनी रोजमर्रा की चुनौतियों पर विजय पाने में कैसे सक्षम बनाता है? यह एक-दूसरे के साथ और प्रकृति के साथ उनके सम्बंधों पर किस प्रकार असर डालता है? लोगों के बीच अनेक विभेदों के बावजूद, यह उन्हें एकसूत्रता में कैसे पिरोता है और उन्हें एक नैतिक उद्देश्य की दिशा में एकजुटता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा कैसे देता है? इस अध्ययन के निष्कर्षों के अंतर्गत जिन अंतर्दृष्टियों को समाहित किया गया है, वे इन्हीं और ऐसे ही अन्य प्रश्नों के उत्तर देती हैं। रूपकों, कहानियों, उपमाओं, तर्कसंगत दलीलों और यहां तक कि गीतों इत्यादि के माध्यम से, इन पन्नों में जिन लोगों की बातें सुनी गई हैं वे यह अभिव्यक्त करते हैं कि उनकी चेतना और संस्कृति में, और उनके सेवा के तौर-तरीकों में, ये आध्यात्मिक सिद्धान्त किस प्रकार उनके विचार और उनकी क्रियाओं में मार्गदर्शन के स्रोत तथा प्रेरणा और प्रोत्साहन बनकर उभरते हैं।

इस अध्ययन के निष्कर्ष यह झलकाते हैं कि मानवजाति की एकता के सिद्धान्त और समुदाय के दायरे में एकता को अक्षुण्ण बनए रखने की प्रेरणा के रूप में उस सिद्धान्त की अभिव्यक्ति ने इन पड़ोसी समुदायों में रहने वाले निवासियों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया है।

इस सिद्धान्त ने, जिसकी जड़ें प्रत्येक अलग-अलग समुदाय की अपनी-अपनी धार्मिक परम्पराओं में हैं, उस मुक्त एवं समावेशी तौर-तरीके का मनोभाव विकसित किया जिससे प्रेरित होकर इन निवासियों ने अपने-अपने धार्मिक ग्रंथों का अर्थ समझा और अपने-अपने धर्मों का पालन किया। यद्यपि दोनों ही पड़ोसों में रहने वाले लोग गहन धार्मिक स्वभाव के थे किंतु उन्होंने अपने-अपने त्योहारों, उत्सवों और धर्मार्थ कार्यकलापों को सभी धर्मों के लोगों के लिए मुक्त रखने की चेष्टा की। पूरी जागरूकता के साथ, उन्होंने धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं की कट्टरतावादी एवं अलगाववादी व्याख्याओं से स्वयं को दूर रखा जो विभेदों पर जोर देते थे।

इसी तरह, पारस्परिकता एवं आपसी सहयोग की कार्यप्रथाओं ने उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित किया। परस्पर-निर्भरता की यह भावना व्यक्तिगत एवं सामूहिक संघर्षों के दौरान पुष्ट और सशक्त हुई। वंचित तबके के शहरी समूहों के रूप में, अनियमित बस्तियों के निवासियों को राज्य-प्रदत्त सामाजिक सुरक्षा सम्बंधी प्रावधानों की सीमित सुलभता के साथ बड़ी कठिन ज़िन्दगी जीनी पड़ रही थी। ऐसी परिस्थितियों में, उन्होंने सतत रूप से एक-दूसरे की सहायता पर निर्भर होना सीखा है – चाहे वह बाढ़ के समय रहने की जगह मुहैया कराने के रूप में हो, तुरन्त ऋण की जरूरत हो या आजीविका के साधन पाने में सहायता।

ऐसा नहीं है कि इन पड़ोसी समुदायों के निवासियों में आपस में टकराव के मामले सामने नहीं आते थे। लेकिन इस तरह के टकराव उन पड़ोसों में व्याप्त एकता और अखंडता की समग्र भावना के समक्ष

अपवाद के रूप में ही थे। निवासियों के बीच आपसी संघर्ष के मामलों में उनकी मनोवृत्ति यह रहती थी कि उन संघर्षों को सम्बंधित पक्षों द्वारा स्वयं ही या अन्य निवासियों की मध्यस्थता से जल्द ही निपटा लिया जाए ताकि सामान्य स्थिति में मौजूद रहने वाला आत्मीय सम्बंध फिर से बहाल हो सके। एकता का मोल इन लोगों की संस्कृति के एक बुनियादी तत्व के रूप में प्रतीत हुआ और इन पड़ोसों में स्थित सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं ने भी उस एकता को संवर्द्धित एवं सशक्त किया।

जैसाकि निष्कर्षों से प्रकट होता है, यह स्पष्ट था कि सामाजिक सम्बंधों में एकता के सिद्धान्त को लागू करने की प्रेरणा बाहरी परिस्थितियों या केवल व्यावहारिक विचारों से प्राप्त नहीं हुई। वे एकता के सम्बंध के निर्माण के लिए क्यों प्रेरित होते थे इसका हवाला देते हुए प्रतिभागियों ने अक्सर "आनंद" शब्द का उल्लेख किया। यही वह शब्द था जिसका प्रयोग उन्होंने दूसरों के कल्याण की ओर उन्मुख व्यवहार से प्राप्त संतुष्टि और प्रसन्नता की भावना का वर्णन करने के लिए किया। किंतु यह भी स्पष्ट था कि समुदाय के भीतर सौहार्दपूर्ण सम्बंधों को दृढ़ आधारों पर सुरक्षित बनाए रखने के लिए ज्यादा व्यापक संरचनात्मक रूपांतरण की आवश्यकता थी ताकि विभिन्न प्रकर के सामाजिक एवं आर्थिक अन्यायों का समाधान किया जा सके। एक महत्वपूर्ण हस्तक्षेप जो कि परम आवश्यक था वह था सामाजिक सुरक्षा का प्रावधान तथा आजीविका के लाभकारी अवसरों को सुनिश्चित करना, महिलाओं के आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण के लिए लैंगिक रूप से विशिष्ट नीतियों का निर्माण, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण के माध्यम से निवासियों की क्षमता का विकास तथा प्रभावी प्रतिभागितापूर्ण अभिशासन की

आवश्यकता जो निवासियों के जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में उन्हें अपनी आवाज मुखरित करने की अनुमति दे सके। सामाजिक एवं आर्थिक न्याय उन स्थितियों को उपलब्ध कराता था जिनमें एकात्मकता को साकार किया जा सके और एकता फलीभूत हो सके।

इन पड़ोसों ने अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन में मानवजाति की एकता की जिस अवधारणा को लागू किया था वह, असंदिग्ध रूप से, वैयक्तिक एवं सामुदायिक जीवन को अक्षुण्ण बनाए रखने में एक अत्यंत ही मूल्यवान संसाधन है। फिर भी, जैसाकि निष्कर्षों से संकेतित होता है, एक सतत परिवर्तनशील दुनिया में एकता के सिद्धान्त के अभिप्रायों को, शिक्षा और समीक्षात्मक एवं परामर्शमूलक परिसंवाद के माध्यम से, और अधिक गहरे एवं व्यापक रूप से समझे जाने की आवश्यकता है ताकि उसकी अवधारणा और व्यवहार्यता को आंतरिक रूप से ज्यादा सुसंगत बनाया जा सके एवं नित्य परिवर्तनशील समसामयिक चुनौतियों और स्थितियों का निराकरण किया जा सके। साथ ही, इसके लिए उन नीतियों और कानूनों में भी परिवर्तन की जरूरत होगी जिनके कारण अन्यायों का सिलसिला जारी रहता है।

ऐसे मामलों के उदाहरण जहां एकता की अधिक पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए अन्याय की पहचान और उन्मूलन की आवश्यकता होगी, उन सूक्ष्म और खुले तरीकों पर चर्चा में देखे जा सकते हैं जिनमें इन पड़ोसों की सामाजिक संरचना के दायरे में जाति-आधारित और लिंग-आधारित भेदभाव अंतर्निहित हैं। इन अन्यायों पर काबू पाने के लिए न केवल लोगों के दृष्टिकोण और धारणाओं में बल्कि कानूनी

संहिताओं और समाज के आर्थिक और सामाजिक ढांचे में भी बदलाव की आवश्यकता होगी। उदाहरण के लिए, जबतक लैंगिक और जातिगत पहचान के आधार पर श्रम बाजारों को विभाजित करने के तरीके में गहन परिवर्तन नहीं किया जाता है, जो लोगों की आर्थिक संभावनाओं को बदलने की क्षमता को सीमित करता है, तबतक परिवर्तन लाने के प्रयासों का प्रभाव सीमित ही रहेगा।

इन निष्कर्षों ने सबकी भागीदारी के उस सिद्धान्त के महत्व को भी स्पष्ट किया जो कि न्याय पर आधारित एकता की शर्तों को स्थापित करने के साथ घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है। इन पड़ोसों में रहने वाले लोगों में साझा चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए सामूहिक सहकार्य के माध्यम से अपनी नियति की स्वयं जिम्मेवारी लेने की क्षमता है। यद्यपि सामान्य लक्ष्यों को हासिल करने में एकजुट होकर काम करने के लिए निवासियों के आरंभिक प्रयासों से हमेशा वांछित परिणाम  प्राप्त नहीं हो सके किंतु इससे इन पड़ोसों में एक अभिकर्ता के रूप में कार्य करने और सामूहिक क्रियाशीलता के लिए एकजुट होने की क्षमता प्रकट हुई। सुव्यवस्थित और संरचित सामाजिक क्रिया में संलग्न होने के लिए निवासियों की क्षमताओं में परिवर्तन लाने हेतु एक प्रबल शक्ति के रूप में उभरने के इन नवोदित प्रयासों के लिए वैज्ञानिक तरीकों और आध्यात्मिक सिद्धांतों को क्रियात्मक रूप से लागू करने की उनकी क्षमता के निर्माण के माध्यम से संवर्द्धित करने की आवश्यकता होगी। इसके लिए राज्य और नागरिक सामाजिक संगठनों से संस्थागत समर्थन और एक अनुकूल नीतिगत वातावरण की भी जरूरत होगी जिसमें लोगों द्वारा अपने विकास की जिम्मेदारी स्वयं लेने की क्षमता की पहचान की जाती हो। स्वामित्व की ऐसी भावना को आधारभूत स्तर पर शैक्षिक प्रक्रियाओं और

सामूहिक रूप से निर्णय लेने वाले तंत्र के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है जिसमें न केवल निवासियों की पूर्ण भागीदारी शामिल हो बल्कि विविध दृष्टिकोणों को सुनने और विकास के लिए उन्हें एक सामूहिक दृष्टिकोण के रूप में समन्वित करना भी संभव हो सके।

अतः, ऐसे सम्बंधों का निर्माण जो मानवजाति की एकता के सिद्धान्त को और अधिक मात्रा में प्रतिबिम्बित कर सकें, इन पड़ोसों अभी भी एक आशाजनक किंतु अधूरा कार्य बना हुआ है जिसके लिए सजग एवं सतत प्रयास की जरूरत है। किसी समुदाय में पारस्परिक रूप से सशक्तकारी तरीके से न्याय और एकता इन दोनों को कैसे मजबूत किया जा सकता है, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके बारे में इस तरह की जनसंख्या के दायरे में भविष्य में किए जाने वाले शोध के माध्यम से और अधिक अनुसंधान किया जा सकता है।

इस अध्ययन में अन्वेषित दूसरे सिद्धान्त, अर्थात प्रकृति के साथ मनुष्य के अंतर्सम्बंध, के विषय में प्रतिभागियों की टिप्पणियों में कुछ सामान्य विषयवस्तुएं निहित थीं: यह कि प्रकृति एक साझा विरासत है जिसे उन्होंने अक्सर ईश्वर का अनुदान कहकर संबोधित किया, यह कि मनुष्य का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह प्रकृति के साथ दायित्व एवं सम्मान की भावना के साथ व्यवहार करे, यह कि प्राकृतिक संसाधनों का केवल साधनगत मूल्य नहीं बल्कि एक अंतर्निहित मूल्य भी है, और यह कि व्यक्ति केवल अन्य स्थानों पर रहने वाले तथा समान संसाधनों (इस मामले में, पानी) का उपयोग करने वाले अन्य लोगों के प्रति जिम्मेदार नहीं है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के प्रति भी जो वर्तमान पीढ़ी द्वारा चुने गए विकल्पों से प्रभावित होगी।

प्रकृति का हवाला न केवल ऐसे संसाधनों के स्रोत के रूप में दिया गया जो मानव-जीवन के लिए एक खास उपयोगिता रखते हैं, बल्कि समस्त जीवों के एक-दूसरे से जुड़े होने और ईश्वरीयता से उसके सम्बंध की अवधारणा के आधार पर उसके बारे में सम्मानजनक भाषा का भी प्रयोग किया गया। साथ ही, प्रकृति मानव-जीवन के शाश्वत, सर्वव्यापी एवं अलौकिक पक्षों तथा सभी मनुष्यों के साथ अंतर्सम्बंध का भी द्योतक है। प्रकृति के साथ अपने सम्बंध के माध्यम से सभी मनुष्य – चाहे वे अतीत के हों, वर्तमान के अथवा भावी पीढ़ी के – एक-दूसरे से परस्पर जुड़े हुए और एकात्म हैं। प्रकृति के बारे में संकेतित करते हुए, प्रतिभागियों ने अक्सर यह कहा कि वह (प्रकृति) उन आध्यात्मिक गुणों का भौतिक मूर्तिमान रूप है जिन्हें वे अपने सामाजिक सम्बंधों में दर्शाना चाहते हैं। वे आध्यात्मिक गुण हैं – प्रेम, उदारता, विनम्रता और सेवा की भावना। प्रकृति के विभिन्न तत्व जिस तरह एक पूर्ण सहक्रियता और आपसी तालमेल के साथ एकजुट होते हैं वह मानवजाति के लिए उस जटिल, पारस्परिक एवं एकीकृत व्यवस्था का सूचक है जिससे विविधता में एकता की झलक मिलती है। बहुत से प्रतिभागियों ने बताया कि प्रकृति उनके लिए एक आदर-योग्य अस्तित्व का भी परिचायक है क्योंकि वह अपनी सृष्टि में निहित 'परम बुद्धिमत्ता' की शक्ति की गरिमा और महानता झलकाती है।

दैनिक जीवन में प्रकृति के प्रति व्यावहारिक रूप से अपनी श्रद्धा प्रकट करने के सम्बंध में बोलते हुए निवासियों ने कहा कि जल की बचत करके तथा जल एवं नदियों के प्रदूषण की रोकथाम करके वे प्रकृति के प्रति अपना सम्मान प्रकट कर सकते हैं। किंतु इस कार्य

को प्रभावी रूप से करने के लिए, केवल स्थानीय निवासियों के प्रयासों से बढ़कर कुछ और भी करने की जरूरत है। ऐसे प्रयासों में सरकार अथवा अन्य विशेष संस्थाओं की सहायता की भी आवश्यकता होगी जो एक व्यापक प्रणाली के स्तर पर इन समस्याओं का समाधान कर सकें। साथ ही, इसके लिए जल-प्रबंधन के क्षेत्र में समुदाय के भीतर क्षमता-निर्माण की भी आवश्यकता होगी।

शोध-दल ने यह पाया कि प्रकृति के बारे में प्रतिभागियों की सूक्ष्म अवधारणाओं और अपने दैनिक जीवन में जल जैसे संसाधनों को प्रयोग में लाने के उनके तौर-तरीकों के बीच एक विरोधाभास या अंतराल दिखाई पड़ता है। इसका एक कारण यह है कि प्रकृति के संसाधनों के अधिनियमन और प्रबंधन के ऊपर स्थानीय निवासियों का नियंत्रण बहुत ही सीमित था। उनके पर्यावरण तथा प्रकृति के संसाधनों तक उनकी पहुंच की रूपरेखा तय करने वाली वृहत्तर शक्तियों की तुलना में उनके द्वारा चुने गए विकल्प ज्यादा कारगर प्रतीत नहीं होते थे। वस्तुस्थिति यह है कि निवासियों के लिए सुलभ जल की मात्रा बहुत ही सीमित है। पानी को ज्यादा मितव्ययिता से खर्च कर सकने की अधिक गुंजाईश नहीं है। पड़ोस में रिसती हुई या टूटी हुई पाइपों से बर्बाद होने वाले जल की भारी मात्रा, जिसे ठीक करने के लिए नगर निगम से यंत्रियों को भेजा जाता है और जिसमें कई घंटे – और यहां तक कि कई दिन – लग जाते हैं, पानी को बचाने के उनके प्रयासों का मजाक उड़ाती प्रतीत होती है। यह इन पड़ोसों में जल-प्रबंधन में समुदाय की सार्थक भागीदारी के अभाव को भी झलकाता है। इसी तरह, उनकी बस्ती के पास से होकर बहने वाली नदी, जो आगे जाकर एक बड़े नाले के रूप में तब्दील हो जाती

है, के प्रदूषण की रोकथाम पर भी निवासियों को ज्यादा नियंत्रण प्राप्त नहीं है। ये बस्तियां बहुत ही घनी आबादी से भरी हैं, और लोगों के घर जमीन के जिन टुकड़ों पर बसे हैं उनकी समुचित मालकियत भी उन्हें हासिल नहीं है। इसका यह मतलब है कि उन्हें वृक्षरोपण के भी ज्यादा अवसर प्राप्त नहीं हैं क्योंकि ये बस्तियां कंक्रीट, धातु और ऍस्बेस्टस से बनी ऊबड़-खाबड़ संरचनाओं से भरा भू-परिदृश्य उपस्थित करती हैं।

जरूरत है अभिशासन की भगीदारीपूर्ण संरचनाओं की जो इन लोगों को उनके जीवन को प्रभावित करने वाले निर्णयों में अपनी बात रखने की अनुमति दे सके। खास तौर पर पानी जैसे संसाधनों के अभिशासन और प्रबंधन में अनियमित बस्तियों में रहने वाले लोगों के ज्यादा से ज्यादा प्रतिनिधित्व की जरूरत है जिन्हें वर्तमान समय में केवल एक निष्क्रिय उपभोक्ता के रूप में सीमित रखा गया है। इन निवासियों को उन नदियों के संरक्षण के प्रयासों में भी शामिल किए जाने की आवश्यकता है जिनके तटों पर वे निवास करते हैं। पानी के अभिशासन और प्रबंधन में उनकी भागीदारी को सार्थक बनाने के लिए, अभिशासन की भागीदारीपूर्ण संरचनाओं के अलावा, ऐसी बस्तियों के निवासियों को जल सम्बंधी बुनियादी अवधारणाओं के बारे में और अधिक शिक्षित किए जाने की भी जरूरत है, जैसे भूजल और धरातलीय जल में सम्बंध और जलोत्सारण क्षेत्र (वॉटरशेड) की धारणा। विशिष्ट जल-स्रोतों, उनके जलोत्सारण क्षेत्र की समस्याओं और स्थानिक जलवायु सहित उन्हें अपनी स्थानीय जल-प्रणाली को भी समझना होगा।

इससे भी कहीं आगे, निवासियों के मन में प्रकृति के बारे में जो आध्यात्मिक दृढ़ विश्वास बैठे हुए हैं यदि उन्हें विकास की प्रक्रिया से जोड़ना है तो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सम्बंधित विकास के आर्थिक, पारिस्थितिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक आयामों को ज्यादा बेहतर ढंग से समेकित करना होगा। वर्तमान समय में, हमारी नीतियां इन विभिन्न आयामों के बीच विखंडित हैं। आर्थिक मूल्य को सबसे प्रबल प्रेरक-तत्व तथा विकास का मापक माना जाना चाहिए। विकास के आध्यात्मिक एवं भौतिक आयामों के बीच विखंडन के कारण, जब उनके अभिशासन और प्रबंधन के बारे में नीतियों और योजनाओं का निरूपण एवं क्रियान्वयन किया जाता है तब प्रकृति के बारे में लोगों के आध्यात्मिक विश्वासों पर विचार नहीं किया जाता। इसलिए, लोग अपने दृढ़ आध्यात्मिक विश्वासों को उस तरीके से अभिव्यक्त नहीं कर पाते जिनसे प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो सकेगा। प्राकृतिक संसाधनों के साथ हमारा व्यवहार केवल साधन के रूप में है और इसलिए लोगों के विश्वास के बावजूद यह हमें पर्यावरणीय ह्रास की दिशा में ले जा रहा है। अतः एक बुनियादी चुनौती जिसका हमें निराकरण करना होगा वह है विकास के आध्यात्मिक एवं भौतिक आयामों के बीच विखंडन की समस्या। यही वह संदर्भ है जिसमें इस अध्ययन का उद्देश्य – अर्थात सामूहिक चुनौतियों का सामना करने में समुदाय के प्रयासों के परिप्रेक्ष्य में जीवन के आध्यात्मिक एवं भौतिक आयामों के बीच गत्यात्मक सुसंगति के बारे में ज्यादा गहन अंतर्दृष्टियां प्राप्त करना – विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है। यह विकास सम्बंधी विचारण और नीति में इस विखंडन के निराकरण का प्रयत्न करता है जिसने जनसमुदायों के नाम से चलाई जा रही विकास प्रक्रियाओं से जनसमुदायों को ही अलग-थलग करके रख दिया है।

इस अध्ययन के अंतर्गत, किसी सामुदायिक परिवेश में लोकोपकारी व्यवहार को उत्प्रेरित करने वाले आध्यात्मिक पहलू को अधिक सुस्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। सामुदायिक जीवन के संदर्भ में लोगों के रोजमर्रा के निर्णयों के सापेक्ष आध्यात्मिक पहलू को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाने से नीति-निर्माताओं, विकास के अभिकर्ताओं और समुदाय में रहने वालों के लिए यह संभव हो जाता है कि वे विकास सम्बंधी प्रयासों के नियोजन एवं क्रियान्वयन में मानव-जीवन के इस पहलू को नाम दे सकें और उसपर निर्भर हो सकें। जैसा कि परिचय खंड में वर्णित है, विकास के इस आध्यात्मिक पहलू पर अक्सर विचार ही नहीं किया गया है। प्रस्तावित है कि इस पहलू को सन्निहित करने के लिए विकासात्मक नीतियों और प्रथाओं को सशक्त बनाने से विकास में लोगों की भागीदारी को व्यापक बनाने के प्रयासों को संवर्द्धित किया जा सकेगा और विकास कार्यक्रमों की प्रभाविता बढ़ेगी।

इस अध्ययन में आगे यह भी सुझाया गया है कि इस प्रकार की बस्तियों के साथ मिलकर काम करने वाले सरकारी एवं गैर-सरकारी अभिकर्ताओं को चाहिए कि वे इन समुदायों में विद्यमान मानवजाति की एकता और प्रकृति के साथ अंतर्सम्बंध जैसे आध्यात्मिक सिद्धान्तों में विश्वास तथा इन सिद्धान्तों को अपने समुदायों में लागू करने के ज्ञान जैसे संसाधनों की पहचान करें। विकास कार्यक्रमों के योजना-निर्माण और क्रियान्वयन में इन विश्वासों और ज्ञान का सार्थक लाभ उठाने का प्रयास अवश्य किया जाना चाहिए। ऐसे पड़ोसों में रहने वाले लोगों को ज्ञान-सम्पन्न संसाधनों के रूप में देखा जाना चाहिए। सामाजिक सम्बंधों तथा प्रकृति के साथ सम्बंधों

के बारे में उनके पास जो दृष्टिकोण है वह एक सुदृढ़ आधार प्रस्तुत करता है जिस पर भौतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति को आगे बढ़ाने के प्रयासों का निर्माण किया जा सकता है। सावधानी बरती जानी चाहिए कि विकास के नाम पर किए जाने वाले कार्य इस आधार की अवहेलना न करें अथवा वे प्रकृति या अपने पड़ोसियों से लोगों के सम्बंध को तोड़ने का कारण न बन जाएं।

अनियमित बस्तियों के निवासियों के जीवन पर आध्यात्मिक सिद्धान्तों के सकारात्मक प्रभाव का वर्णन करने का अर्थ विभिन्न प्रकार के अभावों के रूप में विद्यमान उन अपार चुनौतियों की उपेक्षा करना या उन्हें महत्वहीन समझना नहीं है जिनका सामना इन लोगों को करना पड़ता है, और न ही उनके जीवन को बेहतर बनने के लिए ठोस भौतिक उपायों की अनुगामी आवश्यकता को कम करके आंकना है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन पड़ोसों को अन्य सुविधाओं के अतिरिक्त तुरन्त बेहतर जीवन-दशाओं, अधोसंरचना, शैक्षणिक अवसरों, स्वास्थ्यचर्या, और सुरक्षित रोजगार की जरूरत है। साथ ही, शक्तिशाली सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक शक्तियां भी मौजूद हैं -- जैसे कि श्रम बाजारों और शैक्षणिक अवसरों का विभाजन, खास जाति और धार्मिक पृष्ठभूमियों के लोगों का पृथक्करण तथा अनियमित बस्तियों का राजनैतिक वोट बैंक के रूप में इस्तेमाल या पोषण – जो इन जनसमूहों को अभाव के एक दुष्चक्र में जकड़े रखती हैं और आने वाली पीढ़ियों की प्रगति को बाधित करती हैं। यदि इन जनसमूहों को अपने भौतिक और आध्यात्मिक जीवन में प्रगति हासिल करनी है तो उसे इन शक्तियों पर विजय प्राप्त करनी होगी। तथापि, सामाजिक एवं आर्थिक विकास सम्बंधी नीतियों और योजनाओं के समक्ष स्वयं लोगों की भागीदारी प्राप्त करने का एक बेहतर मौका मौजूद है, बशर्ते

कि वे लोगों के आध्यात्मिक विश्वासों और उन विश्वासों को क्रियान्वित करने सम्बंधी उनके अनुभवों को ध्यान में रख सकें। जिस बात की संकल्पना की गई है वह वस्तुतः एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समुदाय, एक-दूसरे को सशक्त करते हुए, आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति की दिशा में कार्य कर सकते हैं। 'वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान' (Institute for Studies in Global Prosperity) के एक प्रलेख में इस गत्यात्मक सुसंगति का वर्णन इस तरह से किया गया है: "भौतिक समृद्धि को समुचित रूप से अपने आप में एक उद्देश्य के रूप में नहीं समझा जाना है, बल्कि नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक प्रगति के एक संवाहक के रूप में। इसी तरह, भौतिक कल्याण की कोई भी सार्थक संवृद्धि समानता, विश्वासपात्रता, और लोकोपकार जैसी आध्यात्मिक शिक्षाओं के ठोस अनुप्रयोग से ही प्राप्त की जा सकती है ...."[166]

## प्रविधि के बारे में कुछ विचार

आशा की जाती है कि इस अध्ययन से प्राप्त अनुभव भविष्य में ऐसे अन्य लोगों के लिए अंतर्दृष्टि के एक स्रोत के रूप में उपयोगी होगा जो विकास-विषयक मुद्दों के आध्यात्मिक आयाम का निष्कर्षण करने में सक्षम प्रविधि को परिष्कृत करन चाहते हैं। जब कोई ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन संचालित करने का प्रयास किया जाता है जो जिज्ञासा की एक विषयवस्तु के रूप में लोगों के आध्यात्मिक

---

[166] *'इंस्टीच्यूट फॉर स्टडीज़ इन ग्लोबल प्रॉस्पेरिटी' [वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान], 2008, 'Science, Religion and Development: Some Initial Considerations' [विज्ञान, धर्म और विकास: कुछ आरंभिक विचार], 14 फरवरी 2018 को संशोधित, स्रोत: www.globalprosperity.org/library*

विश्वासों और मान्यताओं पर ध्यान केन्द्रित रखने के साथ-साथ परिशुद्ध और वस्तुनिष्ठ होने का उद्देश्य लेकर चलता है, तो कुछ चुनौतियां भी उभरती हैं। इस अध्ययन में जिस प्रविधि का उपयोग किया गया, जो कि व्याख्यात्मक एवं गुणवत्तापरक विषय-अध्ययन पर आश्रित थी, वह लोगों द्वारा इन विश्वासों को कैसे समझा-बूझा जाता है और वे उन्हें अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू करते हैं उसे ग्रहण करने के रूप में सहायक सिद्ध हुई। विषय-अध्ययन का तरीका शोधकर्ता को समग्र समुदाय को एक सामाजिक इकाई के रूप में देखने में समर्थ बनाता है, और साथ ही व्यक्तिगत रूप से अर्द्ध-संरचित साक्षात्कारों एवं फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्शों के माध्यम से लोगों की व्यक्तिगत सोच-समझ के बारे में ज्यादा गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। शोध के सात्विक दृष्टिकोण ने यथार्थ के आध्यात्मिक पहलुओं पर विचार करने में एक आधारभूमि का निर्माण किया जिसे प्रतिभागी वास्तविकता की वस्तुनिष्ठ विशेषताओं के रूप में संदर्भित करते हैं, और उतने ही प्रबल रूप से उसके भौतिक पहलुओं के रूप में भी। इसके साथ-साथ, ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से, यह समझा गया कि यद्यपि आध्यात्मिक यथार्थ को जानने की किसी भी खास व्यक्ति की योग्यता सीमित होती है, किंतु विविध प्रकार की रायों और विचारों से ऐसी पूरक अंतर्दृष्टियां जरूर प्राप्त हो सकती हैं जो आध्यात्मिक यथार्थ के बारे में समग्र रूप से एक बेहतर दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हो सकती हैं। परिणामस्वरूप, इस प्रविधि के अंतर्गत प्रतिभागियों के साथ विविध दृष्टिकोणों की तलाश के लिए खुलेपन का समावेश करने तथा फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्शों एवं साक्षात्कार प्रश्नों को प्रत्येक प्रतिभागी के प्रत्युत्तरों के आधार पर अनुकूलित करने का प्रयास किया गया। प्रयुक्त भाषा, पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति तथा शोधकर्ताओं की भाव-

भंगिमा को रूढ़िवादी न बनाते हुए तथ्यान्वेषी रखने का प्रयास किया गया।

एक और दृढ़ विश्वास जो कि इस प्रविधि के लिए आधारभूत सिद्ध हुआ वह यह था कि आम लोगों के पास आध्यात्मिक सिद्धान्तों और उनके अनुप्रयोग के बारे में अपार अंतर्दृष्टियों का खजाना मौजूद है। इस तरह के गहन विषयों पर विचार-मनन करने की क्षमता केवल दार्शनिकों, धार्मिक नेताओं, ब्रह्मज्ञानियों या विद्वानों के पास नहीं है; बल्कि सभी जगहों के सभी लोग इन बातों पर चिन्तन करते हैं, और यदि उन्हें अवसर दिया जाए तो ऐसे विषयों पर वे अनेक मूल्यवान अंतर्दृष्टियां साझा कर सकते हैं। इस शोध के लिए एक महत्वपूर्ण आरंभ-बिंदु सामान्य लोगों की इस क्षमता में विश्वास करना रहा है। अतः शोधकर्ताओं के सामने खड़ी चुनौती यह नहीं थी कि वे विशिष्ट किस्म के उत्तरदाताओं की तलाश करें बल्कि उनकी चुनौती थी एक ऐसा वातावरण तैयार करना जिसमें आम लोग अपनी अंतर्दृष्टियों को साझा करने के लिए सहज महसूस कर सकें। शोध-दल के लिए यह महत्वपूर्ण हो गया था कि वे प्रतिभागियों के साथ बहुत हद तक सहजता और विश्वास-भावना का सृजन करें जिससे वे अपनी बात साझा करने के लिए प्रोत्साहित महसूस कर सकें। एक अन्य चुनौती थी आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर चर्चा के लिए एक ऐसी भाषा का चयन जो निवासियों के लिए सार्थक भी हो और इतना व्यापक भी कि वह खास धार्मिक समुदायों के दायरों की सीमा-रेखा लांघ सके। इस बात पर विधिपूर्वक विचार किया जाना जरूरी था कि प्रतिभागियों को आध्यात्मिक सिद्धान्तों के बारे में केवल सैद्धान्तिक रूप से नहीं बल्कि उस रूप में बात करने के लिए प्रोत्साहित किया

जाए जिस रूप में वे अपने दैनिक परिदृश्यों में इन सिद्धान्तों को अपने व्यवहार में झलकाते हैं।

हालांकि इस अध्ययन का दायरा एक विशेष सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में केवल दो अनियमित बस्तियों के वर्णन तक सीमित है किंतु इसके अभिप्राय वृहत्तर प्रसंग में भी लागू होते हैं। इन अभिप्रायों के बारे में और अधिक अन्वेषण करने हेतु, विकास के संदर्भ में आध्यात्मिक सिद्धान्तों के अनुप्रयोग के बारे में ज्ञान की कड़ी को और अधिक प्रगति की दिशा में ले जाने के लिए प्रयत्नशील अध्ययनों में विविध प्रकार के भौगोलिक, धार्मिक, वर्गीय, जातीय और नस्लीय पृष्ठभूमियों के अन्य समुदायों के अनुभवों पर ज्यादा गहन दृष्टि डाली जा सकती है, विभिन्न आध्यात्मिक सिद्धन्तों के व्यापक दायरों तथा पानी के मुद्दे से भी आगे बढ़कर विकास की अन्य चुनौतियों के बारे में भी छानबीन की जा सकती है। चूंकि आध्यात्मिक सिद्धान्त अनिवार्य सम्बंधों के बुनियादी स्तर पर लागू होते हैं, अतः अनेक विभिन्न सम्बंधों की तलाश की जा सकती है – व्यक्ति और समाज के बीच सम्बंध, व्यक्तियों और समुदाय के बीच सम्बंध, व्यक्तियों और संस्थाओं के बीच सम्बंध, इत्यादि।

आशा की जाती है कि यह अध्ययन आगे चलकर इस प्रकार के ऐसे अन्य शोधकार्यों के लिए प्रेरणा देने का कार्य करेगा जो विकास के साधन और लक्ष्यों की दिशा में योगदान देने के लिए आध्यात्मिक सिद्धान्तों पर कैसे निर्भर हुआ जा सकता है, इस विषय में वैज्ञानिक समझ को विकसित करने के लिए समर्पित होंगे।

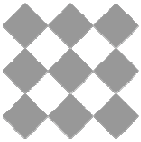

# संदर्भ-सूची


ब्रास, पी.आर. (पॉल आर. (1991)। Ethnicity and nationalism : theory and comparison [नृजातीयता और राष्ट्रवाद: सिद्धान्त एवं तुलना], नई दिल्ली: नई दिल्ली।

बर्मन, जे.जे.आर. (1996). Hindu-Muslim Syncretism in India [भारत में हिंदू-मुस्लिम समन्यवाद], 'इकोनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली'।

भारत की जनगणना (2011). भारत की जनगणना 2011 मेटा डेटा। भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त के कार्यालय में।

चु, एरिक के. (2018). Urban climate adaptation and the reshaping of state–society relations: The politics of community knowledge and mobilisation in Indore, India [नगरीय जलवायु अनुकूलन तथा राज्य एवं समाज के बीच सम्बंध का नया रूप: इन्दौर, भारत, में सामुदायिक ज्ञान और अभिगमन की राजनीति]। 'अर्बन स्टडीज़' (सेज पब्लिकेशंस लिमि.), 55(8), 1766-1783.

डेन्यूलिन, बानो ऐंड बानो, मसूदा (2009). Religion in development : Rewriting the secular script [विकास में धर्म: धर्मनिरपेक्ष कथा का पुनर्लेख]। लंदन: ज़ेड

डेन्यूलिन, सेवेराइन, ऐंड राकोडी, कैरोल। (2011). Revisiting Religion: Development Studies Thirty Years On [धर्म की पुनर्यात्रा: तीस साल बाद विकास अध्ययन]। 'वर्ल्ड डेवलपमेंट', 39(1), 45-54

धर. एस. वी., (2017, फरवरी 11)। The story of Kahn: A river swallowed by the spreading city of Indore [कान नदी की कहानी: विस्तृत होते इन्दौर शहर द्वारा निगल ली गई एक नदी]। 'कैच न्यूज़' – स्रोत: http://www.catchnews.com/india-news/the-story-of-kahn-a-river-swallowed-by-the-spreading-city-of-indore-1486579608.html

ईस्टरली, डब्ल्यू. (2006). The white man's burden: Why the West's efforts to aid the rest have done so much ill and so little good [श्वेत व्यक्ति का बोझ: बाकी लोगों की मदद के लिए पश्चिमी प्रयासों से इतना कम लाभ और इतनी हानि क्यों?]। न्यूयॉर्क, पेंग्विन प्रेस।

एक्क, डी.एल. (2012). India: A Sacred Geography [भारत: एक पावन भूगोल]। न्यूयॉर्क: थ्री रिवर्स प्रेस।

एस्कोबार, ए. (1995). Encountering development: The making and unmaking of the third world [विकास का सामना: तीसरी दुनिया का निर्माण और अ-निर्माण]। प्रिंस्टन युनिवर्सिटी प्रेस।

गॉलेट, डेनिस। (1980). Development experts: The one-eyed giants [विकास विशेषज्ञ: एक नेत्र वाले दैत्य], 'वर्ल्ड डेवलपमेंट', 8(7), 481-489.

हार्पर, एस.एम.पी. (2000)। The Lab, the Temple, and the Market: Reflections at the Intersection of Science, Religion, and Development [प्रयोगशाला, मंदिर और बाजार: विज्ञान, धर्म और विकास के समबिंदु के बारे में कुछ विचार]। ओटावा: इंटरनेशनल डेवलपमेंट रिसर्च सेंटर।

Institute for Studies in Global Prosperity [वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान]। (2008)। Science, Religion and Development: Some Initial Considerations [विज्ञान, धर्म और विकास: कुछ आरंभिक विचार]। संशोधित: 14 फरवरी 2018, स्रोत: www.globalprosperity.org/library

Institute for Studies in Global Prosperity [वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान]। (2010)। May Knowledge Grow in our Hearts: Applying Spiritual Principles to Develop- ment Practice [हमारे हृदयों में हो ज्ञान का अभ्युदय: विकास कार्यों में आध्यात्मिक सिद्धान्तों का अनुप्रयोग]।

लुन, जेनी। (2009). The Role of Religion, Spirituality and Faith in Development: A critical theory approach [विकास में धर्म, आध्यात्मिकता और आस्था की भूमिका: एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक अभिगम]। 'थर्ड वर्ल्ड क्वार्टरली', 30(5), 937-952.

मार्शल, के., और वैन सानेन, एम. (2007)। Development and Faith: Where Mind, Heart, and Soul Work Together [विकास और धर्म: जहां मस्तिष्क, हृदय और आत्मा का सहकार्य होता है]। वाशिंगटन डी.सी. में: वर्ल्ड बैंक, 2007, pp. xviii, 329.

मोयो, डी. (2010). Dead aid : Why aid makes things worse and how there is another way for Africa. लन्दन, पेंग्विन

नारायण, डी., चेम्बर्स आर., शाह, एम.के., और पेटेश्च, पी. (2000)। Voices of the poor: Crying out for change [गरीबों की आवाज़: परिवर्तन की पुकार] (खंड 2)

नारायणन, वाई. (2013). Religion and Sustainable Development: Analysing the Connections [धर्म एवं स्थायित्वपूर्ण विकास: संयोजनों का विश्लेषण]। 'सस्टेनेबल डेवलपमेंट' 21(2), 131–139.

पारिख, हिमांशु एच. (1996). Slum Networking [स्लम नेटवर्किंग]। 'आर्किटेक्चर डिज़ाइन' 13(4), 18.

पटेल, एस.आर., और मांध्यान, आर. (2014)। Impoverishment assessment of slum dwellers after off-site and on-site resettlement : A case of Indore [ऑफ-साइट एवं ऑन-साइट बसाहट के बाद झुग्गी बस्तियों में निवास करने वालों की दरिद्रता का आकलन: इन्दौर का प्रसंग]। 'कॉमनवेल्थ जर्नल ऑफ लोकल गवर्नेंस' 15(15), 104-127

ताहिर, ए., और विसारिया (2017). Sewage Pollution in Water Supply in Indore [इन्दौर की जलापूर्ति में मलजल प्रदूषण]। 'इंडियन जर्नल ऑफ ऑक्युपेशनल ऐंड इनवायरन्मेंटल मेडिसिन'।

टॉमेलिन, ई. (2013). Religions and development [धर्म और विकास] (विकास के बारे में रोटलेज़ के दृष्टिकोण)। न्यूयॉर्क: रुटलेज़

टिन्डेल, डब्ल्यू. (2006). Visions of development: Faith-based development [विकास की संकल्पना: आस्था पर आधारित विकास]। एल्डरशॉट: ऐशगेट

वर्मा, गीता दीवान। (2000). Slum Upgrading (स्लम विकास]। 'आर्किटेक्चर डिज़ाइन', 17(1), 109.

वूल्फ़, ए.टी. (2017). The Spirit of Dialogue: Lessons from Faith Traditions in Transforming Conflict [वार्तालाप की चेतना: संघर्ष के रूपांतरण में आस्था परम्पराओं से कुछ पाठ]। वाशिंगटन डी.सी.: आइलैंड प्रेस।

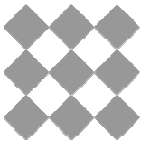

# परिशिष्ट

## विषय सम्बंधी वक्तव्य

यह प्रलेख इस शोध अध्ययन के लिए चुनी गई बस्तियों के प्रतिभागियों के साथ फ़ोकस-ग्रुप विचार-विमर्शों को आरंभ करने और उनके संचालन में सहायकों (फैसिलिटेटरों) की सहायता के लिए तैयार किया गया है। इसके अंतर्गत उन दो आध्यात्मिक सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवरण शामिल है जिन्हें इन शोध के अन्वेषण के फ़ोकस के रूप में चुना गया है – अस्तित्व की एकता और मानवजाति की एकता। साथ ही, विचार-विमर्श को उत्प्रेरित करने के लिए प्रत्येक सिद्धान्त के लिए कुछ प्रश्न भी दिए गए हैं। समझा जाता है कि विचार-विमर्शों के दौरान, उनमें और भी प्रश्न जोड़े जाएंगे और उन्हें परिष्कृत रूप दिया जाएगा।

### अस्तित्व की एकता: प्राकृतिक विश्व से हमारा अंतर्सम्बंध

इस सम्पूर्ण सृष्टि में अंतर्निहित संभवतः सबसे आधारभूत सिद्धान्त है अस्तित्व के संसार की एकता और समग्रता। अस्तित्व की सभी वस्तुएं जीवन के एक अनवरत जाल में अन्य वस्तुओं से जुड़ी हुई हैं। हम मनुष्य, जो कि इस धरती पर रहने वाले असंख्य प्राणियों में से एक हैं, अपने जीवन के लिए पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर हैं। जब

हम प्राकृतिक विश्व के साथ अपने अंतर्सम्बंध के सिद्धान्त की उपेक्षा कर देते हैं और अपने लोभ, अभिमान या मूर्खता के वशीभूत होकर धरती के संसाधनों की लूट-खसोट और उन्हें प्रदूषित करने में जुट जाते हैं तो इससे हमारा ही कल्याण और जीवन संकट में पड़ जाता है। धरती के प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचने और उनकी अवहेलना करने का परिणाम अंततः धरती पर विद्यमान सभी जीवनों के लिए नुकसान के रूप में सामने आता है जिनमें हम (मनुष्य) स्वयं भी शामिल हैं।

विश्व के प्रमुख धर्मों ने मनुष्य और प्रकृति-जगत के बीच की इस अंतर्सम्बंधता के सिद्धान्त को समझने और उसका सम्मान करने में सहायता प्रदान की है। उन्होंने मनुष्य को यह शिक्षा दी है कि वे अस्तित्व में व्याप्त संतुलन और सुव्यवस्था के महत्व को समझें और प्राकृतिक जगत को एक ऐसे दिव्य न्यास के रूप में देखें जिसका उपयोग मर्यादा, करुणा और नम्रता के साथ किया जाना चाहिए और उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए संरक्षित रखा जाना चाहिए। प्रकृति के प्रति सम्मान और विनम्रता की प्रेरणा अपने आप में इस सजगता से उत्पन्न होती है कि इसकी भव्यता और गरिमा इस सृष्टि के पीछे निहित शक्ति की महानता के संकेत और उसकी झलक दिखाती है।

**प्रतिभागियों के लिए कुछ सुझाए गए प्रश्न:**

1. आप प्रकृति को किस रूप में देखते हैं? आपकी समझ से इसका क्या उद्देश्य है? क्या आप यह मानते हैं कि प्रकृति सिर्फ हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए है या उसका उद्देश्य इससे भी कहीं ऊंचा है? क्या आपको लगता है कि

प्रकृति का कोई आध्यात्मिक महत्व भी है? यदि हां तो कृपया उसका वर्णन करें।

2. मनुष्य के रूप में, आप वर्तमान समाज में प्रकृति के साथ हमारे सम्बंध का वर्णन कैसे करेंगे? आपकी समझ से हमारा यह सम्बंध कैसा होना चाहिए? क्या आपको लगता है कि हम लोग प्रकृति का केवल एक हिस्सा मात्र हैं या उस पर हमारा कुछ नियंत्रण भी है? बताइए कि क्यों? आपकी समझ से, प्रकृति के ऊपर हमें अपनी शक्ति का उपयोग किस प्रकार करना चाहिए?
3. पानी और प्राकृतिक जगत के आध्यात्मिक अथवा सांकेतिक महत्व के बारे में आपके विश्वास आपके जीवन जीने के तरीके को कैसे प्रभावित करते हैं? इससे आप पानी का जिस रूप में उपयोग करते हैं वह कैसे प्रभावित होता है? क्या आप पानी या प्रकृति को प्रदूषित होने से बचाने के लिए कुछ करते हैं?
4. सरस्वती नदी के साथ आपका क्या सम्बंध है?
5. क्या पानी और प्रकृति के महत्व के बारे में अपने विश्वास और दैनिक जीवन में अपने कार्य-व्यवहार के बीच क्या आपको कोई विरोधाभास दिखता है? क्या ऐसे विरोधाभास आपको अपने समुदाय में भी दिखते हैं? उन विरोधाभासों का समाधान कैसे हो सकता है?

## मानवजाति की एकता

एक प्राकृतिक संसाधन के रूप में पानी समस्त मानवजाति के लिए है। अतः सभी मनुष्यों का उस पर समान रूप से दावा है – वर्तमान समय में रहने वाले मनुष्यों का भी और पानी को एक विरासत के

रूप में पाने वाली भविष्य की पीढ़ियों का भी – और इसके संरक्षण का दायित्व सब पर है।

प्रकृति के एक साझा संसाधन के रूप में, पानी हमारी सामान्य मानवता और मानवजाति के एक सदस्य के रूप में हमारे अंतर्सम्बंध की याद दिलाता है। हमारी भी वही जरूरतें हैं जो दूसरों की हैं, और उन आवश्यकताओं को इस तरह पूरा करने के लिए हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं जिससे अन्य किसी को वंचित न रह जाना पड़े और जिससे हर किसी की भलाई में योगदान प्राप्त हो सके। निःस्वार्थता, सहयोग, पारस्परिकता, दया, प्रेम एवं दूसरों के लिए त्याग करने की इच्छा, इत्यादि, वे आध्यात्मिक गुण हैं जो हमारे व्यक्तिगत कल्याण को समाज अथवा समुदाय के कल्याण के साथ मिलाकर चलने की क्षमता देते हैं। इन गुणों के लिए हमारी प्रतिबद्धता का जन्म मानवजाति की एकता के सिद्धान्त में हमारे दृढ़ विश्वास से उत्पन्न होती है। यह सिद्धान्त हमें यह समझने में मदद देता है कि एक का कल्याण सबके कल्याण में निहित है और एक को होने वाली हानि सबकी हानि है।

समाज के लिए इस सिद्धान्त के अभिप्रायों को समझने के लिए, हमें मानव-शरीर में एक उपयोगी तुलना मिल जाती है। शरीर के अन्दर असाधारण स्वरूपों और प्रकार्यों से सम्पन्न असंख्य कोशिकाएं मानव-अस्तित्व को संभव बनाने के लिए एक-दूसरे के साथ मिलकर क्रियाशील होती हैं। उन्हें अपने व्यक्तिगत प्रकार्यों और साथ ही साथ पूरे शरीर के विकास की जरूरत को पूरा करने के लिए जिन चीजों की भी आवश्यकता होती है उन्हें वे देते भी हैं और ग्रहण भी करते हैं। कोई भी व्यक्ति एक स्वस्थ शरीर के जीवन के सम्बंध में दुर्लभ

संसाधनों के लिए शरीर के विभिन्न अंगों के बीच किसी भी किस्म की प्रतियोगिता की कल्पना नहीं कर सकता, और न ही कोई यह दलील देगा कि शरीर बेहतर रूप से कार्य कर सके इसके लिए इसकी सभी कोशिकाओं में समानता होनी चाहिए। यदि ऐसी एकरूपता उत्पन्न हो जाए तो शरीर ऐसे किन्हीं भी कठिन कार्यों को पूरा कर पाने में असमर्थ होगा जो उसकी स्वस्थ क्रियाशीलता के लिए आवश्यक हैं। शरीर के प्रकार्य को अधिनियमित करने वाला सिद्धान्त है विविधता में एकता। इसी तरह, मानव समाज को भी इसी रूप में देखा जाना संभव है – एक ऐसे निकाय के रूप में जिसमें विशिष्ट प्रतिभाओं से सम्पन्न विविध व्यक्तियों और समुदायों में से प्रत्येक के पास मानव-सभ्यता के समग्र स्वास्थ्य और विकास में योगदान दे सकने की क्षमता है। और फिर, मानव-शरीर की ही तरह, मानव समाज के किसी भी एक सदस्य के कष्ट में पड़ जाने से समग्र के कल्याण में कमी आती है।

**प्रतिभागियों के लिए कुछ सुझाए गए प्रश्न:**

1. आपकी मान्यता के अनुसार, मनुष्य के रूप में हमारे जीवन का क्या उद्देश्य है?
2. आपके पड़ोसी आपके लिए क्या अर्थ रखते हैं?
3. कठिनाइयों के समय आप सहायता के लिए किनकी ओर उन्मुख होते हैं?
4. आपके समुदाय के समक्ष जो खास चुनौतियां हैं उनके निराकरण में क्या आपका समुदाय आपके साथ सहयोग करता है?
5. बहुत से लोग “जिसकी लाठी उसकी भैंस” वाली कहावत में यकीन करते हैं। यदि पानी तक पहुंच प्राप्त करने और उसके

उपयोग के संदर्भ में भी आपके समुदाय में यही तरीका इस्तेमाल किया जाए तो आपकी समझ से क्या परिणाम होगा?

6. क्या पानी सम्बंधी अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए आप एक-दूसरे की सहायता करते हैं? यदि हां तो कैसे? यदि आपके समुदाय के कुछ सदस्य सहायता देने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखते तो आप क्या करते हैं?
7. कठिनाइयों के बावजूद, वह क्या चीज है जो आपको अपने समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग करने के लिए प्रेरित करती है?
8. क्या समुदाय में ऐसे व्यक्ति या समूह हैं जिनपर जल-समस्या का बोझ अन्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा पड़ता है? इन व्यक्तियों या समूहों के कंधों पर से बोझ को कम करने के लिए आपने किस प्रकार मदद देने की कोशिश की है? सहायता करने की प्रेरणा आपको कैसे मिली?
9. क्या ऐसे समूह या व्यक्ति भी हैं जो आपसे भिन्न हैं, लेकिन विभेदों के बावजूद आपने उन्हें सहायता देने की कोशिश की है?
10. जब कभी पानी के कारण टकराव या विवाद उत्पन्न होते हैं तो उन्हें कैसे सुलझाया जाता है? क्या इसमें समुदाय की भी भूमिका रहती है?
11. यदि समुदाय के कुछ सदस्य पानी का बहुत अधिक उपयोग करने लगते हैं, पानी बर्बाद करते हैं या उसे प्रदूषित करते हैं तो आप क्या करते हैं?

# वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान: एक परिचय

वैश्विक समृद्धि अध्ययन संस्थान (Institute for Studies in Global Prosperity - ISGP) समाज को बेहतर बनाने से सम्बंधित प्रमुख परिसंवादों में योगदान देने के लिए व्यक्तियों, समूहों तथा संस्थाओं के क्षमता-निर्माण के प्रति समर्पित एक लाभ ग्रहण न करने वाली संस्था है।

ज्ञान और कार्यप्रथा की दो परस्पर-पूरक प्रणालियों के रूप में विज्ञान और धर्म दोनों से शक्ति अर्जित करते हुए, सीखने-समझने के लिए ऐसे वातावरणों का निर्माण किया जाता है जिनमें ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान किया जा सकता है और उन्हें सुव्यवस्थित बनाया जा सकता है। अध्ययन, समीक्षा और परामर्श की प्रक्रिया के माध्यम से सभ्यता के विकास के लिए प्रासंगिक सिद्धान्तों, अवधारणाओं और तौर-तरीकों की तलाश की जाती है।

1999 में संस्थापित तथा बहाई अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर काम करने वाला यह संस्थान उन प्रविधियों, तरीकों और साधनों के बारे में सीखने-समझने की क्रिया में भी संलग्न होता है जो समाज के परिसंवादों में बेहतर से बेहतर योगदान देने के लिए प्रयोग में लाए जा सकते हैं।

**INSTITUTE**
**FOR**
**STUDIES IN**
**GLOBAL PROSPERITY**

# बहाई विकास अध्ययन-पीठ: एक परिचय

बहाई विकास अध्ययन-पीठ (Bahá'í Chair for Studies in Development) इन्दौर (भारत) के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में संस्थापित एक स्वायत्त अध्ययन-पीठ (चेयर) है जिसका उद्देश्य भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास से प्रतिफलित स्थायित्वपूर्ण समृद्धि को ध्यान में रखते हुए अंतर्विषयी शोध एवं सामाजिक-आर्थिक विकास विषयक ज्ञान को बढ़ावा देना है।

इस अध्ययन-पीठ द्वारा शोध-अध्ययनों का संचालन किया जाता है, शैक्षणिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं तथा विकास सम्बंधी विषयों पर विचारों और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए मंचों का सृजन किया जाता है।

BAHÁ'Í CHAIR FOR STUDIES IN DEVELOPMENT
DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA

INSTITUTE
FOR
STUDIES IN
GLOBAL PROSPERITY

BAHÁ'Í CHAIR
FOR STUDIES IN
DEVELOPMENT
DEVI AHILYA VISHWAVIDYALAYA